Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो ।

ापक —स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

ादक—राकेशरानी

९७, हरव्यानसिंह मार्ग,
लवाग, नई दिल्ली–५

ाष : ५६२६३९
५६४७४१
८०१२११

ाक मूल्य : ३० रुपये

ा में : विमान से ४२ पौंड
६० डालर

समुद्री डाक से ४ पौंड ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपये

विदेश में : १५०१ रु.

ाह अंक : तीन रुपये

आश्विन संवत् २०४२

अक्टूबर १९८५, वर्ष १९, अंक ६

वेदोपदेश

दूसरों की बुराई करने वाला अपनी बुराई करता है

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् ।
चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः ॥ अ० ४।१८।६॥

संसार में ऐसे प्राणी हैं जिन्हें दूसरों को दुःख देने का व्यसन-सा होता है। उनका प्रयोजन सिद्ध हो न हो, वे दूसरों को दुःख देंगे ही, इससे उन्हें एक आनन्द आता है। वेद कहता है कि जरा सावधान होकर देखो तो आपको अनुभव होगा कि बुराई करने वाला बेचारा बुराई नहीं कर सका। कैसे? दूसरों की बुराई करने से पूर्व वह बेचारा अपना अनिष्ट कर बैठता है। कर्म करने से पहले मन में भाव पैदा होता है। बुरा कर्म करने के लिए मन में बुरा भाव पैदा होगा, तो पहले मन ही गन्दा हो गया। हमारे कुसंस्कार बनने लगे। अर्थात् बुरा कर्म करने वाला अपने मन में बुराई के बीज बो बैठा, अपने मन को बुरा बना बैठा, दूसरों का अनिष्ट तो जब होगा, तब होगा, उस का अपना अनिष्ट हो ही गया। मानो अपने हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार बैठा। तभी वेद ने कहा है– **शश्रे पादमङ्गुरिम्'** अर्थात् अपने पैरों-अङ्गुलि का नाश करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय		३
(महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी)		६
महबूब नगर में हिन्दू शुद्धि सभा का सम्मेलन		१४
डी० ए० वी० सताब्दी समारोह की तैयारियां		१६
जब हिन्दू धर्म विदेशों में फैला	—नित्यनरायण वैनजी	१७
स्वामी विवेकानन्द ने कहा था	—राधेश्याम मित्तल	२४
सार्वजनिक जीवन में नैनिकता का संकट	—पंडिता राकेशरानी	२६
आर्य विद्वान प्रतिवर्ष पुरस्कृत होंगे		३१
आप ही के पत्र		३३
सोम और सुरा	—(स्व०) स्वामी समर्पणानन्द	३७
मारीशस में कथा का युग	—राजमन राधा कृष्ण	४६
ईशावाश्येपनिषद् का हिन्दी पद्यानुवाद	—राजदेव भारती	६२
वालिद्वीप में हिन्दी संस्कृति	—विवेकशील	६५
शरीअत की भी कई व्याख्ताएं हैं	—शाहिद रहीम	६६
हिन्दी के सब से बड़े शत्रु हम हैं	शिवकुमार गोयल	८१
यदि व्रिजास्या मः वो वक्ष्यामः	—वीरेन्द्र मुनि	८४
बाल जगत्	—प्रतिभा शुक्ला एम० ए०	८५
चुटकुले	—लेखराख नन्दा	८७
प्यार हर इन्सान को करना पड़ेगा (कविता)	—वीरभान प्रजापति	८८
जीवन कैसे विताएं ?		८६
हिंसक को मोक्ष धन नहीं मिलता	—श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती	६०
आपका स्वास्थ्य	—श्री वसंत	६३
नारी जगत्	—श्रीमती महाश्वेता	६४
आओ हम रावण जलायें	—योगेन्द्र	६७
आर्यसमाज और हैदराबाद के लौह पुरुष	—बाबूल अगवाल	१०१
हिन्दुओं के पवित्र स्थल पर छाया संकट	—सदाजीवतलाल	१०३
चाणक्य के नीति वचन	—राधेलाल मित्तल	१०५
लखनऊ अधिवेशन		१०६
हत्यारों का इतिहास		११३
पैसे के पुजारी : गौमांस के व्यापारी	—क्षितीश वेदालंकार	१२६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

विजयदशमी का पर्व मनाओ, जागते रहो और सबको जगाओ

विजयदशमी विजय का पर्व है। असत्य पर सत्य, पाप पर पुण्य और अन्याय पर न्याय की विजय का प्रतीक है। सहस्रों वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने रावण की आसुरी सत्ता का दर्प दमन कर अनार्यत्व पर आर्यत्व की विजय का जिस भूमि में उद्घोष किया था, आज पुनः उसी भूमि में हिन्दू का जीवन दूभर हो रहा है। तमिल जन अधिसंख्य हिन्दू ही हैं। वे स्वयं को गौतम बुद्ध के पुजारी बताने वाले सिंहलियों के दमन और उत्पीड़न के समक्ष असहाय-से अनुभव कर रहे हैं। दमन और उत्पीड़न के प्रेरक अहिंसा और सत्य की सजीव-साकार प्रतिमा भगवान् बुद्ध के प्रति श्रद्धावान् होने के दावे जताकर उसी संस्कृति के अनुयायियों का जीवन बनाने को अपना परम साध्य मान रहे हैं, जिसने बुद्ध को शुद्ध धर्म का मर्म समझाया था।

परमपुनीता भारत माता के चरण पखारने वाले हिन्द महासागर की उत्ताल तरंगों को अनेक बार मानव रक्त से लाल होना पड़ रहा है, जब निरीह तमिलों पर अत्याचारियों की गोलियां बरसती हैं जो उनके शरीर को छलनी कर जाती हैं। यह तो भारत की धुर दक्षिण दिशा की एक झांकी है। देश के अन्तरंग का चित्र भी तो कम भयावह नहीं है, किन्तु हम सतत जागृति के भगवान् राम के मूल मन्त्र को भुलाकर निद्रा से ही प्रीत लगाकर विजयोत्सव मना रहे हैं।

ऐसी स्थिति में रह-रहकर एक ही प्रश्न मन में कौंधता है। कब जागोगे मेरे देशवासियो ? कब मोह निद्रा त्याग कर खड़े होंगे हम देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए? मुझे तो विजयोत्सव की इस पुनीत वेला में जब हमारे पौराणिक बन्धु रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले जला रहे हैं, असत्य और अधर्म के तत्त्व ही उभरते नजर आ रहे हैं। लग रहा है कि आज सभी कुछ जलता जा रहा है। मुझे पूर्व में वह दावानल भड़कता नजर आ रहा है, जो भारत माता के पूर्वांचल को ग्रसता जा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहा है। सेवा के नाम पर देशद्रोह की दीक्षा देकर राम के देश में ही अनेक रैमजे बनाये जा रहे हैं। जगदीश जॉन कहलाने को फुसलाये जा रहे हैं। देशी पादरी धर्म प्रचार की आड़ में इस देश के राष्ट्रीय समाज के अविभाज्य अंग वनवासियों को अपने दामन में समेट कर देश से विद्रोह के पथ पर प्रवृत्त कर रहे हैं। पुन: यही सवाल है—राम के वंशजो, तुम कब जागोगे ?

हिमगिरि के उत्तुंग शिखरों पर स्थित बद्रिकाश्रम, केदारनाथ, गंगोत्री के पावन तीर्थ स्थानों के समीपवर्ती क्षेत्रों में भी दीन-हीन पिछड़े बन्धुओं को विदेशी धन और प्रलोभन से पथभ्रष्ट किया जा रहा है। हे गीता के गायक, सुदर्शनचक्रधारी योगेश्वर श्री कृष्ण के अनुयायी, तुम गंगा के उद्गम, उसकी नील धवल धाराओं में देशद्रोह का विष घोलने वालों की चुनौती स्वीकार कर कब यतो धर्मस्ततो जय: का गीत गुंजाओगे ? बोलो, मेरे धर्म बन्धुओ, कब टूटेगी तुम्हारी तन्द्रा ?

आज देश विदेशी षड्यंत्रकारियों द्वारा बिछाये जा रहे अंगारों से दग्ध हो रहा है। लगता है कि औरंगजेब धन से, तलवार से, पाप और प्रपंच से भारत माता की छवि रौंदने का उपक्रम कर रहा है। आततायी तत्त्व बलात् धर्मान्तरण, सामूहिक धर्मान्तरण से राष्ट्रांतरण के कुचक्र में पूरी सिद्धता से जुटे हुए हैं। अनेक हुतात्माओं के प्रेरक त्याग और बलिदान से अर्जित स्वतन्त्रता को समाप्त करने के लिए विदेशी विचारों और सिक्कों की झंकारों से उत्साहित देशद्रोही तत्त्व खुल खेल रहे हैं। ओ, शिवा की संतानो, कब त्यागोगे तुम नींद और कब छत्रपति शिवाजी के शौर्य को जगाओगे और विजय के स्वर गुंजाओगे ?

आज फिर हल्दी घाटी में अकबरी चालें चलाई जा रही हैं। पैट्रो-डालर हिन्दुस्थान की सुख-शांति को अंगार लगाने के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। डालरों और पैट्रो-डालरों को अस्त्र-शस्त्र धारण कर भारतद्रोही और हिन्दूद्रोही शक्तियां खंडित भारत भूमि को पुन: खंड-खंड करने के लिए अपनी रणनीति बनाती जा रही हैं। ऐसे स्थिति में यही स्वर फिर उभरता है, कब जागोगी प्रताप की संतानो, कब तन्द्रा त्यागोगी भामाशाह की संतानो, कब तुम्हारे नेत्र खुलेंगे ?

देश में विदेशी षड्यन्त्र पल रहे हैं और हम नेत्र मूंदे सो रहे हैं। भारत माता जार-जार रो रही है और उसकी सन्तानें लम्बी तान सो रही हैं। स्मरण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्खो बन्धुओ, बहरे कान, दूर दृष्टि विहीन आंखें राह नहीं देख पायेंगी, राह नहीं दिखा पायेंगी। क्या यह आत्मघाती प्रवृत्ति आसुरी शक्तियों को ही विजयी होने का अवसर नहीं जुटा देगी? क्या यह निद्रा और राजनैतिक स्वार्थों के लिए अराष्ट्रवादी तत्वों को भी गले लगाने की नीतियां भारत के अस्तित्व को ही नहीं मिटा देंगी ? मेरा प्रश्न है भारत माता के लौह लाड़ले कब से कायरता को युग धर्म और चूड़ियों को आभूषण मान बैठे हैं, कब से उन्होंने चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करने की बजाय रामाय स्वस्ति, रावणाय स्वस्ति' को अपने जीवन का ध्येय वाक्य बन लिया है ?

विजयदशमी मनाने वालो, श्री राम की जय का उद्घोष गुंजाने वालो, मेघनाद के पुतले जलाने वालो, तुम्हें अपनी कुम्भकर्ण निन्द्रा त्यागनी होगी। केवल स्वहित के लिए ही नहीं, केवल राष्ट्रहित के लिए ही नहीं अपितु मानवता का हित साधना के लिए भी तुम्हें जागना होना। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के उद्घोष को साकार करने के लिए भी निद्रा को त्यागना होगा। मेरे वीर भाइयो, तुम्हें राष्ट्र रक्षार्थ सर्वस्व समर्पण की भावना को हृदयगंम कर कर्तव्य के समर में उतरना होगा। पिछड़ों और बिछुड़ों को गले लगाना होगा। तुम्हें सौगंध है राम की कि अब किसी भी राम के वंशज को विधर्मियों के चंगुल में नहीं जाने देना, तुम्हें शपथ है योगेश्वर श्री कृष्ण की कि उन के किसी अनुयायी को पथभ्रष्ट न होने देना, तुम्हें शपथ है प्रणवीर प्रताप, छत्रपति शिवाजी और दशमेश गुरु गोविन्द सिंह की जिन्होंने जिस हिन्दू धर्म की रक्षार्थ अपने जीवन की सभी सुखसुविधाएं और सपने होम दिये थे उन्हें आधात लगाने वालों के नापाक इरादों को पूरा नहीं होने देना।

विजयदशमी की इस वेला में मैं तुम्हें जगा रही हूं। प्यार से, मनुहार से तुम्हें उठा रही हूं। जागो मेरे भाई, जागो मेरे वीर, धर्म पर संकट आया है। तुम जागोगे, संकट भागेगा, मानवता को नया बल और संबल मिलेगा। जागृत हिन्दू राष्ट्र का विजयदशमी मनाना ही मानव कल्याण के महान् अभियान का पथ प्रशस्त करेगा। जागृत युवा शक्ति ही वह सुदिन समीप लायेगी जिसमें साम्प्रदायिकता के विषधर अपनी फुफकार नहीं भर सकेंगे। राष्ट्र को तोड़ने के लिए सक्रिय देशी और विदेशी तत्त्व नहीं उभर सकेंगे और सबल-सुदृढ़ यह राष्ट्र विजयदशमी के बाद सही अर्थों में दीप-मालिका का पावन पर्व मना पायेगा। मेरी गुहार और पुकार पर ध्यान दो। उठो और स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा करो।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आओ, नया अध्याय लिखें अब

पिछले अनेक वर्षों से खून के आंसू बहा रही थी पंजाब की धरती। कई ढोंगी बहुरूपिये नेताओं ने अपनी वाणी से शान्ति के राग अलापे किन्तु अपने आचरण से अशान्ति के अंगारे दहकाये थे। देशभक्ति का दम भरने वाले कई स्वनामधन्य नेताओं ने ऐसे तत्त्वों से भी पर्दे की ओट में हाथ मिलाए थे, जो वेदों की पावन ऋचाओं से गुंजित रही इस धरती में, जिसे बलिदानी गुरुओं ने अपने रक्त का कण-कण प्रदान कर वन्दनीय धरा बनाया था, विदेशी शक्तियों के षड्यन्त्रों के तानेबाने पूरने में संलग्न थे।

इन्हीं तत्त्वों के क्रियाकलापों का यह परिणाम हुआ था कि केशधारी और सहजधारी जो एक ही मां की संतानें हैं, एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावनाओं से भर उठे थे। अनेक निरपराध इन्सान मातन्धों के उन्माद की भेंट चढ़े थे। इतना ही नहीं, अपितु देश को इन्दिरा जी जैसी इतिहास निर्माता की हत्या का दारुण दुःख भी झेलना पड़ा था। देश के युवा प्रधान मन्त्री राजीव गांधी ने भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए जब अशान्त पंजाब में चुनाव को ही शान्ति सुधा सरसाने का बीजमन्त्र मानकर वहां चुनाव कराने की घोषणा की थी तब भी अनेक मन अनिष्ट की आशंका-कुशंकाओं से लरज उठे थे। जहां प्रायः सभी विपक्षी दलों ने यह उच्चार किया था कि अभी चुनाव कराने लिए उपयुक्त अवसर नहीं आया है, वहीं आतंकवाद के पक्षधरों ने तो इन चुनावों के बहिष्कार का भी आह्वान कर दिया था।

किन्तु अंततः श्री राजीव गांधी का विश्वास अजेय सिद्ध हुआ और पंजाब में हुए चुनाव ने एक नये अध्याय का सृजन कर दिया। पंजाब में अकाली विजयी रहे, किन्तु यह भी कहा जा सकता है कि इन चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत जीवित है, जागृत है। लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति उसकी आस्था अजेय है। अकालियों की विजय में संत हरचन्द सिंह लौंगोवाल के बलिदान ने वही भूमिका निभाई जो देवी इन्दिरा के हौतात्म्य ने कांग्रेस (इ) को पिछले निर्वाचन में विजय का वरण कराने में निभाई थी। कांग्रेस (इ) पंजाब में पराजित हुई। यह भी एक दृष्टि से अच्छा ही हुआ, क्योंकि यदि वह विजयी हो जाती तो न जाने कितने वर्षों तक उसे प्रतिदिन ही हारते रहना पड़ता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह भी सम्भव है कि अब पंजाब की धरती में एक नई राजनीति का सूत्रपात हो, जिसमें आंतकवाद से निपटने के लिए नई दिल्ली और चंडीगढ़ एक सांझी रणनीति अपनायें। लेकिन एक आशंका यह भी है कि कहीं आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के मुद्दों पर उनके प्रतिद्वन्द्वी तेवर वापस न लौट आयें। यही वह नाजुक बिन्दु है, जिस पर नई राजनीति की परीक्षा होगी।

हमें स्मरण है कि १९७७ में जब अकालियों ने ५८ सीटें जीत कर जनता पार्टी की सहायता से शासन चलाया था तो अकाली चिन्तन में एक संयत भाव आया था। अब तो उन्होंने विधान सभा में ७३ स्थान पाये हैं। हम आशा करते हैं कि दूसरे की सहायता पर नहीं अपितु आत्मनिर्भर अकाली दल पहले से अधिक दायित्व की भावना दर्शायेगा। यदि तमिलनाडु में द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम् की विजयी हिन्दी के विरुद्ध जिहाद की उग्रता को मंद कर सकती है, यदि पश्चिम बंगाल में मार्क्सवादियों की विजय के बाद नक्सलवाद का सफाया हो सकता है तो क्या पंजाब में अकालियों को मिली अभूतपूर्व विजय वहां आंतकवाद के लिए काल सिद्ध नहीं हो सकती। हम आशा करते हैं कि ऐसा होगा।

अकाली बन्धुओं को यह भी समझना होगा कि उन्हें सिखों और हिन्दुओं दोनों के वोटों ने ही सत्ता के शासन पर आसीन कराया है। उन्हें पुनः वही भावना पंजाब में सरसानी होगी जिसमें खालसा पंथ हिन्दुत्व की सशक्त भुजा बने, जिससे पंजाब विदेशी आक्रान्ताओं को धूल चटाने की ऐतिहासिक परिपाटी निभाता रहे। खून और आंसुओं के अनेक पन्ने अब तक लिखे जा चुके हैं। अब इतिहास का देवता यही चाहता है कि पंजाब में हिन्दू-सिख एकता की पुनीत मंदाकिनी पुनः प्रवाहित हो। 'सुजल सुफल पंचनद" की उर्वरा धरा में शान्ति, सौख्य तथा समृद्धि के सुमन विकसित हों और पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर पंचनद के वीर पुत्र गुरु गोविन्द सिंह के आह्वान को हृदयंगम कर भारत माता का भविष्य समुज्ज्वल बनाने में प्राण-पण से जुट जायें।

अकाली बन्धु पंथ के प्रति आस्था रखते हैं। यह कोई ऐसी बात नहीं जिस पर किसी विचारवान् व्यक्ति ने कभी आपत्ति उठाई हो। आपत्ति तो खालिस्तान के नारे लगा कर सारे अकाली दल के प्रति भ्रम पैदा करने वाले तत्त्वों पर रही है हिन्दुओं ने अकाली दल को अपना भरपूर सहयोग दिया है। अब यह दायित्व श्री सुरजीत सिंह बरनाला, श्री बलवत सिंह तथा श्री प्रकाश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंह बादल जैसे विचारवान् अकाली नेताओं का है कि वे इस सीमावर्ती राज्य में ऐसी सुखद समीर बहायें, जिसमें हिन्दू-सिख समवेत स्वर में गुरु गोविन्द सिंह का यह उद्घोष गुंजार सकें—

जगे धर्म हिन्दू सकल भंड भाजे।
सकल विश्व में खालसा पंथ गाजे।

पंजाब के नये शासकों पर यह दायित्व है कि वे अपने प्रत्येक कार्यकर्ता को इस तथ्य से भी अवगत करायें कि "सरवत दा भला" और सर्वे भवन्तु: सुखिन: एक ही बात है और यही भारत की महान् संस्कृति का शाश्वत स्वर है। □

—राकेशरानी

भूल सुधार और खेद प्रकाशन

पिछले महीने के जन-ज्ञान के टाइटल और अन्तिम पृष्ठ पर महीने का नाम मार्गशीर्ष छप गया है। होना चाहिए था भाद्रपद। अन्तिम आठ पृष्ठों पर पृष्ठ संख्या ९७ से १०४ अंकित हुई है। इसे ८१ से ८८ पढ़ें।

प्रस्तुत अंक के अन्तिम २४ पृष्ठों पर महीने का नाम भाद्रपद अंकित है। होना चाहिए आश्विन।

जन-ज्ञान के अप्रैल-मई अंक में डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ था। उक्त लेख में प्रेस की असावधानी से छप गया है डाक्टर अम्बेडकर अहीर थे। पाठक कृपया अहीर के स्थान पर महार पढ़ें।

हमें इन भूलों के लिए खेद है। □

भारत को कर्मभूमि और अन्य देशों को भोगभूमि कहा गया है। कर्म का जैसा विवेक भारत में हुआ है वैसा अन्यत्र नहीं हुआ। इसका ज्वलन्त प्रमाण मार्कण्डेय पुराण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी

काम मत करो, बातें बनाओ, भाषण दो और नेता बन जाओ !

आज के युग में सबसे बड़ा पाप और अपराध है काम करना ! जो काम करे उससे बड़ा मूर्ख कोई नहीं, क्योंकि जनता अन्धी है, वह काम नहीं देखती, केवल बातें सुनती है।

पिछले १८ मास से हम देश को जगाने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। लाखों की संख्या में साहित्य प्रसारित कर चुके हैं। देश को जगाने के लिए भयंकर गर्मी में हजारों किलोमीटर की यात्रायें भी कर चुके, पर किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। किसी ने नहीं सोचा कि यह सब कार्य कैसे चल रहा है ?

आज तक हमने किसी के पास जाकर हिन्दू रक्षा समिति के लिए एक पैसा नहीं मांगा। पर क्या आप का कोई कर्त्तव्य नहीं बनता। औरों ने लाखों रुपयों का कोष बना लिया और हम बिना पैसे के दौड़ने की सोचते हैं। मैं आज इन पंक्तियों द्वारा आप सब से पूछना चाहता हूं कि क्या आधे मूल्य में साहित्य का प्रसार और सारे भारत में जागरण का शंखनाद कर हमने अपराध किया ?

आज लाखों की संख्या में साहित्य की मांग आ रही है पर हम अर्थाभाव से मांग पूरी नहीं कर पा रहे। सारा देश जल रहा है। स्वार्थी नेता हाथ सेंक रहे हैं। और आप कभी भी यह जांचने-देखने के लिए तैयार नहीं कि वास्तविकता क्या है ? कौन काम करता है और कौन बातें बनाता है ?

हम तो जैसे भी होगा, जितना सहयोग मिलेगा, काम करते रहेंगे, पर क्या इतिहास कभी आप को क्षमा करेगा ? क्या कभी आपके मन में उत्साहपूर्वक काम को आशीर्वाद देने की भावना नहीं उभरेगी या आप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडित वही जो गाल बजाए,
नेता वही जो जन बहकाए।

के आधार पर ही सोचते रहेंगे। जिस उद्देश्य के लिए हम लड़ रहे हैं उसकी प्राप्ति के लिए करोड़ों रुपए चाहिये। ऐसी स्थिति चाहिये कि धन की चिन्ता न करनी पड़े और कार्य होता रहे। पर क्या कभी ऐसा होगा ?

हमारी नीतियां, कार्य सब कुछ स्पष्ट हैं ? कभी कोई बात बढ़ा कर कही नहीं, अपितु जो हो रहा है उसका भी विस्तृत विवरण समयाभाव से हम नहीं बता पाते। पर आपको तो अपने कर्त्तव्य का चिन्तन करना चाहिए।

सोचिए और देखिए कि आपको क्या करना चाहिए। कार्य को आप महत्ता नहीं देंगे तो आने वाली पीढ़ी क्यों काम के प्रति जीवन अर्पित करेगी।

प्रभु सभी को सत्य-असत्य के निर्णय का विवेक प्रदान करें।

क्या आप इस्लामिस्तान-ईसालैंड बनने देंगे ?

मीनाक्षीपुरम् की घटना के बाद चारों ओर धर्म परिवर्तन रोकने की आवाज तो उठी, पर समस्या के अन्य गम्भीर पहलू उपेक्षित कर दिए गए। हमारे नेताओं में हवा का लाभ उठाने की जो प्रवृत्ति है उसके कारण वे वास्तविकताओं को न समझना चाहते हैं, न उनसे जूझना। हम भारत के हिन्दू मात्र से यह कहना चाहते हैं कि धर्मपरिवर्त्तन समस्या का केवल एक पक्ष है। अन्य पक्षों उपेक्षा आत्महत्या ही सिद्ध होगी।

धर्म परिवर्तन से भी गम्भीर प्रश्न है। इस्लामी योजना। भारत को इस्लामिस्तान बनाने का प्रयत्न। धर्म परिवर्तन इस योजना का १० प्रतिशत भाग है। ९० प्रतिशत समस्यायें और हैं। इनमें प्रमुख है हिन्दू-मुस्लिम दंगे। इन दंगों की तैयारियां व्यापक रूप से की जाती रही हैं और आज भी हो रही हैं। मक्का की मस्जिद में उपद्रव होता है और आग लगायी जाती है हैदराबाद में, हिन्दुओं की दुकानों को।

क्या यह सब बिना योजना के हो रहा है गोधरा-मुरादाबाद-संभल-हैदराबाद-अहमदनगर-जमशेदपुर-दिल्ली में पिछले दिनों जो उपद्रव हुए, क्या वे बिना योजना के हुए ? ऐसा सोचना तथ्यों से मुंह छिपाना होगा। जहां भी मुसलमान शक्ति में हैं वहां वे अपनी पाशविकता का प्रदर्शन करने से नहीं रुकते ! आतंक फैलाकर वे भारत को मुस्लिमलैंड बनाने की दिशा में आगे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बढ़ रहे हैं। अतः भारत के सभी देशभक्त संगठनों को, हिन्दू संस्थाओं को, शासन को इसे दिशा में गम्भीरता पूर्वक सोचना होगा और इन उपद्रवों को होने से पहले ही कुचलना होगा। हमें यह नहीं भूलना कि इस्लाम की विचार-धारा किसी गैर-मुस्लिम को ससम्मान जीने का अधिकार नहीं देती। इसलिए यह एक गम्भीर चुनौती है कि दंगों की मनोवृत्ति कैसे समाप्त की जाए और दंगा होने हर उपद्रवियों से कैसे निपटा जाए ?

इसके साथ ही एक समस्या है जनसंख्या वृद्धि की। हिन्दुओं की जन-संख्या घट रही है। मुसलमानों की बढ़ रही है। वे चार-चार विवाह करते है। परिवार वढ़ाते हैं। हमारे दो और उनके बीस संतानें होना, एक ऐसा प्रश्न है जिस पर सभी को गम्भीरतापूर्वक विचार करना ही होगा।

मुसलमानों के लिए पृथक् सिविल कोड, उन्हें ४ विवाहों की अनुमति, एक ऐसा प्रश्न है जिसकी अब और उपेक्षा नहीं की जा सकती। शासन को गम्भीरतापूर्वक इस दशा में सोचना होगा और सारे भारत के नागरिकों के लिए समान विधि-नियम बनाने होंगे।

असम-कश्मीर में विदेशी मुसलमानों की घुसपैंठ राजनैतिक ही नहीं, अपितु एक राष्ट्रीय समस्या है। बंगलादेश और पाकिस्तान से आने वाले मुसलमान भारत की आजादी और एकता के लिए विस्फोटक हैं। आखिर क्यों आने दिया जाता है उन्हें ? क्या हमारी सेना अशक्त है या नेताओं की बुद्धि···? समस्या का हल तो खोजना ही होगा।

उर्दू को प्रोत्साहन, मुस्लिम मदरसों, विश्वविद्यालयों की स्थापना, हर मस्जिद पर लाउडस्पीकर, हर गांव में मस्जिद, महत्त्वपूर्ण स्थानों को ऊंचे दामों पर क्रय करना और पृथक् वेशभूषा, रहन-सहन, उस अलगाव को जन्म दे रहे हैं जिस के कारण पाकिस्तान बना। इन सभी प्रश्नों पर गम्भीरता-पूर्वक राष्ट्रीय दृष्टि से चिन्तन की आवश्यकता है।

यही नहीं, देश पर मंडराते एक और भीषण संकट की ओर से हम आंख मूंदे बैठे हैं। और वह संकट है भारत को ईसालैंड बनाने की योजना। लगता है कि मेरे देश का कोई स्वामी नहीं। जो चाहता है इस पर अपना झण्डा फहराने दौड़ा चला आता है। हम यह क्यों भूल रहे हैं कि एक योजनाबद्ध ढंग से भारत में विदेशी पादरी ईसा का साम्राज्य स्थापित करने का निश्चय कर क्रियाशील हैं। नगालैंड को विद्रोही बनाने वाले, मिजोरम को दहकाने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाले, त्रिपुरा में हिन्दुओं को मरवाने वाले ये विदेशी पादरी ही हैं। भारत के आधे भू-भाग पर ये फैल चुके हैं। ईसा के चेले बनाकर, भारत माता के प्रति विद्रोही बनाकर, देश पर एक बार फिर ईसा का "क्रॉस साम्राज्य" स्थापित कर ये हमारी आजादी को मिटा देना चाहते हैं।

सारे हिमालय में ये फैल रहे हैं और हम जानते भी नहीं कि कैसे हमारा घर जल रहा है। दहकते अंगारों पर सुलगती देश की आजादी की रक्षा हमारे लिए एक चुनौती बन गई है और हम इस चुनौती को स्वीकार करने का साहस खो चुके हैं।

भारत की बड़ी-सम्पन्न संस्थायें धन बटोरने में लगी हैं। वे मीनाक्षीपुरम् के नाम को भुना रही हैं। क्या यह एक जलता हुआ प्रश्न नहीं है कि उन्होंने देश को धधकाने वाली काली जहरीली हवाओं को रोकने के लिए क्या किया ?

क्या हम समझ लें कि आज देश में वीरों का अभाव है या हिन्दू मर चुका है ? क्या हम मान लें कि हम कायर और नपुंसक हो गए हैं ? क्या हम शिवा, प्रताप की संतान को गीदड़ों की भाषा में बोलने वाला स्वीकार कर लें ?

नहीं, यह नहीं हो सकता। भारत का भाग्य अभी इतना काला नहीं हुआ कि हम यह सब कुछ मान लें।

अभी तो प्राण जागेंगे,
अभी तो गान जागेंगे,
चलेंगे वीर सब आगे,
अभी जय दीप जागेंगे।

हम अपने प्राणों की पीड़ा से आप के अन्तर को झकझोरना चाहते हैं। हम गंगा की गति के गीतों से आपके मानस को ज्योतिर्मय बनाना चाहते हैं। हमारी कामना है कि आप 'गौ' (गौ-माता) की शपथ लेकर 'गौ' (पृथ्वी) की रक्षा का व्रत लेकर उठें और कश्मीर से कन्याकुमारी तक, द्वारिका से पूर्वांचल तक एक बार फिर भारत को पावन-पूत-सशक्त जगद्गुरु बनाकर विजय के स्वर की शंखध्वनि करें।

हम साधनहीन हैं पर हमारी साधना में जागृति के गीत गुंजाने की शक्ति है। हम अकेले हैं पर हमारी पुकार पर करोड़ों वीर अपने सिर हथेली पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रख मां की लाज और गरिमा की रक्षा के लिए बलिदान देने में नहीं चूकेंगे ।

हम अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की ओर से भारत के सब देश-भक्तों के प्रतिनिधि रूप में घोषणा करते हैं कि हम विदेशियों की छलना को, उनके षड्यन्त्रों को, देश, धर्म, स्वतन्त्रता पर प्रहार करने वालों को पूरे बल से कुचल देंगे ।

हम सिर देंगे, पर भारत मां की ओर टेढ़ी आंख से देखने वालों को क्षमा नहीं करेंगे । प्राण आप के प्राणों को जगा रहे हैं । भाव भावों को उठा रहे हैं । हमें विश्वास है कि हम जीतेंगे । ईसालैंड-इस्लामिस्तान बनाने की योजनायें स्वयं मिट कर भी मिट्टी में मिलायेंगे । □

अमृतसर में दयानन्द बलिदान शताब्दी का आयोजन

पंजाब आर्य युवक परिषद् की ओर से महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह १९-२०-अक्तूबर १९८५ को अमृतसर के विशाल मैदान गोल बाग में बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है ।

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पुरस्कृत

हिण्डौन सिटी । स्थानीय आर्यसमाज हाल में वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन स्वामी ओमानन्द जी के आचार्यत्व में सोत्साह सम्पन्न हुआ । श्री सत्यपाल जी सरल के भजनोपदेश हुए ।

श्री प्रह्लाद कुमार आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में स्थापित श्री धूड़मल आर्य पुरस्कार आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति वेद मार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति को उनके सर्वथा अछूते व अनूठे ग्रन्थ "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" पर भेंट किया गया । उसमें अभिनन्दन-पत्र, एक शाल एवं १५०१रुपये की राशि समर्पित की गई । इस समारोह का संचालन डा० ओम्प्रकाश वेदालंकार ने किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महबूबनगर में हिन्दू शुद्धि सभा का सम्मेलन

पंडिता राकेशरानी द्वारा राष्ट्रीय जागरण का आह्वान

महबूबनगर। यहां १५ सितम्बर को हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, महबूबनगर (आन्ध्र) के तत्त्वावधान में आयोजित एक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें हिन्दुओं के धर्मान्तिरण के व्यापक षड्यंत्र के प्रति जागरूक रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्मपरिवर्तन की आड़ में यह राष्ट्रीयता का परिवर्त्तन है और इस प्रकार ऐसे तत्त्व पृथक् राष्ट्र की मांग के लिए भूमिका तैयार कर रहे हैं। हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष ने कहा कि भारत विभाजन का कटु परिणाम हम इस धर्मपरिवर्तन और इसके बल पर बढ़े संख्या बल के कारण भुगत चुके हैं। उन्होंने कहा कि ईसाई और मुस्लिम मतावलम्बियों ने धर्मान्तिरण और भारत के और अधिक विभाजन के लिए व्यापक रणनीति बनाई हैं। ईसाई वनवासी और पूर्वोत्तर राज्यों में धर्मान्तिरण करके पृथक् राज्यों की मांग कर रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि हमने जागृत होकर इन चुनौतियों का उत्तर न दिया तो भारत की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता फिर से खतरे में पड़ जायेगी। उन्होंने प्रत्येक हिन्दू का इस खतरे के प्रति जागरूक होकर तन-मन-धन से जूझने के सिए आह्वान किया।

इस अवसर पर श्री पूनमचन्द्र अग्रवाल, श्री वी. के. नरसिन्हा, श्री सूर्यनारायण, श्री वीरा रेड्डी, श्रीमधुसूदन आचार्य, श्री वी. सत्तय्या, श्री वेलमानेनी श्रीनिवास राव, श्रीमती भुवनी देवी और राज्य के अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस महा सम्मेलन को प्रदेश के संगठन मंत्री श्री डा० नन्दनम् सत्यम् जी नेतृत्व में संयोजित किया गया था।

इस अवसर पर महबूव नगर जिला हिन्दू शुद्धि सभा की कार्यसमिति की घोपणा भी की गई। दूसरे अध्यक्ष श्री जी. चिनैया, उपाध्यक्ष श्री राम चन्द्रया, प्रधान कार्य दर्शी श्री लक्ष्मीकांत रेड्डी, सह कार्य दर्शी श्री सी. एच.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपेन्द्र एवं महिला प्रतिनिधि श्रीमती कुमारी चन्द्रकला मनोनीत की गई। २१ युवा सदस्यों की भी घोषणा की गई।

सम्मेलन में रूढ़िवाद और जातिवाद के उन्मूलन, हिन्दूधर्म के प्रचार-गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध और शिक्षा में मौलिक परिवर्तन के पक्ष में अनेक प्रस्ताव पास किये गये। □

स्वर्गीय श्री धर्मेन्दु जी को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, २२ सितम्बर। आज आर्यसमाज दीवानहाल में दिवंगत श्री पं. देवव्रत जी धर्मेन्दु की श्रद्धांजलि सभा में अनेक वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि श्री धर्मेन्दु जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि सत्यार्थ प्रकाश घर-घर पहुंचे। इसके लिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी परीक्षाओं का व्यापक स्तर पर आयोजन किया। इस लिए उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि इस दिशा में हम सब दत्तचित्त होकर कार्य करें। अनेक वक्ताओं ने उनके अर्योचित रहन-सहन, खान-पान तथा दृढ़ संकल्प की चर्चा की। वक्ताओं में श्री सोमनाथ मरवाह, श्री नवनीत लाल एडवोकेट चौधरी वीरेश प्रताप, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री और श्री मामचन्द रिवाड़िया शामिल थे।

बुलन्दशहर हिंदू महासभा का शिविर

बुलन्दशहर। १२ अगस्त को जिला हिन्दू सभा द्वारा आयोजित एक-दिवसीय वार्षिक शिविर यहां सम्पन्न हुआ। शिविर में जिले के दस स्थानों के लगभग पचास प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। शिविर में अखिल भारत हिन्दू सभा के कोषाध्यक्ष श्री इन्द्रसेन शर्मा, श्री भगवान् शरण अवस्थी (शाहजहांपुर) तथा उ० प्र० जनसंघ के अध्यक्ष प्रखर राष्ट्र वादी हिन्दू नेता डा० मंगाराम (अलीगढ़) आदि ने प्रशिक्षण दिया।

उक्त शिविर में हिन्दू महासभा के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

स्वामी काव्यनन्द का निधन

आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी काव्यानन्द जी सरस्वती, संस्थापक गायत्री वेदमन्दिर वेद प्रचार केन्द्र खोही चित्रकूट (बांदा) का बीमारी के दौरान नेहरू होस्पिटल अजमेर में ७.९.८५ को स्वर्गवास हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी०ए०-वी० शताब्दी समारोह की तैयारियां

नई दिल्ली, सन् १९८५ के उत्तरार्ध में और सन् १९८६ के पूर्वार्ध में धूम-धाम से मनाए जाने वाले डी०ए०-वी० शताब्दी के विशाल समारोह की हलचल प्रारम्भ हो गई है। यह समारोह अनेक नगरों में अनेक रूपों में मनाया जाएगा।

कांगड़ा, चंडीगढ़, अमृतसर, अम्बाला, जालन्धर आदि स्थानों से आए डी०ए०-वी० कालिजों के प्रिंसिपलों ने अपने यहां मनाए जाने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा और उनके लिए अब तक की गई तैयारी का विवरण २५ अगस्त को आर्यसमाज (अनारकली) में हुई बैठक में प्रस्तुत किया। इस बैठक में डी०ए०-वी० शिक्षा संस्थाओं के आचार्यों के अलावा दिल्ली की प्रमुख समाजों और सभाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। समाजों और सभाओं के अधिकारियों ने अपनी ओर से शताब्दी कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

पंजाब और दिल्ली के अलावा ये समारोह उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में भी, जहां-जहां डी०ए०वी० संस्थाएं हैं, मनाये जायेंगे।

विशाल पैमाने पर एक शिक्षा सम्मेलन और कम से कम दस हजार विद्यार्थियों का एक प्रशिक्षण शिविर भी शताब्दी समारोह का अंग होगा। आगामी ५ वर्षों में वैदिक वाङ्मय और भारतीय संस्कृति से सम्बद्ध विषयों पर प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना है। शताब्दी के अवसर पर कम से कम १०० पिछड़े ग्रामों में विकास कार्यों के साथ चिकित्सा सुविधा जुटाने, १०० गरीब प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर निःशुल्क शिक्षा देने, १०० दयानन्द सेवा सदन खोलने की भी योजना है। वैदिक अनुसंधान के लिए दयानन्द फाउंडेशन की स्थापना की गई है।

मुख्य शताब्दी समारोह के अवसर पर दिल्ली में अभूतपूर्व विशाल शोभा-यात्रा निकालने का निश्चय किया गया।

शताब्दी समारोहों की श्रृंखला का प्रारम्भ भारत की राजधानी दिल्ली से होगा, जिसके उद्घाटन के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से प्रार्थना की जा रही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब हिन्दू धर्म विदेशों में फैला

—नित्यनारायण बैनर्जी

हिन्दुओं ने अपने अप्रतिम इतिहास में असामान्य दृढ़ता के साथ अपनी राजनैतिक स्वाधीनता और सामाजिक प्रणाली पर हुए विदेशी आक्रमणों का प्रतिरोध किया। अपनी खोई स्वाधीनता पुनः प्राप्त करने के लिए हमारे संघर्षों का रिकार्ड अप्रतिम है!

हममें से बहुत से लोग बिना सोचे-समझे कह देते हैं कि भारत के हिन्दुओं ने मुट्ठी भर मुस्लिम आक्रान्ताओं की ताव न लाकर अपनी स्वाधीनता खो दी और हम लगभग सात सौ वर्ष तक विदेशी शासन के अधीन रहे। वस्तुतः इतिहास इससे भिन्न है।

अरबों ने हजरत मुहम्मद के देहान्त के छह वर्ष के भीतर मिस्र और सीरिया को जीत लिया, दस वर्ष के अन्दर ईरान को जीत लिया, एक-एक वर्ष में अफ्रीका और स्पेन को जीत लिया और आठ वर्ष में तुर्कों को जीत लिया, लेकिन वे ३०० वर्षों में भी हिन्दुस्तान को न जीत सके। अरबों, तुर्कों, पठानों और मुगलों ने एक के बाद एक करके ५५० वर्ष तक अपने आक्रमणों को जारी रखा। तब भी सारे भारत को दास न बनाया जा सका। यूनानियों, शकों, हूणों आदि के विरुद्ध हमारा प्रतिरोध इतना सुविदित है कि उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं।

लिखित इतिहास के अनुसार भारत के हिन्दुओं ने ५००० वर्ष तक स्वाधीनता का सुख भोगा। पठानों ने लगभग ३५० वर्ष तक भारत के एक भाग पर शासन किया। उसके बाद हिन्दुओं ने पुनः अपना शासन स्थापित कर लिया। बेहतर हथियारों के बावजूद राणा संग्रामसिंह को बहुत कठिनाई से हराने के बाद मुगलों ने २०० वर्षों तक यहां शासन किया। हिन्दुओं ने मराठों और सिखों के नेतृत्व में इस सत्ता को पुनः ध्वस्त किया। तब अंग्रेज आये, जिन्हें २०० वर्ष के अन्दर ही हिन्दुओं ने निकाल बाहर किया। इस प्रकार हिन्दुओं ने कभी भी चिरकाल तक राजनैतिक दासता को स्वीकृत न किया और स्वाधीनता, धर्म व संस्कृति के लिए अपनी लड़ाई जारी रखी।

हमारे इतिहास का मुकाबला इंग्लैंड के इतिहास से कीजिये। जब रोमनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने पहले-पहल इंग्लैंड को जीता, तब अंग्रेजों ने अपनी स्वाधीनता और धर्म खो दिये। सैक्सनों और नार्मनों ने बारी-बारी से अंग्रेजों को हराया और अंग्रेजों ने न केवल तीन बार अपनी स्वाधीनता खोई, अपितु अपना धर्म, संस्कृति और रक्त की शुद्धता भी खोई। इंग्लैंड के वर्त्तमान लोग उपरिलिखित तीन नस्लों का मिश्रण हैं।

हमारा शानदार अतीत

आज हिन्दू पृथ्वी पर पुरातनतम सभ्य नस्ल है। हिन्दुओं ने अंकगणित में वर्त्तमान दशमलव प्रणाली और नौ के अंक एवं शून्य की खोज की, जिसने ईसा के जन्म से पूर्व रोमन अंकों का स्थान लिया। बीजगणित, रेखागणित, रसायन शास्त्र और आयुर्विज्ञान का आविष्कार भी हिन्दुओं ने ही किया। हिन्दुओं ने खोज की कि पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है और द्रव्य ऊर्जा का रूपान्तरण है। हिन्दुओं ने एक सामाजिक प्रणाली प्रचलित की, जिसमें स्वार्थ पर सामाजिक हित को प्राथमिकता दी गई और आध्यात्मिक ज्ञान को भौतिक सुखों पर तरजीह दी गई। वस्तुतः भारत आधुनिक सभ्यता का झूलना है, क्योंकि प्रकाश आर्यावर्त्त से अरब होता हुआ यूरोप पहुंचा।

विश्वशांति

भारतवर्ष, नैपाल, भूटान, सिक्किम, तिब्बत, बर्मा, मलय, कम्बोज, भाई देश, दक्षिण वियतनाम, उत्तर वियतनाम, जापान, चीन, कोरिया, फारमोसा, फिजी, त्रिनीदाद, बालि, श्रीलंका, मौरीशस, गुयाना, पाकिस्तान, पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण अफ्रीकी राज्य विश्व की घटनाओं को शक्ल देने और अफ्रेशियाई विश्व में शांति स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं—यदि उनमें सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सम्बन्ध सही ढंग से पुनरुज्जीवित किए जाएं और उन्हें पुनः दृढ़ बनाया जाये। भारत ने अन्य देशों को जीतने के लिए कभी कोई सैनिक अभियान नहीं चलाया लेकिन उसकी आम जनता व्यवसायी, व्यापारी, संन्यासी, पुरोहित और कुछ शासनच्युत नरेश सुदूर पूर्वी देशों में गये और उन्होंने इन देशों में हिन्दू धर्म का प्रचार किया एवं हिन्दू वास्तुकला, कला, साहित्य आदि को प्रचलित किया। वहां हिन्दू संस्कृति और स्थानीय सस्कृति का मिश्रण हुआ—दोनों संस्कृतियों को एक दूसरे के ऊपर थोपा न गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व का विस्तार

प्राप्त रिकार्डों के अनुसार भारत से हिन्दुत्व के सांस्कृतिक विस्तार की ार मुख्य लहरें आईं। ये थीं अमरावती (ईसा की दूसरी और तीसरी ताब्दी), गुप्त (ईसवी सन् ४०० से ५०० तक), पल्लव (५५० से ७५० सवी तक) और पाल (७५० से ९०० ईसवी तक)। ईसा की पांचवीं ताब्दी में बौद्ध मत भारत से श्रीविजय (सुमात्रा और जावा) पहुंचा। ीनी इतिहास के अनुसार वर नरेन्द्र (४५०) से ४६४ ईसवी के बाद एक व सम्राट्, एक बौद्ध नरेश और उसके पुत्र विजयरत्न ने सुमात्रा में शासन कया (५०२ ईसवी)। बोराबुदूर के शानदार मन्दिर इस क्षेत्र में बौद्धमत ी लोकप्रियता की कहानी पुकार-पुकार कर सुना रहे हैं। जावा (मातरम्) ा सम्राठ संजय एक शैव था (७३२ ईसवी), लेकिन उसका उत्तराधिकारी चपण कि बौद्ध था। उसने चान्दी कलशन् के मन्दिर का निर्माण कराया। श्मीर का सम्राट गुणवर्मन् पाँचवीं शताब्दी में कशमीर गया। सुमात्रा के लेन्द्रराजवंश के सम्राट बालपुत्र ने पालों के शासनकाल के दौरान नालंदा एक मठ की स्थापना करवाई। तिब्बत के प्रसिद्ध शिष्य विद्यार्थी अतीश ने ०२३ ईसवी तक सुमात्रा में बौद्ध संघ के तत्कालीन प्रमुख धर्मकीर्ति के साथ ीविजय में अध्ययन किया। इन सब कालखंडों की वास्तुकला में कुछ शी तत्त्व भी थे, यद्यपि मुख्य शैली हिन्दू थी।

कम्बोज में वैदिक धर्मावलम्बी सम्राटों ने ११८५ ईसवी तक शासन या, लेकिन उनके मन्त्री बौद्ध थे। एक बौद्ध मन्त्री सत्यवर्मन् ने सन् ९०० अंकोर में मठ की स्थापना की। कम्बोज में ब्राह्मण देवताओं—शिव, ष्णु, हरिहर, लक्ष्मी और पार्वती को समर्पित मन्दिर हैं। बौद्धों के भगवानों धिसत्त्वों और स्थानीय देवताओं को समर्पित मन्दिर भी हैं।

स्याम के एक बौद्ध सम्राट् ऊ तांग ने द्वारवती श्री अयोध्या नाम की एक राजधानी स्थापित की और अपने साम्राज्य का नाम अयुतिया रखा। ने मनु द्वारा निर्धारित प्रणाली पर देश के कानूनों में संशोधन किया, जो वीं शताब्दी तक स्याम के दक्षिणी भागों में प्रचलित रहे।

भारत के साथ बर्मा का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ और दीर्घकालीन था। र्मा की विधिसंहिता संस्कृत धर्मसूत्रों से ली गई है। उसमें ऐसे संशोधन ए गए हैं कि वह बौद्ध विचारों के अनुकूल हो गई है—ब्राह्मण सामाजिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रणाली के अनुकूल नहीं रही।

भारत में हिन्दू सत्ता के पतन और इस्लाम के उत्थान के साथ इस्लाम भारत (तमिलनाडु) और गुजरात से मलाया के रास्ते इन देशों में प्रविष्ट हुआ।

हिन्दुत्व हमें एकता की भावना से बांधता है। भारत वर्ष के लिए सब हिन्दुओं में वैसी ही भावना है, जैसी ईसाइयों अथवा मुसलमानों में रोम अथवा मक्का के लिए है।

जो हिन्दू अथवा जिन हिन्दुओं के पूर्वज विदेशों में चले गए, उनका अपनी आध्यात्मिक मातृभूमि से सम्बन्ध न रहा और उनकी मातृभूमि ने भी उनके साथ आवश्यक सम्पर्क न रखा।

आधारभूत एकता

पिछले वर्षों में सनातनियों, जैनों, बौद्धों और सिखों को पृथक धार्मिक पन्थों के अनुयायी मानने की प्रवृत्ति रही है। यह बात याद रखने की है कि बौद्ध मत, जैन मत और सिख पन्थ हिन्दू विचारधारा के विभिन्न चरण हैं। वस्तुतः ये हिन्दुत्व के विभिन्न पहलुओं को दिए गए नाम हैं। इनका अभ्युदय विभिन्न समयों पर हिन्दू समाज के सुधार और पुनरुज्जीवन के लिए हुआ। इन्होंने हिन्दू एकता को शताब्दियों तक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से सुदृढ़ बनाया। अन्ततः ये एक केन्द्रीय विचारधारा में विलीन हो गए।

हिन्दुत्व सत्य की मुख्य धारा है, जो प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है। गलती से इसे पूर्णतः पृथक् लहरों वाली मान लिया जाता है।

भारत, बर्मा, चम्पा (मध्य और दक्षिणी अनाम), फूनम (कम्बोज), श्याम और श्रीविजय (सुमात्रा और जावा) में शैव, वैष्णव मत और बौद्ध मत चिरकाल तक साथ-साथ प्रचलित रहे—चाहे शासकों का धार्मिक विश्वास कुछ भी रहा हो। इन क्षेत्रों में चिरकाल तक वैदिक विचारधारा छाई रही। इसके साथ ही बौद्ध मत भी आगे आया और उसने शताब्दियों तक अपने पैर जमाये रखे।

हिन्दुत्व ने विदेशों में अनेक स्थानीय रस्मों और परम्पराओं को अपना लिया। चिरकाल तक अनेक सुदूर पूर्वी देशों में संस्कृत राजभाषा थी और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामायण, महाभारत और पुराण दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में बहुत लोकप्रिय हुए। बौद्धों के एक वर्ग ने तान्त्रिक कर्मकाण्ड अपनाया और सनातनियों ने अनेक बौद्ध परम्पराओं को अपनाया। उन्होंने बुद्ध को भी अवतार माना। विदेशों में हिन्दुत्व ने अपनी कठोरता को बनाये न रखा अपितु अपने आपको लचकीला बनाया ताकि परिस्थितियों के अनुसार स्थानीय परम्पराओं और संस्कृति को अपनाया और जज्ब किया जा सके। हिन्दू देशों में धार्मिक विश्वास को लेकर कोई लड़ाई नहीं हुई, जबकि यूरोप में हुई हैं।

हिन्दू कौन है ?

जिसका भारतीय (हिन्दुओं की इस भूमि) में अभ्युदित किसी भी मजहब में विश्वास है अथवा जो कोई ऐसे मजहब का अनुयायी है, वह हिन्दू है, चाहे वह बौद्ध, जैन, सिख, शाक्त, सौर, वैष्णव, लिंगायत, गाणपत्य, आर्यसमाजी, ब्रह्मसमाजी, आदिमजातीय अथवा अन्य किसी भी वर्ग से सम्बन्धित हो। प्रत्येक हिन्दू का विश्वास है कि १. सारी सृष्टि और मानव साररूप में आध्यात्मिक है। २. जीवन की समग्रता पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए बुनियादी तौर पर इन्द्रियों का अनुशासन आवश्यक है। ३. माया, कर्म और निर्वाण की थ्योरी सही है। ४. आत्मा अमर है। वह इस मरणधर्मा शरीर के साथ बुझ नहीं जाती, अपितु जन्मों के चक्र में पड़कर पूर्णता को प्राप्त करती है। ५. आध्यात्मिक आनन्द भौतिक सुख से श्रेष्ठ है। हिन्दुओं का विश्वास है कि अकर्मण्यता अथवा उदासीनता की अपेक्षा कर्मण्यता अधिक वांछनीय है। सामाजिक हित व्यक्तिगत हित से ऊपर है। धर्म का अर्थ है, जो व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक व्यवस्था को कायम रखे।

हिन्दुत्व

हिन्दुत्व पूजा की कोई विशिष्ट विधि नहीं, अपितु जीवन पद्धति है—समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आचारसंहिता है। स्रष्टा, सृष्टि और कर्मकांड की मौलिक अवधारणाओं के सम्बन्ध में मत भेदों के बावजूद सब वर्गों और पन्थों के हिन्दुओं में अन्य सम्प्रदायों के सन्तों, देवताओं, मंदिरों और धर्मग्रन्थों के लिए बहुत आदर है।

हिन्दुओं का विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समझौते और सह-अस्तित्व में विश्वास है। हिन्दू धर्म का कोई प्रवर्त्तक अथवा पैगम्बर नहीं, जबकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैमेटिक मजहब का है। हिन्दू संस्कृति वेदों की शिक्षाओं पर आधारित है जिसने भारत के विभिन्न पन्थों, संस्कृतियों, जातिगत प्रथाओं आदि संश्लेषण का प्रतिपादन किया है। इसने अपने अनुयायियों में एकता, अखंडता बन्धुता और उद्देश्य की समानता की भावना पैदा की है। मूलतः हिन्दुओं का विश्वास एक स्रष्टा में हैं, जो निराकार, निर्गुण, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। लेकिन वे अनेक रूपों में उसकी पूजा करते हैं, जिन रूपों को वे परमात्मा की विभिन्न अभिव्यक्तियां मानते हैं और इस दशा के अन्तिम सत्य की अनुभूति की दिशा में एक पग मानते है। हिन्दू अनेक देवताओं की पूजा करते हैं, लेकिन वे अपनी चेतना में उस एक स्रष्टा से ही एकत्व अनुभव करते हैं, जो सृष्टि का स्रोत है। हिन्दू धर्म का सब आत्माओं के देवत्व में विश्वास है और इसका तकाजा है कि प्रत्येक मानव का अन्तिम लक्ष्य अपने आपमें स्थित देवत्व के दर्शन करना और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करना है। सन्मार्ग पर चलना धर्म का सार है। हिन्दुओं के सभी कार्य इसी भावना से संचालित होते हैं।

हिन्दू विश्वास करते हैं कि सब मार्ग एक ही मंजिल तक पहुंचाते हैं। उनका कहना है कि सत्य के अन्वेषक को अपना मार्ग अपने मानसिक ढांचे और योग्यता के अनुसार चुनने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। एक ही कोट सबको फिट नहीं बैठता। हिन्दू धर्म की यह उदारता, लोकतन्त्र, सहिष्णुता व्यपकता और धर्म निरपेक्षता संसार के अन्य किसी भी मजहम में नहीं। समय-समय पर हिन्दुओं में श्रीकृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानक, श्री चेतन्य स्वामी दयानन्द, राजा राममोहनराय और रामकृष्ण परमं हंस हुए जिन्होंने हिन्दुत्व की कमजोर कड़ियों को मजबूत बनाया। इन्हें अलग मजहबों का प्रवर्तक नहीं समझना चाहिए।

शृंखला को पुनरुज्जीवित करो

आधुनिक हिन्दुओं में फूट के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। जातपात, साम्प्रदायिकता, प्रादेशिकता, भाषावाद और संकीर्णता अपने भद्दे सिर उठा रहे हैं। आध्यात्मिकता पर आधारित हिन्दुओं की सांस्कृतिक विरासत ही विभिन्न भूमियों और भारत के विभिन्न भागों के हिन्दुओं की विभिन्न रस्मों और विभिन्न जीवन प्रणालियों में अभिव्यक्त विभिन्नताओं का समीकरण और एकीकरण कर सकती है। दुर्भाग्य से भौतिकता पर अधिक जोर देकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाश्चात्य विचारों के हिन्दुओं ने इस शृंखला को कमजोर किया है। हमारा धर्मशास्त्र आदेश देता है कि हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन ढांचा चार स्तम्भों पर आधारित होना चाहिए—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। लेकिन आज सारा सामाजिक ढांचा दो स्तम्भों पर खड़ा है—अ : काम। □

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिंदी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य : ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : ३०० रु०

उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०

अभी केवल ८०० रु० में लीजिये।

आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३९-५६४७४१-८०१२११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था

संकलनकर्त्ता—राधेलाल मित्तल

(१) केवल खा-पीकर आलसी जीवन जीने की अपेक्षा मरना ही अच्छा है। पराजित होकर जीने की अपेक्षा युद्ध क्षेत्र में मरना श्रेयस्कर है (ज्ञान योग १३१-३२)

(२) छोटे दिल वालों से तुम किस काम की आशा रखते हो ? उनसे संसार में कुछ नहीं होगा। समुद्र पार करने के लिए लोहे का दिल चाहिए तब कहीं लंका लांघी जा सकती है। वज्र के गोले जैसा बनना होगा, जिससे पहाड़—पर्वत भेदा जा सके। (पत्रावली १, २८१)

(३) हमें तो अपना कार्य करते-करते प्राण छोड़ने हैं। साहसी बनो और इस बात का विश्वास रखो कि हमारे और तुम्हारे द्वारा महान् कार्य होने हैं। भगवान् ने बड़े-बड़े कार्य करने के लिए हमें निर्दिष्ट किया है और हम उन्हें करेंगे। (पत्रावली १, ६३)

(४) दुनिया तभी पवित्र और अच्छी हो सकती है जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे हों। वह है कार्य और हम हैं उसके कारण। इसलिए आओ हम अपने आपको पवित्र बना लें। आओ, हम अपने आपको पूर्ण बना लें (आत्मानुभूति तथा उसके मार्ग—१३०)

(५) शिकायतों और झगड़ों से क्या लाभ ? उससे हम कुछ अधिक अच्छे तो बन नहीं जायेंगे। जो अपने भाग्य में पड़ी हुई सामान्य वस्तु के लिए भी बड़बड़ाता है. वह हर एक वस्तु के लिए बड़बड़ायेगा। इस प्रकार सर्वदा बड़बड़ाते रहने से उसका जीवन दुःखमय हो जाएगा और सर्वत्र असफलता ही उसके हाथ लगेगी। परन्तु जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य को पूर्ण शक्ति से करता रहता है, वह ज्ञान एवं प्रकाश का भागी होगा और उसे अधिकाधिक ऊंचे कार्य करने के अवसर प्राप्त होंगे। (विविध प्रसंग ५-६)

(६) पवित्रता, धैर्य और अध्यवसाय इन्हीं तीनों गुणों से सफलता मिलती हैं— सर्वोपरि है प्रेम। (पत्रावली १, २१८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(७) केवल सत्कार्य करते रहो, सर्वदा पवित्र चिन्तन करो ; असत् संस्कार रोकने का बस यही एक उपाय है। (राजयोग १४३)

(८) मनुष्य हो तो रुपया पैदा करता है। रुपए से मनुष्य पैदा होता है; यह भी कभी कहीं सुना है ? यदि तू अपने मन और मुख को एक कर सके तथा वचन और क्रिया को एक कर सके तो धन आप ही तेरे पास जलवत् वह आयेगा। (विवेकानन्द जी के संग में-१४)

(९) केवल शिक्षा ! शिक्षा ! शिक्षा ! यूरोप के बहुतेरे नगरों में घूमकर और वहां के गरीबों के भी अमन, चेन और विद्या को देखकर हमारे गरीबों की बात याद आती थी और मैं आंसू बहाता था। यह अन्तर क्यों हुआ ? जबाव पाया—शिक्षा ! (पत्रावली २, ७४)

(१०) हमारे जातीय शोणित में एक प्रकार के भयानक रोग का बीज समा रहा है और वह है पत्येक विषय को हंसकर उड़ा देना—गाम्भीर्य का अभाव। इस दोष का सपूर्ण रूप से त्याग करो। वीर होओ। श्रद्धा सम्पन्न होओ। दूसरी बातें उनके पीछे आप ही आयेंगी—उन्हें उनका अनुसरण करना ही होगा। (भारत में विवेकानन्द—२७७)

(११) जो ठंडे मस्तिष्क वाला और शान्त है, जो उत्तम ढंग से बिचार करके कार्य करता है, जिसके स्नायु सहज ही उत्तेजित नहीं हो उठते तथा जो अत्यंत प्रेम और सहानुभूति संपन्न है, केवल वही व्यक्ति संसार में सत्कार्य कर सकता है और इस तरह उससे अपना भी कल्याण कर सकता है। (कर्मयोग—८४)

(१२) अपने स्नायुओं को बलवान् बनाओ। हमें लोहे के पुट्ठों और फौलाद के स्नायुओं की आवश्यकता है। हम लोग बहुत दिन रो चुके। अब और रोने की आवश्यकता नहीं है। अब अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मनुष्य बनो। (भारत में विवेकानन्द १५३)

(१३) अरे, जब मृत्यु अवश्यम्भावी है, तो कीट-पतंगों की तरह मरने की बजाय वीर की तरह मरना अच्छा है। इस अनित्य संसार में दो दिन अधिक जीवित रहकर भी क्या लाभ ? जरा-जीर्ण होकर थोड़ा-थोड़ा करके क्षीण होते हुए मरने की बजाय वीर की तरह दूसरों के अल्प कल्याण के लिए भी

(शेष पृष्ठ ३० पर देखें)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का संकट

—पंडिता राकेश रानी
अध्यक्ष, हिन्दू रक्षा समिति

स्वतंत्रता के पूर्व हमारे राष्ट्र दायकों ने यह घोषणा की थी कि देश के आजाद होने के वाद उनका पहला काम राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण और सार्वजनिक जीवन में नैतिकता की स्थापना करना होगा। उनकी मान्यता थी कि देश की सारी समस्याओं की जड़ सार्वजनिक जीवन की यह अपवित्रता ही है। गांधी जी जहां सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के प्रवल पक्षधर थे, वहीं लाल लाजपतराय ने इस क्षेत्र में एक सफल योजना भी बनाई थी। उनक चिंतन था कि सार्वजनिक सेवा का सबसे बड़ा क्षेत्र राजनीति है और व्यवसाय, पद-यश और सत्ता के लोभ से राजनीति को अपनाने वाले लोगों की बजाय इसमें सेवा और समर्पण की दृष्टि से काम करने वाले लोग आने चाहिए। उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में सेवा करने की उपादेयता ठीक उसी प्रकार आंकी जैसे धार्मिक और नैतिक चेतना के जागरण के लिए संत-संन्यासियों की है। लाला जी का मत था कि धर्म समाज की व्यवस्था का नियामक तत्त्व है। धर्म की प्रेरणा समाज और राष्ट्र को विघटनकारी शक्तियों से बचाती है, क्योंकि धर्म के सूत्र द्वारा ही सद्-शक्तियां संगठित होकर आसुरी शक्तियों का दमन करती हैं, इसी प्रकार राजनीति जीवन के विविध क्षेत्रों को नियंत्रित करती हैं। राजनीति राज्य की नीति है और राज्य की परिधि में प्राय: आज शासन-प्रशासन, शिक्षा, सुरक्षा आदि सभी विषय आते हैं। इसके लिए राज्यतंत्र को चलाने वाली राजनीति पर सज्जनों का ही वर्चस्व होना चाहिए। यदि राष्ट्र की नियामक राजनीति पर दुर्जनों और अपराधियों का वर्चस्व होगा तो राष्ट्र की समूची धारा ही विशक्त हो जायेगी। इसी दृष्टिकोण को सम्मुख रखकर लाला लाजपतराय ने राजनीतिक संन्यासियों की कल्पना की थी। राजनीतिक संन्यासियों से उनका अभिप्राय वही था कि वे सत्ता भोग और अधिकार या वैभव उपभोग की कामना से राजनीति में नहीं जायेंगे, अपितु समाज और राष्ट्र की अहेतुक सेवा की भावना से ही इस क्षेत्र में आयेंगे। इस प्रेरणा से ही उस कालखण्ड में अनेक राजनेत्ता राजनीति को में भी आए थे। लालबहादुर शास्त्री,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन और डा० सम्पूर्णानन्द जसे संत कोटि के राजनीतिज्ञ उस समय इसी दृष्टिकोण से राजनीति में आए थे और जीवन भर इसी पवित्रता से काम करते रहे। राजसत्ता के वैभव में रहकर भी वे इससे अलप्त रहे। सरदार पटेल इसी धारा से प्रेरित थे। उन्होंने तो राष्ट्रहित में प्रधानमंत्री पद के दावे को भी ठुकरा दिया था। डा० राजेन्द्र-प्रसाद भी ऐसे ही संत पुरुष थे। राजनीतिक संन्यासियों की यह श्रृंखला स्वतंत्रता के बाद क्यों नहीं पनप सकी ?

शायद मराठी की प्रसिद्ध साहित्यकार दुर्गा भागवत के शब्दों में इस शंका का उत्तर हमें मिल सकता है। राष्ट्रीय नेतृत्व के राजनीतिक पतन पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा था—आज हमारे राजनीतिज्ञों में महत्त्वाकांक्षा का अभाव हो गया है, वे केवल कुर्सी और अस्थायी पद-सत्ता तक ही सोचते हैं, वही उनका लक्ष्य होता है। और जब लक्ष्य ही सीमित है तो बड़े साध्य पवित्र कैसे होंगे ? तथा उसके परिणाम भी सुखद कैसे होंगे ? उन्होंने कहा था कि आजादी के पूर्व हमारे राजनेता व्यापक राष्ट्र हितों के बारे में सोचते थे। उनकी महत्त्वाकांक्षाएं विराट् थीं। उनकी दृष्टि शताब्दी भर आगे देश के भविष्य पर टिकी होती थी। इस कारण सरदार पटेल ने छह सौ रियसतों को एक सूत्र में बांधकर सशक्त भारत निर्माण करने का स्वप्न पूरा किया था। प्रधानमंत्री बनने का जोड़-तोड़ उन्होने नहीं बैठाया था।

किन्तु आज राजनीतिक जीवन की सम्पूर्ण गंगा प्रदूषित हो चली है। वह अपने उद्गम पर ही प्रदूषित हो गई है। फिर भला विशाल प्रवाह में कैसे पवित्र रह सकेगी। नतीजा यह हुआ है कि नीचे के स्तर तक राजनीति का अपराधीकरण हो गया है।

सार्वजनिक जीवन की इस विकृति का असर पड़ा है देश के समूचे प्रशासन तंत्र पर। हाल ही में प्रादेशिक और केन्द्रीय प्रशासन के स्तर पर ऐसी चौंकाने वाली घटनाएं हुई हैं जिन्होंने राष्ट्र के प्रत्येक शुभचिंतक को झकझोर कर रख दिया है। कुछ मास पूर्व बम्बई के एक कुख्यात तस्कर द्वारा वहां उच्चतम पुलिस और सिविल अधिकारियों को एक दावत देने और उसमें उनकी हीनतम तथा विकृष्ट हरकतों की वीडियो फिल्म की काफी चर्चा हो चुकी है। प्रशासन के सर्वोच्च स्तर के अधिकारियों की अपराधियों से सांठ गांठ जन जीवन की सुरक्षा पर एक प्रश्न चिह्न लगाती है। अपराधियों से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिले बड़े अफसर जब उन्हें अभयदान देंगे तो जनता की रक्षा कौन करेगा ? बम्बई की घटना अभी पुरानी नहीं पड़ी थी कि दिल्ली के एक तस्कर सम्राट् द्वारा अपने महरौली में स्थित फार्म पर ऐसी ही पार्टी के दौरान प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के अपराधी तत्त्वों से मिले होने के और भी चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। सुरा और सुन्दरियों की इस पार्टी में संयुक्त ग्रह सचिव नगर निगमायुक्त, महापौर और बड़े-बड़े पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। इस सभी को इस बात की जानकारी थी कि उक्त व्यक्ति का इतिहास आपराधिक है और वह आपराधिक मामलों में चर्चित भी है। फिर ये प्रशासन के सर्वोच्च अधिकारी, राजनेता और सांसद वहां क्यों गये ? क्या इससे स्वयं सिद्ध नहीं है कि इनके स्वार्थ निश्चित रूप से वहां जुड़े होंगे। और जब अपराध जगत् से ऐसे प्रशासकों के सम्बन्ध जुड़े हों तो उनके संरक्षण में पनपने वाले ऐसे अपराध वृक्षों की छाया में क्या लोकतंत्र की जड़ें कमजोर नहीं होंगी ?

सर्वोच्च प्रशासन तंत्र में ऐसी विकृतियां ऊपर से सार्वजनिक जीवन की विकृति के परिणामस्वरूप ही आ रही हैं। देश में नैतिकता और रामराज्य स्थापना की घोषणाएं तब तक साकार नहीं हो सकेंगी जब तक कि स्वच्छ चरित्र की पावन गंगा उद्गम पर ही निर्मल नहीं रहेगी। सार्वजनिक जीवन में यह विकृति और उसके परिणाम हमें हर स्तर पर देखने को मिल रहे हैं। गत वर्ष नागपुर में हुए युवा कांग्रेस के सम्मेलन में युवकों ने जो बीभत्स दृश्य पेश किया था उससे देश का मस्तक झुक गया था। वहां जाने वाले युवकों ने जिस कदर स्थान-स्थान पर रेलवे स्टेशन और दूकानें लूटीं थी उससे ऐसा आतंक उत्पन्न हो गया था जैसे किसी दुश्मन की सेना ने दूसरे देश पर हमला बोल दिया हो और लोग अपना जान-माल बचाकर निराश्रित भाग रहे हों। प्रशासन पंगु हो गया था। नागपुर के स्कूलों के सामने जाकर इन युवकों ने छात्राओं के कपड़े तार-तार कर दिये थे। सारा नागपुर बंद हो गया था और देश में एक आक्रोश भड़क उठा था। आखिर ऐसा क्यों हुआ ? कुंठित और पथभ्रष्ट युवाओं ने केवल सार्वजनिक जीवन में मनमानी कर रहे नेताओं की घटिया नकल करने की ही कोशिश की थी। इन नेताओं ने जो सत्ता, पद और वैभव गलत ढंग से प्राप्त किये, उसे उन्होंने अपने संख्या बल के आधार पर छीनना चाहा था, क्योंकि आज इस संख्या बल के सामने गांधी के समान देश के लिए करो या मरो का आदर्श नहीं था, बल्कि आज आदर्श था–छीनों, झपटो और खाओ का।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के अभाव की इस छाया के दूरगामी और भयानक प्रभाव अब सर्वत्र स्पष्ट दीख रहे हैं। देश की रक्षा करने वाली हमारी सेना में कई बार दुश्मनों के हाथ देश के रहस्य वेचने के आरोप में पूरी की पूरी बटालियनें पकड़ी गई हैं। सांभा काण्ड में ऐसा ही हुआ था। गत वर्ष जनरल लारकिंस द्वारा की गई जासूसी भी ऐसा ही चौंकाने वाला तथ्य था क्योंकि यह सैन्य अधिकारी सम्मानजनक पदक प्राप्त कर चुका था। पिछले दिनों प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भवन के कई वरिष्ठ अधिकारी भी देश के रहस्य वेचने के आरोप में बरखास्त किये जा चुके हैं। क्या इससे बड़ी कोई बिडम्बना हो सकती है कि प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भवन जैसे सर्वोच्च सत्ता केन्द्रों के लिए भी ईमानदार लोग न मिल सकें और चन्द पैसों और सुरा-सुन्दरी के बदले देश के साथ गद्दारी कर बैठें ?

हम देख रहे हैं कि पुलिस, सेना प्रशासन, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति सचिवालय कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं बचा है जहां अनैतिकता का घुन न लगा हो। लारकिंस के मुकद्दमे की बहस में भी यह स्पष्ट हो चुका है। उसने कहा था कि सैन्य अधिकारी जीवन का सर्वोच्च सम्मान और सुविधाएं पाने के बाद रिटायर होने पर मुझे वे सुविधाएं प्राप्त नहीं हो सकी। मैंने देखा था कि सरकारी सेवा में कार्यरत छोटे-छोटे अधिकारी और छोटे-छोटे व्यवसायी उन सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं और सुविधाभोगी जीवन की इस दौड़ में, और ऐसे ही आदर्शों के बीच उन्हीं का सम्मान है, इसलिए मैं भौतिक सुविधाओं के इस जाल में फंस गया। मे. जनरल लारकिंस का वक्तव्य सत्य के आधे तथ्य को प्रकट करता है कि सुविधओं के अभाव में मिलने वाने सम्मान की कमी के कारण वह सुविधाओं को खरीदने के लालच में फंस गया। लेकिन सत्य और तथ्य इससे कहीं अधिक बड़ा है और वह यह है कि व्यक्ति समाज के जीवन में स्थापित आदर्शों का अनुकरण करता है। आजादी के पूर्व जब गांधी जी लंगोटी पहनते थे और नेहरू जी वैभव की जिन्दगी छोड़कर गांव की सड़कों की धूल छानते थे, उस समय देश की युवा पीढ़ी के सामने यही आदर्श था कि हमारे नेता सर्वविधि सुख-वैभव छोड़कर देश की आजादी के लिए लड़ रहे हैं इसलिए उस समय देश के असंख्य युवकों ने घर बार छोड़कर आजादी की लड़ाई में जीवन होम दिया। किन्तु आज उनके सामने आदर्श दूसरे हैं कि समाज का छंटा हुआ अपराधी वर्ग सत्ता और कुर्सी को झपटकर वैभव भोग कर रहा है। उच्चतम सत्ताधीश किसी न किसी प्रकार ऐसे लोगों को संरक्षण देकर अपनी गद्दी बरकरार रखने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयत्न करते हैं। इसलिए त्याग की बजाय निकृष्टतम ढंग से भोग की सामग्री जुटाने का आदर्श उनकी प्रेरणा बन जाता है। वे देखते हैं कि सीधे, सरल और ईमानदार अफसर और नेता अभाव की जिंदगी जीते हुए पिछड़ जाते हैं, उनका कहीं भी उचित मूल्यांकन नहीं होता। परिणामस्वरूप लारकिंस काण्ड होते हैं, सांभा कांड होते हैं और प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति सचिवालयों में देश के प्रति गद्दारी करने वाले पकड़े जाते हैं और इसी आदर्श से प्रेरित होकर कभी नागपुर कांड का निकृष्ट युवा चरित्र उभरता है तो कभी मास्को के युवा महोत्सव में जाकर भारतीय युवा विश्व भर में भारत को कलंकित करते हैं।

समय आ गया है कि हमारे नेता मूल रोग को पहचानें। ऐसी घटनाओं पर लीपापोती करने से या देश के प्रति गद्दारी करने वालों को दंड देने से यह प्रक्रिया कभी रुकेगी नहीं। जरूरत है राष्ट्र के विषाक्त रक्त को शुद्ध करने की। इसके लिए सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्न करना होगा। भारत के युवा प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता की स्थापना का संकल्प तो लिया है—देखना यह है कि उसके क्रियान्वयन के लिए वे क्या करते हैं ? □

(पृष्ठ २५ का शेष)

लड़कर उसी समय मर जाना क्या अच्छा नहीं है ? (विवेकानन्द जी के संग में, २५६)

(१४) ऐ भारत ! तुम मत भूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री और दमयंती है। मत भूलना कि तुम्हारा विवाह, धन और तुम्हारा जीवन इंद्रिय सुख के लिए—अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है। मत भूलना कि तुम जन्म से ही माता के लिए बलिस्वरूप रखे गये हो। तुम मत भूलना कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर तुम्हारा रक्त और तुम्हारे भाई हैं। (वर्त्तमान भारत, ४६)

(१५) मृत्यु पर्यन्त काम करो। यह जीवन आता है और जाता है—नाम, यश, भोग–ये सब थोड़े दिन के लिए हैं। संसारी कीड़े की तरह मरने से अच्छा है—कहीं अधिक अच्छा है कि कर्त्तव्य के क्षेत्र में सत्य का उपदेश देते हुए मरो। आगे बढ़ो। (पत्रावली २, २६) □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य विद्वान् प्रतिवर्ष पुरस्कृत होंगे

बम्बई । आर्य समाज सान्ताक्रुज के महामंत्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा दो लाख रुपये के स्थायी कोष की स्थापना की घोषणा की है जिसके ब्याज से २१,००० रुपया प्रतिवर्ष प्राप्त होगा । यह राशि आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर प्रतिवर्ष "वेद-वेदांग पुरस्कार" योजना के अन्तर्गत आर्य जगत् के ऐसे विद्वान् को भेंट की जाया करेगी जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार तथा अनुसंधान एवं साहित्य सृजन में अपना जीवन समर्पित किया हो ।

आर्यसमाज मन्दिर हजूरी बाग, श्रीनगर के विशाल भवन को देशद्रोही उग्रवादियों ने आग लगाकर पूर्णतया नष्ट कर दिया था । आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने उसके भवन के नव निर्माण के लिए १५,००० रुपये की राशि आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री को भेंट की ।

बंगलादेश में हिन्दुओं के व्यापक और सुनियोजित हत्याकांड

पर अंग्रेजी में खोजपूर्ण पुस्तक

जैनोसाइड ऑफ हिन्दूज ऐंड बुद्धिस्ट्स इन ईस्ट पाकिस्तान ऐंड बंगला देश

प्राप्तिस्थान :—

हिन्दू सेना
झारखंडी मन्दिर के सामने
भोलानाथ नगर
शाहदरा, दिल्ली-३२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

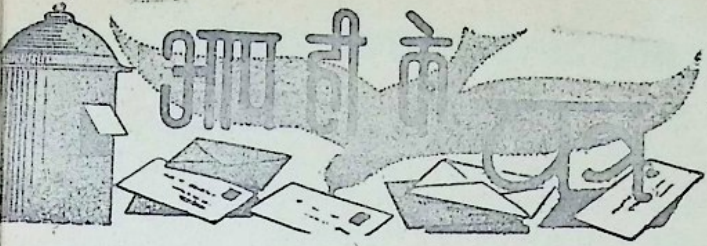

जन-ज्ञान जन-जन को जागृत कर रहा है

रम आदरणीय बहिन राकेशरानी जी,

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आपका "जनज्ञान" जन-जन को जागृत कर रहा है, किन्तु जब तक इस देश के कुर्सी के ठेकेदारों को धर्म-नरपेक्षता पसंद है तब तक इस देश का आर्यावर्त्त बनना असंभव है। किन्तु क्त ठेकेदारों को यह नहीं भूलना चाहिए कि जब तक हिन्दुस्तान में हिन्दू हुसंख्यक है तभी तक यह देश धर्मनिरपेक्ष रह सकता है तथा तभी तक नकी कुर्सी सुरक्षित है किन्तु धर्मान्तरण जो मीनाक्षीपुरम् से बहराइच क चल रहा है, इसी गति से चलता रहा तो इसे कश्मीर से कन्याकुमारी तक हुंचने में अधिक समय नहीं लगेगा।

शायद तभी आप जैसी देवी स्वरूप भारतीय नारी पर लगाये गये ३४ भियोगों का जिन्हें सरकार पुरस्कार स्वरूप आप पर थोप रही है, का ायश्चित्त हो किन्तु आग लगने पर कुआं खोदने को प्रायश्चित्त नहीं कहा ा सकता। देशभक्तों पर देशभक्ति हित लगे अभियोगों को भविष्य का तिहास क्षमा नहीं करेगा।

आज आवश्यकता है आप जैसे राष्ट्रभक्तों की। तभी भारत कश्मीर से न्याकुमारी तक एक हो सकेगा अन्यथा देशद्रोही इस देश के न जाने कितने किस्तान, खालिस्तान एवं इस्लामिस्तान बनायेंगे।

आप सोये भारतीयों को जगाती रहें। एक मैं ही नहीं, किन्तु सभी ारतीय आपके साथ हैं।

शिवनारायण राठौर

समत (जि० सीहोर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप अपने आपको अकेली न समझे

पूज्य और प्यारी मां,

हे मां, तुम बराबर लड़ती रहो। अब तुम्हारे हिन्दू पुत्र सोते ही रहेंगे अब वे जाग रहे हैं। अब वह समय दूर नहीं, जब भारत हिन्दू राज्य घोषित करना पड़ेगा। हे मां, आप अपने आपको अकेली समझें। करोड़ों हिन्दू बहिनें व हिन्दू भाई आपके साथ हैं।

हे राकेश रानी मां, तुमको बार-बार प्रणाम।

अनिल तिव

मोंठ (जि० झांसी)

राष्ट्रद्रोहियों को शक्ति से कुचला जा

महोदय,

जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान समर्थक कट्टर राष्ट्र विरोधी संस्था जमा इस्लामी के आह्वान पर वहां के निवासी मुसलमानों ने चौदह अ (पाकिस्तान के स्वतन्त्रता दिवस) लगभग चालीस स्थानों पर पाकिस्त ध्वज फहरा कर मनाया।

जमाअते इस्लामी ने मुसलमानों के नाम एक पत्रक निकाला था, जि १४ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस मनाने का आह्वान किया गया था। इस का असर जम्मू-कश्मीर में इतना अधिक हुआ कि जम्मू-कश्मीर वि विद्यालय व इकबाल पुस्तकालय जैसी संस्थाओं में ही नहीं, पूरे कश्मीर में लग चालीस स्थानों पर पाकिस्तानी ध्वज फहराये गये। राष्ट्रद्रोहियों ने भा विरोधी तथा पाकिस्तान समर्थक नारे लगाये, पुलिस से संघर्ष किया, कि कई पुलिस कर्मी घायल हुए। उपरोक्त घटना कोई नयी नहीं है; प्रति व इस प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं।

इस विषय में मेरा भारत सरकार से निवेदन है कि वह भारत वि संस्था 'जमाअते इस्लामी' पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाये तथा जम्मू-क को विशेष दर्जा देने वाली भारतीय संविधान की धारा ३७० के अवि हटाये तथा राष्ट्र विरोधी देश की एकता व अखंडता को खतरे में डालने पाकिस्तान समर्थक राष्ट्रद्रोही काले सांपों के फन को कुचल कर उनके को खंडित करने वाले स्वप्नों को असफल कर दे।

महासू, बुलन्दशहर

सुरेश चन्द्र सार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान प्रचार का सशक्त माध्यम है

महोदय,

मुझे 'जनज्ञान' की एक प्रति प्राप्त हो गई। पुस्तक पढ़कर रोमांच-सा हो आया। यह सनातम धर्म की रक्षा तथा सनातम धर्म के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है। इसमें दिए गए लेख तथा कविताएं अत्यन्त ही प्रभाव-पूर्ण तथा उत्कृष्ट हैं। हिन्दू रक्षा समिति का गठन भी कर रहा हूं। मैंने जनज्ञान की प्रति कई भाइयों को पढ़ने को दीं। लोगों ने इसे रुचिपूर्वक पढ़ा है। सराहना भी की है।

उतरौला

सुरेशकुमार रायजादा

जन-ज्ञान जागृति ला रहा है

महोदय,

आपने हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए जो कदम उठाये हैं, मैं उनका प्रबल समर्थक हूं। हिन्दूधर्म की सेवा के लिए महात्मा वेदभिक्षुजी ने जो कार्य किया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है, भारत सरकार ने आपके ऊपर जो ३४ मुकद्दमे चला रखे हैं, यह हिन्दू समाज की दुर्बलता के कारण ही संभव हो सका है। सब कठिनाइयों के बावजूद 'जनज्ञान' हिन्दू समाज में जागृति ला रहा है।

मकराना

कस्तूरचन्द जोशी

सत्प्रयास अभिनन्दनीय है

आदरणीय बहिन जी,

जन-ज्ञान (जून ८५, आषाढ़ २०४२ के अंक में) मेरा संकल्प मेरा निश्चय पढ़कर खुशी हुई। भारतीय संस्कृति की ज्योति भारतीय नारी के ही हाथों में है और वह हिन्दू है शब्द से अभिलषित या सुशोभित वही अपने पुत्रों व भाइयों को उसकी दिशा बताती है। यह हमारी भारतीय धरोहर है। उसकी संरक्षिका हिन्दू नारी ही होगी। इस दिशा में आपका सत्प्रयास अभिनन्दनीय है। हम अपने परिवार की ओर से तथा अपनी ओर से शुभ कामनाएं तथा आपके आदेशों को मानकर शिरोधार्य कर उसे निभाने की या सहयोग देने की कोशिश करते रहेंगे।

बारा (फतेहपुर)

कृपाशंकर औदीच्य,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान बहुत अच्छी पत्रिका है

बहन राकेशरानी,

'जनज्ञान' बहुत अच्छी पत्रिका है। आपकी पत्रिका जब मैंने पहली बार पढ़ी तो दंग रह गया। बहन, यह पत्रिका बुक-स्टालों पर नहीं मिलती। आपको प्रचारक भेजकर इस पत्रिका का प्रचार करवाना चाहिए। मैं कालेज में पढ़ता हूं। अगर नौकरी लग गई तो अवश्य आपकी संस्था को आर्थिक सहायता दूंगा।

बाबूलाल स्वामी

डीडवाना

'जन-ज्ञान' का योगदान

माननीया बहन जी,

जनज्ञान का श्रावण २०४२ का अंक देखा। सद्धर्म एवं सत्संस्कृति के प्रचार में इस पत्रिका का योगदान स्मरणीय रहेगा।

आज हिन्दू धर्म को बाह्य की अपेक्षा आंतरिक खतरे अधिक हैं। कुछ तथाकथित प्रगतिशील 'शकुनि' सस्ती लोकप्रियता के लिए प्रलाप करते रहते हैं। इनसे सावधान होकर जन-जागरण और जन-जन में हिन्दुत्व का प्रचार प्रसार आवश्यक है।

डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

जमशेदपुर

जन-ज्ञान को पढ़कर हृदय को शांति मिली

परम पूज्य मां राकेशरानी जी !

मैंने आप द्वारा प्रकाशित 'जनज्ञान' वैशाख अंक पढ़ा। पढ़कर हृदय को शांति मिली। "**गोहत्या का हर धर्म में निषेध**", **स्वामी विवेकानन्द के विचार, अध्यात्म से होगा समस्याओं का निदान** तथा आषाढ अंक में प्रकाशित **मन को शिव संकल्पों से भरिए, श्री सन्तराम बी०ए०** आदि लेख मुझे तथा मेरे साथियों को बहुत ही अच्छे लगे। 'राम जन्म भूमि मुक्ति एक राष्ट्रीय आवश्यकता' पर आज विचार करने की आवश्यकता है।

वृजलाल प्रजापति

पूरे ठाकुर पाण्डेय, पो० करमपुरा
जि० बारावंकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोम और सुरा

लेखक--(स्व०) स्वा० समर्पणानन्द

यूरोपियन विद्वानों के कथानुसार सोम एक पौधा है, जिसका रस नशा उत्पन्न करने वाला है।

मैक्डौनल की वैदिक रीडर (Vedic Reader) नामक पुस्तक में सोम प्रकरण में १५३ पृष्ठ पर लिखा है—

The Soma juice which is intoxicating अर्थात् सोमरस जो नशा उत्पन्न करने वाला है। आगे चलकर १५४ पृष्ठ पर वे लिखते हैं—

The Soma invigoatas Indra for the fight with Vritra is mentioned in inumerable Pagssages.

(स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज का यह निबन्ध १९६७ में मेरठ में छपा था। वेद में 'सोम' शब्द से प्रायः लोग शराब का ग्रहण करते हैं। इससे भ्रान्ति उत्पन्न होती है। इस निबन्ध में उस भ्रान्ति को दूर करके सोम और सुरा को स्पष्ट किया गया है। वेदज्ञ विद्वानों से निवेदन है कि वे इसमें दिये गयेप्रमाणों से सहमत हैं अथवा नहीं ? सूचित करें।, विशेषतः मन्त्र के देवता पर अपना अधिकृत विचार अवश्य लिखने की कृपा करें। यदि यह देश शराब के अभिशाप से मुक्त हो सके तो एक स्वस्थ वातावरण बन सकता है—सम्पादक)

सोम इन्द्र को वृत्र से लड़ने के लिए शक्ति प्रदान करता है। यह बात वेद के अपरिगणित स्थलों पर कही गई है। पाश्चात्य विद्वानों की भूल यहां से ही आरम्भ होती है। दूध भी शक्ति प्रदान करता है, सुरा भी शक्ति प्रदान करती है परन्तु दूध नशा उत्पन्न नहीं करता।

शतपथ ब्राह्मण द्वादश काण्ड ७ अध्याय ३ ब्राह्मणों ने स्पष्ट कहा है—

(१) क्षत्रम्वै पयोग्रहाः
दूध भरे प्याले क्षत्रिय हैं।

(१) विट्सुरा ग्रहाः।
सुराग्रह अर्थात् शराब के प्याले उसकी प्रजा हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) पयोग्रह प्राण हैं ।　　　(२) सुराग्रह शरीर हैं ।
(३) पयोग्रह सोम हैं ।　　　(३) सुराग्रह अन्न हैं ।
(४) पयोग्रह पशु हैं ।　　　(४) सुराग्रह अन्न है ।
(५) पयोग्रह ग्राम्य पशु हैं ।　　(५) सुराग्रह जंगली पशु हैं ।

"सुराम्पीत्वा रौद्रमना भवति" (काण्डिका २०) शराब पीकर मनुष्य का मन रौद्र हो जाता है, दूध अथवा सोम पीकर रौद्र मन कहीं नहीं कहा गया ।

ऋग्वेद ८.२.१२ में कहा गया है 'युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्" अर्थात् शराब पीकर लोग दुर्मद होकर आपस में लड़ते हैं । यह दुर्मद होकर शब्द सोम अथवा दूध के लिए सारे वैदिक वाङ्मय में कहीं कहीं नहीं आया । इससे स्पष्ट है कि सोम invigorating शक्तिदायक है । invigorating मतिलोप कारक नहीं । यदि इसमें कोई सन्देह रह गया है, तो शतपथ ब्राह्मण की निम्नलिखित पंक्तियें ले लीजिए ।

"सत्यं यशः श्रीर्ज्योतिः सोमोऽनृतं पाप्मा तमः सुरा" शतपथ ५ काण्ड, १ अध्याय २, ब्रा०, १० काण्डिका—

सोम चार का प्रतीक है ।	सुरा तीन का प्रतीक है । अनृतम्, पाप्मा तथा सुरा ।
(१) सत्य	(१) अनृत अर्थात झूठ
(२) यश	(२) पाप
(३) श्रीः	(३) अन्धकार
(४) ज्योति	

इसीलिए वाजपेय यज्ञ में सोम के प्याले तथा सुरा के प्याले दोनों रक्खे जाते हैं किन्तु दोनों के लिए पृथक्-पृथक् स्थान बनाया जाता है, क्योंकि दोनों एक दूसरे के अत्यन्त विरोधी हैं । यजुर्वेद में स्पष्ट कहा है :—

नाना हि वां देवहितं सदस्कृतम् ।
मा संसृक्षाताम् परमे व्योमन् ।
सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोमएषः ।
मा मा हिंसीः स्वां योनिमाविशन्ती । (यजुर्वेद १९.७)
हे सोम और हे सुरा ।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम्हारे लिए परमदेव परमात्मा ने अथवा विद्वानों ने पृथक्-पृथक् स्थान निश्चित किये हैं। 'परमे व्योमन्'' (इमे वै लोकाः परमं व्योम ७.५ २७८) अर्थात् इन समस्त लोकों में तुम कहीं भी परस्पर इकट्ठ मत होओ तुम्हारे अन्दर कोई संसर्ग नहीं होना चाहिये। हे सुरा! यद्यपि तू बलवर्धक है किन्तु साथ ही शोषण करने वाली भी, वह बल किस काम का जो एक ओर से आर्द्र करे तो एक ओर से शोषण कर डाले। इधर यह सोम तो पूर्णतया आर्द्र करने वाला है। सुरा अन्दर विद्यमान बल को उद्दीप्त मात्र करती है, नया बल उत्पन्न नहीं करती। दूसरी ओर सोम तो अन्न के सवन द्वारा नई शक्ति लेकर नया वीर्य बनाता है। इसीलिए कहा है="रेतो वै सोमः। सो हे सुरा, तू आत्महत्यारी है। अपने घर में घुसकर हमारी हिंसा न कर। देखो यह सुरा अलग, यह सोम अलग, यह शुष्मिणी है, वह आर्द्र करने वाला सोम है, सो इस प्रकार सुरा को पृथक् करके मनुष्य को पाप से दूर करता है "पाम्नैवैनं भूल्यावर्मयति" शत:० १२, ७,३ १४॥ बस, इस प्रकार जो सुरा से दूर रहता है, वह यशस्वी होता है।

अब एक प्रसंग लीजिये जिससे इस पर प्रकाश पड़ता है। यदि यज्ञ के लिये लाया हुआ सोम कोई चुरा ले जावे अथवा किसी अन्य कारण से लुप्त हो जावे, तब क्या किया जावे।

शतपथ चतुर्थ काण्ड ५ अध्याय १० ब्राह्मण २-६ कण्डिका।

(१) "यान्यरुणपुष्पाणि कालगुणानि तान्यभिषण्डयात्"— अर्जुन नामक घास के दो भेद हैं। एक लाल फूल वाला, दूसरा गुलाबी रंग के फूलों वाला सो गुलाबी रंग के फूल वाले अर्जुन को अभिषव के काम में लावे अर्थात् सोम का सम्पूर्ण काम उससे ले।

(२) यदि यह लाल फूल वाले अर्जुन न मिलें तो श्येनहृत को काम में लावे। श्येनहृत उस लता को कहते कहते हैं जो खैर आदि पुराने वृक्ष पर उग आती है।

(३) यदि वह भी न मिले तो आदार अर्थात् पूतीका नामक पौधे को काम में लावे।

(४) यदि आदार न मिले तो लाल रंग की दूब प्रयोग में लावे।

(५) यदि लाल दूब भी न मिले कोई भी हरी कुशा काम में लावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनमें से एक भी मादक द्रव्य नहीं है। यदि सोम मादक द्रव्य होता उसका स्थान कोई भांग धतूरा लेता न कि दूर्व्वा।

यह दूर्व्वा आज तक हिन्दुओं के सब मंगल कार्यों में प्रयोग में आती यह तो हुआ तब यदि सोम का अर्थ सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में कोई अथवा वृक्ष विशेष ही होता परन्तु देखिये तो सही कि वेद इस विषय में कहता है।

सोमं मन्यते पपिवान् यत् सम्पिशन्त्योषधिम्।

सोमं यं ब्राह्मणो विदुर्न तस्याम्नाति कश्चन। ऋ० १०, ८५, ३

देखो तो इसको लोग सोम नामक औषधि का रस पीस कर लाये हैं यह समझा है कि मैंने सोम रस पी लिया, जिसे वेदवेत्ता ब्राह्मण लोग जानते हैं, उसे कोई (स्थूल बुद्धि) मनुष्य नहीं पा सकता।

इसका ग्रिफिथ कृत अनुवाद सुनिये।

One thinks, when they have brayed the plant,
that he hath drunk the Soma's juice;
Of him whom Brahmans truly know as,
Soma no even tastes.

यही मंत्र अथर्व वेद में इस प्रकार आया है "सोमं मन्यते पपिवान् सम्पिषन्त्योषधिं, सोमं यं ब्रह्मणो विदुर्न तस्याश्नाति पार्थिवः।

अथर्व, १४, १,

One thinks when men have brayed the plant, that h hath drunk the Soma's juice, of him whom Brahmans tru knew as Soma never mortal eats.

इस प्रकार स्पष्ट है कि वेद में कहीं-कहीं सोम नामक वनस्पति का वर्णन है परन्तु मुख्य रूप से जिस सोम का वर्णन है, वह तो और ही उसका वर्णन वेद से हो सुनिये—

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चा-सच्च वचसी पस्पृ ।
तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यास ।

ऋ. ७-१०४-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्तम विज्ञान की दुनिया में निवास करने वाले विद्वज्जन के सामने सत् और असत् दोनों वचन अपना विवाद लेकर उपस्थित होते हैं। स्तवनकर्त्ता विद्वान् (सोम) उसमें से जो सत्य हो ओर यदि एक प्रश्न के दो समाधान हों तो उनमें से जो ऋजुतर हो, उसे बचा लेता है तथा दूसरे को हतप्रभ कर देता है।

इसका ग्रिफिथ कृत अनुवाद सुनिये—

The prudent finds it easy to distinguih the true and false.

Of tnese two that which is true and honest, Soma protects, and brings tke false to nothing.

अब तक हमने इतनी बातें सिद्ध कर दी हैं—

(१) सोम का अर्थ केवल वनस्पति विशेष नहीं।

(२) वनस्पति विशेष यज्ञों में आता है, वहां भी वह सोम का प्रतीक मात्र है।

(३ सोम नामक वनस्पति मादक द्रव्य नहीं इसके निम्न कारण हैं—

(क) उसे सत्य, यश, श्री और ज्योति का प्रतीक माना गया गया है। इसके विपरीत सुरा को अमृत, पाप और अन्धकार का प्रतीक माना गया है।

(ख) सोम के साथ दुर्मद शब्द का प्रयोग कहीं नहीं, सुरा के मद को दुर्मद कहा गया है।

(ग) सोम को रुद्र का विरोधी कहा है— "प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम।"
ऋ. ७. ४१. १

इसके विपरीत सुरा के विषय में कहा है "सुराम् पीत्वा रौद्रमनाः।"
शतपथ १२. ७. ३. २७

(घ) सोम का अर्थ बूटी रगड़ना ही नहीं, ब्रह्मवेत्ता जिम सोम को जानते हैं वह कुछ अलग वस्तु है।

(ङ) सोम का अर्थ है सत्यासत्य में से परख कर सत्य की घोषणा करने वाला।

अब सोम के "राजा" इस विशेषण की ओर ध्यान दीजिये।

ऋग्वेद नवम मण्डल ११४ सूक्त का दूसरा मंत्र इस प्रकार है।—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषे मन्त्रकृतां सोमैः कश्यपोद्वर्धयन् गिरः ।
सोमेमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधाम्पतिरिन्द्रायेन्दो परिस्रव ।
हे विश्व को भक्ति रस के प्रवाह से आर्द्र करने वाले (इन्दो!)

हे क्रान्तदर्शिन्, हे (ऋषे!)
हे विश्व की उन्नति के निरीक्षक (कश्यप)

भक्तराजतू, मंत्रों के प्रचार करने वालों की वाणी को अपने उत्साह-वर्धक व्यवहारों अथवा शब्दों से सदा बढ़ावा देता हुआ राजा सोम को सदा नमस्कार कर, जो अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों के विरुद्ध युद्ध करने वाले में अग्रगण्य होकर प्रख्यात होता है (वीरुध = विरोधी परिस्थितियों को परास्त करके उदय होने वाला, जैसे वृक्ष उनमें अग्रगण्य वीरुधाम्पति) और तू उस परमैश्वर्य के भण्डार प्रभु की ओर अपनी रसधारा से वह निकल ।

यह वृक्ष के समान विरोधी परिस्थितियों को परास्त करने वालों में अग्रगण्य राजा सोम कौन है ?

यह वही भक्तराज है, जिसके राज्य में प्रभु की (इन्द्र की-परमेश्वर की) महिमा सदा गाई जाती है, इसका वर्णन वेद से ही सुनिये—

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये । ऋ. ८. ३. ४

यह वह इन्द्र (परमात्मा अथवा राजा है) जो समुद्र के समान जितना उसके चिन्तन में आगे बढ़ो उतना अधिक विस्तारयुक्त होता है । इसको प्रजा के हृदयों में सहस्रों ऋषियों ने सहनशक्ति का परिचय देकर प्रतिष्ठित किया है । यज्ञों में विप्रराज्य में इसके बल का जो यशोगान किया जाता है, वह सच्चा है । सोम इस विप्रराज्य का राजा है, यही बात यजुर्वेद के राजसूय प्रकरण में कही गई है ।

एष वोऽमी विशोराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा । यजु० १०.१८
इस सोम का एक वर्णन और लीजिये—
शिशु जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन ।
कविर्गीर्भिः काव्येन कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजतिष्टुप् ।।

ऋ. ९. ९६. १७. १८

इस भक्तराज सोम को—जब य प्यारा-प्यारा सद्योजात शिशु था; तब से ही मांजते आए हैं, फिर सैनिक लोग इसे सैनिक शिक्षा से सुशोभित करते हैं, फिर यह नाना शास्त्रों का विद्वान् बनता है, फिर विशेष रूप स काव्य का विद्वान् बन कर अपने काव्य सहित कविरूप में कविता सुनाता हुआ कविगोष्ठी में प्रविष्ट होता है, जहां सुकवि तथा कुकवि की छनाई होती है। यह स्वयं 'ऋषिमनाः' है; फिर इसने गुरुकुल का आचार्य बनकर सैकड़ों ऋषि बनाए। इसलिये यह 'ऋषिकृत्' है, सहस्रों शास्त्र मार्गों में इसकी स्वतन्त्र गति है, कवियों के लिये आदर्श है; इसकी पद्धति पर अन्य कवि चलते है। आज यह अपने 'तृतीय धाम' अर्थात् उस आश्रम को जहां कुलपति अथवा उत्तम अध्यापक बनकर इसने वानप्रस्थ काल बिताया, उसको किसी योग्य उत्तराधिकारी को सौंपकर यह महान् पुरुष 'महिषः' सम्पूर्ण प्रजा के सामने स्तुति पात्र होकर विराजमान है और इस विराट् सृष्टि के प्रकाश में अपना प्रकाश समझता है, योग्य उत्तराधिकारी को सौंपकर यह स्वयं क्या करेगा सो अगले मंत्र में सुनिये—

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ।।

ऋ० ९. ९६. १९

जब राष्ट्र- विप्लव हो तो यह बाज के समान शक्तिशाली बनकर शस्त्र धारण करता हुआ वाणी, भूमि तथा गाय त्रिविध गोवंश लाभदायक वृष्टि बिन्दु के समान उच्च पद त्याग कर अपने को मिट्टी में मिलाने वाली प्रजा का धारण करने वाला बनता है। अथवा इस नाना विचार तरंगों से उद्वेलित मानव समाज रूप समुद्र में सेवार्थ लगता हुआ यह महान् पूरुष चतुर्थ धाम अर्थात् संन्यासाश्रम का सेवन करता है और मानव समाज रूप समुद्र में लीन हो जाता है।

अब जरा इन मन्त्रों का ग्रिफिथ कृत अनुवाद सुनिये—

17. They deck him at his birth, the lovely infant, the Maruts with their troops adorn the car horse, by songs, a

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

poet, and a sage by wisdom, Soma goes si nging through the cleaning filter

18. Light winner, Rishi minded, Rishi-maker, hymned in a thousand hymns, leader of sages.

A seer who arrives to gain his third form, Soma is, like Viraj, resplendent as a singer.

19. Hawk-seated in the bowls, bird wide extended, hames seeking kine and wielding weapons.

Following close the seas, the wave of waters, the great bull tells the fourth form and declares it.

सम्पूर्ण विश्व के विद्वान् न्याय करें कि क्या यह किसी वृक्ष का, लता का अथवा उसके रस का वर्णन है।

कविः काव्येन — By song a poet
कविः गीर्भिः —A sage by wisdom.

यह कौन वृक्ष है ?

अब यह तो स्पष्ट हो गया कि सोम का अर्थ केवल वृक्ष नहीं है, सोम सदसद् वचनों के विवाद में निर्णय करता है।

'कवि, ऋषिमना, ऋषिकृत्' आदि विशेषणों का पात्र है।

यहां सायणादि भाष्यकारों से एक प्रश्न और पूछना आवश्यक है। नवम मण्डल का देवता 'पवमान यदि सोम' है, पवमान का अर्थ है जो दूसरों को पवित्र कर रहा हो। यहां सायणादि ने पूयमान यह अर्थ कैसे कर दिया कहो कि पू धातु अकर्म्मक है तो इसी मण्डल में ६७वें सूक्त में २७ वां मंत्र इस प्रकार—

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया।
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा।

क्या यहां यह अर्थ करेंगे कि सब देव मेरे द्वारा पवित्र किये जावें परन्तु पू धातु सकर्मक तो फिर भी रहेगी। परन्तु सोम शब्द के इन सब भिन्न अर्थों को एक माला में पिरोने वाला कोई सूत्र भी है या नहीं।

इसका उत्तर व्याकरण शास्त्र तथा प्रयोगशास्त्र मिलकर देंगे। यह शब्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'षुञ् अभिभवे' धातु से बना है, अभिषव का अर्थ है सार निकालना अर्थात् To extract परन्तु अभिषव शब्द को यहां विस्तृत अर्थों में लेना होगा। प्रायः अभिषव का अर्थ भट्टी पर चढ़ाकर अर्क निकालना समझा जाता है। यह प्रयोग के विरुद्ध है।

संस्कृत भाषा में पुत्र को सुत तथा पुत्री को सुता कहते हैं। ये दोनों शब्द इसी सु धातु से बने हैं, परन्तु पुत्री उत्पन्न करने के लिये कहीं भी स्त्री वा पुरुष को भट्टी पर नहीं चढ़ाया जाता। इस लिये सु धातु का अर्थ हुआ किसी उपादान कारण से परिश्रम द्वारा कोई उपयोगी वस्तु उत्पन्न करना।

अब सोम के इतने अर्थ हुए—

(१) सुनोतीति सोमः–उपादान कारण से उपयोगी तत्त्व निकालने वाला।

(२) सूयते इति सोमः–उपादान कारण से निकाला हुआ उपयोगी तत्त्व

अथवा

(३) सूयते यस्मात् स सोमः—जिस उपादान कारण से रस निकाला जाय वह भी सोम कहलाता है।

सत्यासत्य का निर्णय करने वाला सोम। ऋ.७.१०४. १२)

प्रथम प्रयोग का उदाहरण हैं, सोम रस के अर्थ में सोम दूसरे अर्थ का उदाहरण है।

सोम वृक्ष तीसरे अर्थ का उदाहरण है। इस प्रकार सु का अर्थ हुआ परिश्रम द्वारा कोई सुखदायक पदार्थ उत्पन्न करना।

इसलिये परिश्रम द्वारा पदार्थ उत्पन्न करने वाले 'सुर' कहलाते हैं। परिश्रम न करने वाले 'असुर' कहलाते हैं। शतपथ १३ काण्ड ४ अध्याय ३ ब्राह्मण ११ काण्डिका में लिखा है—

''असुराविशस्त इम आसत इति कुसीदिन उपसमेता भवन्ति तानुपदिशति'।

सप्तम दिन आज के दिन की प्रजा असुर है तो सभा में जो कुसीदी अर्थात् ब्याज खाकर जीविका करने वाले इकट्ठे होते हैं, उनकी ओर निर्देश करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'सु' का अर्थ है किसी निरुपयोगी उपादान कारण से कोई सुखदायक वस्तु उत्पन्न करना। इसी का नाम सवन है, उस सवन से उत्पन्न पदार्थ भी सोम है। पदार्थ उत्पन्न करने की भावना का नाम अग्नि है—जिससे प्रेरित होकर मनुष्य कोई पदार्थ उत्पन्न करता है। उत्पन्न पदार्थ सोम है। जब तक पदार्थ उत्पन्न नहीं होता, शुष्कता छाई रहती है। परिश्रम से और शुष्कता आती है। पदार्थ उत्पन्न करने वाला तथा उपयोग करने वाले दोनों आर्द्र हो जाते हैं। इसीलिये कहा—

"यच्छुष्कम् तदाग्नेयम् यदार्द्रम् तत् सोम्यम्।"

शत०, प्रथम काण्ड, ६ अ, ३ आ. २३ क

इन सब सवनों में सर्वश्रेष्ठ सवन मनुष्य को विद्या तथा चरित्र सम्पन्न करता है, इसलिये स्नातक को सोम कहा।

सोमो वधूयुरभवत् ऋ. १०. ८५. ९ तथा अथर्व १४. १. ९

इन सवन कर्त्ताओं में सत्यासत्य निर्णय में समर्थ सर्वश्रेष्ठ सोम है, जिसके लिये कहा—

'सोमोऽस्माकम् ब्राह्मणाना राजा'। कुल पुरोहित भी मनुष्य सवन करते हैं। इसलिये सोम हैं।

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः।" ऋ. ९. ६६. २०

यहां पवमान सोम को ऋषि तथा पाञ्चजन्य पुरोहित अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा निषाद इन पांचों जनों को पुरोहित कहा है। इसी प्रकार चरित्र निर्माण करने वाले आचार्य का वर्णन लीजिये—

"सोम राजन् प्रण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि।" ऋ.८.४८.७

हे विप्रराज सोम! हमारी आयुओं को भवसागर से पार उतार, जैसे सूर्य दिनों को प्रकाशित करता है।

सोम राजन् मृडया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्याऽस्तस्य विद्धि। ८.४८.८

हे विप्रराज सोम! हमें सुखी बना, हमारा जीवन सुधार, मत भूल कि हम तेरे व्रती हैं और तूने हमें "मम व्रते ते हृदयम् दधामि" कहकर यज्ञोपवीत दिया है।

इस प्रकार के दयार्द्र गुरू क्या करे ?

"ते मा रक्षन्तु विस्रसश्चरित्रात्" ऐसे दयार्द्र गुरु (इन्दवः) हमें चरित्र-भ्रष्ट होने से बचावें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मत भूलिये कि शतपथ में लिखा है "मनुष्या वा आपः।" शत० ७, ३, १, २०,

इसलिए जो स्नातक तप से ऊंचा उठता है परन्तु फिर संन्यासी बनकर अपने आप को मानव समाज रूप समुद्र में मिला देता है, उसे ऋ० ६. ६६. १६ मंत्र में "गोविन्दुर्द्रप्स" कहा है। बस, यह आर्द्रता की पराकाष्ठा है कि संन्यासी होकर अपने आप को द्यौ से गिराकर मिट्टी में मिला दे, ब्राह्मण बरसे तो वाणी की खेती लहलहाए, क्षत्रिय बरसे तो रुधिर, मांस हड्डी की खाद देकर धरती की प्रजा की रक्षा करे, वैश्य होकर बरसे तो धरती माता अन्न दे' गोदुग्ध दे।

यह है "गोविन्दुर्द्रप्स" अथवा Cow-creating drops.

अब कहिये कि इन सब प्रमाणों को जानने के पश्चात् कोई कैसे कह सकता है कि वैदिक सोमरस एक Intoxicating juice है।

इसलिए 'पवमानः' का अर्थ पूयमानः करना कोरा अन्याय है। इसी प्रकार यजुर्वेद २६वां अध्याय १५वां मंत्र इस प्रकार है—

"उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।"

यहां मंत्र में विप्र शब्द स्पष्ट पड़ा हुआ है। मंत्र का अर्थ है पर्वत की तलहटियों में और नदियों के संगम में बुद्धि के गर्भ से ब्राह्मण का जन्म होता है। इसलिए यों कहा है "अरण्यगुहापुलिनादिषु . योगाभ्यासोपदेशः" परन्तु महीधरादि भाष्यकारों ने यहां विचित्र लीला की है। पर्वतों की तलहटी में और नदियों के संगम में विप्र अर्थात् सोम का पौधा यह सोचकर पैदा हुआ कि मैं यहां पैदा हो जाऊं त ब्राह्मण मेरे द्वारा यज्ञ करेंगे। यहां विप्र का अर्थ सोम का बूटा कैसे हुआ। फिर उस बूटे को भगवान् ने पैदा किया अथवा वह स्वयं विचार कर पैदा हुआ? बलिहारी है इस बुद्धि की।

अब जहां कहीं 'अन्नं सोमः।"

"रेतो वै सोमः" आदि अनेक प्रकार के अर्थ सोम के दिये हों, वहां वह मनुष्य शरीर, पृथवी की मिट्टी आदि किसी वस्तु का सुखदायक सार होगा।

जहां इन्द्र सोम पीकर वृत्र से लड़ता है, वहां राष्ट्र के सवन से उत्पन्न धन से भरा राष्ट्र कोष राजा को प्रदान करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो उस राष्ट्र के धन को पाकर दुर्मद में आ जाता है, वह सुरापान करता है, सोमपान नहीं। अंग्रेजी राज्य में विदेशी भारत विनाशपरायण दुष्ट शासकों की दी हुई लक्ष्मी रूप सुरा का पान करके उन्मत्त होकर जिन दुष्टों ने यह प्रलाप किया है कि सोम मादक पदार्थ है, वे सुनलें—

सत्यं यशः श्रीर्ज्योतिः सोमः।
अनृतं पाप्मा तमः सुरा॥

सोम सत्य है, यश है, श्री है, ज्योति है। इसके विपरीत सुरा अनृत है, पाप है, अन्धकार है।

हे प्रभो! इनका नशा कब उतरेगा? आशा है कि अब तो इनका मद उतरेगा नहीं, तो सत्य को जानकर प्रजा इनका मद उतारेगी। □

क्या आपको योग्य और संस्कारवान् वर-वधु की तलाश है?

यदि हां तो जन—ज्ञान (मासिक) में विज्ञापन दीजिए

जन-ज्ञान मासिक देश-विदेश के एक लाख से भी अधिक धर्मपरायण व संस्कारवान् लोगों से आपको मिलवायेगा। उन तक आपकी बात पहुंचायेगा।

केवल २१ रु० की दक्षिणा के साथ अपना विज्ञापन लिख भेजिये और फिर देखिये सही वर-वधु की आपकी तलाश कितनी जल्दी पूरी होती है।

विज्ञापन व्यवस्थापक जन-ज्ञान (मासिक)
१५९७, हरध्यानसिंह रोड करौल बाग, नई दिल्ली-५

वधू की आवश्यकता

एक २१ वर्षीय सुन्दर स्वस्थ गौर वर्ण, कद ५ फुट ४ इंच, जम्मू निवासी अविवाहित, डिफेंस डिपार्टमैंट में सर्विस आय रु० १५००/– मासिक पूर्ण शाकाहारी आर्य परिवार, माता पिता जीवित, पारवारिक बोझ से सर्वथा स्वतंत्र, आर्य युवक के लिए योग्य वधू चाहिए। पत्र व्यवहार सर्वथा गोपनीय पत्र व्यवहार या सम्पर्क का पता—मन्त्री आर्य समाज, चूना मंडी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली—११००५५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारीशस में कथा का युग

—राजमन राधाकृष्ण

सर्व प्रथम १८१९ में या अंग्रेजों की मारीशस युद्ध में विजय होने के ९ साल बाद जब अभी प्रथम अंग्रेज राज्यपाल ही शासन कर हे थे, बंगाल के कुछ कैदी मारीशस भेजे गये। इन की सेवा अविस्मरणीय ही। इन्होंने सर्वत्र पक्के मार्ग बनाये।

तत्पश्चात् १८३४ में भारतीय श्रमिक आने लगे। यह द्वीप एक घना ंगल था। भारतीयों ने ही जंगल काटकर उसे एक लहलहाते बाग में परि-र्तित कर दिया। वे यहां के गुलामों के वंशजों की तरह गोरों का धर्म व ाषा अपनाने को तैयार हुए। उनके बीच पढ़े-लिखे लोग कम थे, फिर भी अपने धर्म का ज्ञान रखते थे, यह ज्ञान काम आया। वे कुटिया में रहकर ो संतोष लाभ करते थे।

भारतीय नारियां गोरों के महल में रहकर कृत्रिम सुख पाने में गौरव नुभव नहीं करती थी। सीताजी का आदर्श उनके सामने था, जिन्होंने रावण महल को नापसन्द किया।

विगत शती के मध्य में अपनी झोंपड़ी ही के समान मजदूर लोग बैठका ा निर्माण करने लगे, जो घास-फूस की थी। भारत में जो कुछ सुनते थे, ह याद आता था। लड़कों को राम, भरत आदि नाम दिये जाते थे और ड़कियों को सीता, कौशल्या आदि।

पूजा हुआ करती थी, आल्हा खण्ड खूब गाया जाता था। इस तरह धर्म ा प्रचार होता था और मध्यकालीन भारत के इतिहास को भुलाया नहीं ाता था।

दो-तीन दशकों के बाद कुछ भारतीय ईसाई होने लगे। मजदूर विचलित ाने लगे। उन्हें ज्ञात हुआ कि भारतीय भाषा पढ़ाने का बहाना बनाकर न्दी आदि भारतीय भाषाओं में रूपान्तरित बाइबल की कहानियाँ छात्रों ा पढ़ायी जाती थीं। श्रमिकों ने बच्चों को सरकारी स्कूल में भेजना खतर-ाक समझा। बैठका में ही लड़के-लड़कियों को मातृभाषा पढ़ाने का आयो-न किया जाने लगा।

भारतीय २३ ही वर्ष व्यतीत कर पाये थे, जब भारत में देशभक्तों ने ातन्त्र्य युद्ध करके अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने की कोशिश की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय मजदूर बम्बई या कलकत्ता आते थे। जहाज पर चढ़ने पहले वे कभी-कभी सुनते थे कि एक नया ग्रन्थ छपा है। वे उसे खरीद मारीशस ले आते थे। एक ने नया ग्रन्थ अर्थात् सत्यार्थ-प्रकाश अपने को दिया। युवा पीढ़ी के लोग इसे पढ़कर बहस करने लगे। में से तीन संगीतरत्न प्रकाश के गानों को गा-गा कर लोगों को सोते जगाया करते थे।

एक का नाम शंकर था, दूसरे का वासुदेव और तीसरे का जगनन्दन।

सत्यार्थ-प्रकाश के आने से पहले सब भारतीयों का ईसाईकरण (उन्नी वीं शती के अन्त में और वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में) हो जाता, १८५७ के पश्चात् लोग जगदीशपुर के वयोवृद्ध कुंवर सिंह की सेना युद्ध करके पकड़े जाने के समय यहां बड़ी संख्या में न आते।

बंगाल के सैनिकों ने कैदी बनकर देश को पक्के मार्ग दिये, ताकि से लदी बैल गाड़ियां ईख के खेत से शक्कर के कारखाने में जल्दी पहुंच पा विहार के सैनिकों ने अपने को पांच साल के लिए बन्धन में डाला मजदूर का काम किया।

विहारियों के लिए मारीशस अंडमान न था तो क्या था? शोध करने वालों से यह बात छिपी नहीं है कि अंडमान में भेजे गये भारत क्रान्तिकारियों को कोड़ों की मार पड़ती थी। प्रेमचन्द ने अपनी मारी विषयक कहानी में यही बताया है कि यहां के भारतीय मजदूरों को से मारा जाता था।

एक समय में कैदियों में से जहां ७,८२० पुरुष थे वहां ८८५ महिल थीं। इसी प्रकार की समस्या मारीशस में थी। शासकों का इरादा अ न था। वे भारतीयों को बाध्य करके ईसाई नारियों से विवाह करने तुले थे।

भारतीय मजदूरों की यहां वही दयनीय दशा रही, जो फ्रेन्च मारी में दासों की थी।

भारतीय मजदूरों के साथ दुर्व्यवहार

जब एक मजदूर पर मामला चलाया जाता था, वह येन केन प्रका न्यायालय में उपस्थित होता था। न्यायाधीश उस दिन उस मामले को ले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मजदूर को फिर कभी आने को कहता था ! वर्त्तमान शती के चतुर्थ दशक में एक प्रवासी भारतीय के साथ ऐसा ही दुर्व्यवहार किया जाता था। ये मजदूर किसी भी मूल्य पर अपने धर्म को तिलांजलि देने को तैयार न हुए। जो लोग हताश होने लगे थे, उन में बिहारियों ने जीवन संचारित किया। जो विदेशियों से लोहा ले रहे थे वे विदेशियों का धर्म, संस्कृति, प्रथा, भाषा आदि क्यों अपनाते ? उनकी देखा-देखी अन्य भारतीय अपने धर्म को रक्षा करने लगे। बिहारियों की सख्या में तत्काल वृद्धि हुई, जिस से सब कोई भोजपुरी बोलने लगे। चीनी लोग ग्रामों में दुकानें खोल चुके थे। वे छः मास में भोजपुरी बोलने लगे। मौका नाम के प्रान्त में जो बड़े धनकुबेर थे वे गोरे थे। इस डर के मारे कि कहीं मजदूर क्रांति न करें कभी-कभी धोती धारण करके बैठका में पधारते थे और भोजपुरी का प्रयोग करते थे। फ्रेंच में ऋग्वेद का उल्था हो गया था। उन्होंने उसकी एक प्रति अपने निजी पुस्तकालय के लिए मंगायी। उसे पढ़कर जो कुछ उनकी समझ में आया, वे उसे लोगों को सुनाते रहे। वह अनुवाद सायण भाष्य के अनुकूल था, अतः गोरों को अनेक कहानियां सुनाने का अवसर मिला।

१८६० में यानी जिस साल दयानन्द सरस्वती मथुरा पहुंचे, यहां भारतीयों का बहुमत हो गया। भोजपुरी भाषियों ने १८६७ में प्रथम शिवालय बनाया।

इससे पूर्व होली धूमधाम से मनाई जाती थी। गोरों को दीखा कि जवान भारतीय साल में एक ही दिन सही, एक प्रकार से स्वतन्त्र हो जाते हैं जब सब को एक रंग में रंग दिया करते हैं। एक दिन इनमें संघशक्ति आ सकती है।

अब होली के साथ-साथ और पर्व मनाये जाने लगे। पूजा और पर्व ने चिरकाल तक यहां जनसंख्या के भारतीय तत्त्व को जीवित रखा।

बंगाली भाषी हिन्दी पत्र का सम्पादन करने लगे। मराठे हिन्दी पाठ्य पुस्तक लिखने लगे, जिसे तमिल भाषी प्रकाशित करवाने लगे। आर्यसमाज के आगमन से हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल हुआ।

इने-गिने लोगों ने ही सत्यार्थ-प्रकाश को विगत शती के अन्त में देखा था। इस ग्रंथ की दूसरी प्रति मारीशस के मध्य वाक्या में एक सैनिक के पास थी। सहयोगवश समाज के कर्मठ उपदेशक डा० भारद्वाज ने वाक्या को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। वहीं आर्यसमाज एक स्कूल चलाने लगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्तमान शती के प्रारम्भ में वेद की ओर देश का ध्यान धर्मप्रचार के कारण नहीं, एक भारतीय के कारण खिचा। उसका नाम हिमालय था। उस ने एक चूल्हा निर्मित किया, जो सूर्य के ताप से काम करता था। ऐसी बात आजकल लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रही है, क्योंकि तेल का दाम चढ़ता जा रहा है। आविष्कारक कोई वैज्ञानिक तो न था। वेद में निहित ज्ञान ने समय-समय पर विश्व को चकित किया था। इस भारतीय के पूर्वज भारत-वासी थे। ये स्वयं न जान पाए कि अचानक उनमें ऐसा आविष्कार करने की शक्ति कहां से आई ?

भारतीयों का कार्य कौशल १७३५ से ही प्रशंसनीय रहा। फ्रेंचों का राज्यकाल था। दक्षिण भारत से कुछ भारतीय मंगाये गये, जिन्होंने तत्कालीन राज्यपाल लाबुरदोने को प्रसन्न किया—जब राजधानी के पांतस्थल बनाने में मददगार हुए। हब्शी उनके अधीन काम करते थे। उन भारतीयों ने एक अति सुन्दर अलमारी बनाई, जिसका चित्र प्रो० विष्णुदयाल के ग्रन्थ "दी ट्रुथ एबाउट मारीशस" में पाया जाता है।

कथाओं का आयोजन

१७३५ से लेकर १९०५ तक कहीं पर भारतीयों ने कथा का आयोजन न किया था। रोजिल नामक नगर में पहली कथा चिकुरी नामक भारतीय के गृह पर पं० रामटहल ने सुनाई। उससे दो ही साल पहले मोटर गाड़ी आयी थी। लोग रेलगाड़ी से उस कथा को सुनने के लिए रोजिल आए हुए थे। बस, कथा का आयोजन होने लगा। पहले-पहल वाल्मीकीय रामायण की कथा होती थी। इस शती के द्वितीय दशक में गीता की कथा होने लगी। कुछ आर्यों के पास उपनिषद् आ गई थी। कभी-कभी आर्योपदेशक कठोपनिषद् की कथा सुना दिया करते थे। जब समाचार मिला कि फ्रांस में ६ उपनिषदों का फ्रेंच में रूपान्तर हो गया है, तब कुछ गुजरातियों ने उसे मंगा कर लोगों के बीच बांटा। पाठक खुशी से फ्रेंच उपनिषदों का संग्रह ले तो लिया करते थे, किन्तु किसी भी उपनिषद् को समझ नहीं पाते थे।

इस शती के द्वितीय दशक में हनुता नामक भारतीय राजस्थान से आये, जिनका विवाह एक बंगालिन से हुआ। वे ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका की प्रति ले आए। पढ़ कर उसे लोग समझ नहीं पाते थे। हनुता का जब देहान्त हुआ, वे १०४ वर्ष की अवस्था के हो गए थे।

रामायण में राजा, रानी, राजकुमार तथा राजकुमारी की कथा है, इसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए वह समझ में आ जाया करती थी। बंगला भाषा में न केवल रामायण पढ़ी जाती थी अपितु महाभारत भी पढ़ा जाता था।

विष्णुदयाल जी किशोर थे। वे और उनके दो भाई सुग्रीव जी तथा सुखदेव जी अपनी मातामही से महाभारत की कथा सुनते रहे। वे वृद्धा बंगाली महाभारत पढ़ कर भोजपुरी में कथा सुनाती थीं। भोजपुरी का बोल-बाला हो गया था।

इन किशोरों को और कुछ जानने की लालसा हुई। तब तक वे युवक बनकर सरकारी स्कूल में अध्यापन करने लगे। एक दिन उन्होंने एक आर्य पुस्तक विक्रेता के पास अंग्रेजी में अनूदित सत्यार्थ-प्रकाश पाया, जिसे उन्होंने खरीद लिया। उन्हें अंग्रेजी में रचित ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र भी मिला, जो पं० लेखराम द्वारा उर्दू में रचित जीवन चरित्र पर आधारित था।

तीनों के नेत्र खुल गए। रह-रह कर वे सत्यार्थ-प्रकाश का फ्रेंच उल्था पाना चाहते थे। १९१९ से पूर्व डा० भारद्वाज ने आर्य परोपकारिणी सभा की नींव रखी थी, जिसके मन्त्री स्व० माधोलाल हरवंश थे। वे फ्रेंच खूब बोला करते थे। उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश के एक समुल्लास का फ्रेंच में भाषान्तर किया था। विष्णुदयाल बन्धु ने शेष ग्रन्थ का भाषान्तर करने का संकल्प लिया, क्योंकि जो महामारी १९१९ में आयी थी उसका हरवंश जी शिकार हो गए थे। बड़े भाई सुग्रीव ने अन्तिम समुल्लास का अनुवाद किया और प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल ने प्रथम का। दोनों अपनी कृति से असन्तुष्ट थे।

इतने में उच्च शिक्षा पाने के लिए १९३३ में वासुदेव लाहौर के लिए रवाना हुए। उन्होंने सुना कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ५०००) फ्रेंच सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाशन के लिए एकत्र कर चुके थे। स्वामी जी ही भारत में अनुवाद कराने का विचार कर रहे थे। वासुदेव छात्र थे, अतः स्वामी जी ने उनसे कहा कि तुम्हारी पढ़ाई में बाधा होगी। हां, कोई अनुवादक खोज सकते हो।

पढ़ाई समाप्त कर के प्रो० विष्णुदयाल स्वदेश लौटे। अभी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और उपनिषद् का स्वागत करने का समय न आया था।

गुरुकुल के योग्य स्नातक श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपना प्रबन्ध फ्रांस में पेश किया। वे डाक्टर बनाए गए। वे श्रीमती लिवज मोरे से मिले, जिन्होंने सहर्ष सत्यार्थ-प्रकाश को फ्रेंच का जामा पहनाया। विश्व युद्ध के दिनों में फ्रेंच सत्यार्थ प्रकाश की थोड़ी ही प्रतियां मंगाई जा सकीं। पुस्तक का एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज संस्करण भी छपा था। तीस वर्षों की लम्बी अवधि में पुस्तक बिकी। जब आर्यसमाज की स्थापना शती मनाई जा रही थी, आर्य सभा ने द्वितीय संस्करण यहीं प्रकाशित करवाया जिसकी प्रस्तावना प्रो० विष्णुदयाल ने लिखी। दूसरा संस्करण हाथों हाथ बिक गया।

१९७३ में द्वादश आर्य सम्मेलन का यहीं आयोजन हुआ था। कई आर्य पुस्तक विक्रेता उस अवसर पर पधारे थे। प्रत्येक शिक्षित मारीशसीय ने नई पुस्तकें खरीदीं। कुछ लोग ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पढ़ कर उसे समझने भी लगे। किसी स्थल पर अटक जाते थे तो पं० घासीराम द्वारा उस का अंग्रेजी में किया गया अनुवाद देख लेते थे।

जनता को गीता की कथा सुन कर नियमित रूप से उपनिषत्कथा सुनने की प्रबल इच्छा हुई। मध्य मारीशस के एक ग्राम में गीता की कथा हो रही थी। ८-९ अध्यायों को समझा दिया गया था, जब कथावाचक ने कहा कि वेद कथायें और किसी कथावाचक से करवाई जाएं। प्रो० विष्णुदयाल ने कार्य पूरा कर दिया और लोगों में उपनिषत्कथा सुनने की अभिरुचि उत्पन्न कर दी।

आस-पास के ग्रामों में दो बार उपनिषत्कथा हुई।

बहुत पहले उन्होंने किसी समीपस्थ ग्राम में एक-दो कथायें सुना दी थीं और ग्राम के नाम का भारतीयकरण करके उसे "ऋषि नगर" नाम दिया था। स्व० महात्मा आनन्द स्वामी ने यह नाम सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की (जब वे पहली बार हमारे देश में पधारे थे)। उन्होंने प्रो० विष्णुदयाल के लेखों के संग्रह की भूमिका भी लिखी। वे मारीशस को इतना पसन्द करते थे कि उन्होंने अपनी भूमिका के अन्त में लिखा—"यदि मुझे अगला जन्म मिलना है तो मारीशस में मिले।"

मारीशस के उत्थान और कल्याण की जो रूप रेखा दिखाई देती है, उस में जहां आर्यसमाज के सेवकों का प्रयत्न है वहां आचार्य श्री पं० विष्णुदयाल जी के तप, त्याग और योग्यता का भारी भाग है। इस पवित्र कार्य के लिए उन्हें कितनी बार जेल यात्रा करनी पड़ी। कितनी ही पुस्तकें फ्रेंच, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि में लिखनी पड़ीं और निरन्तर कितने ही भाषण देने पड़े। इस पुस्तक (इस संग्रह) "विष्णुदयाल लेखावली" का हृदय वैदिक विचारों से ओतप्रोत है। उनकी लेखनी में जीवन है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज पंजाब में फला-फूला । वहां हिन्दी का प्रचार करने का श्रेय आर्यसमाज को है । यहां की हिन्दी उसी तरह सरल है जिस तरह प्रवास की हिन्दी होती है । गाने समझ में न आते तो लघु द्वीप मारीशस में सवा लाख आर्यसमाजी न होते ।

अब इस टापू में वेद व्याख्याता हैं । सचमुच प्रगति हुई है । उपनिषद् के ज्ञान से लोगों को देश भर में परिचित करके इस प्रोफेसर ने समझाया कि उपनिषत् कथा साधारण कथा-गीता की कथा नहीं, न ही रामयण की कथा के समान हो जायेगी, यदि वेद की कथा का का आयोजन किया जाए ।

उन्होंने कहा कि मुण्डकोपनिषत् तथा श्वेताश्वतरोपनिषत् में वैदिक त्रैतवाद की चर्चा की गयी है । इससे हमें यही मालूम होता है कि उपनिषत् के ऋषि हमें कहते हैं कि वेदों की ओर जाओ या लौटो ।

श्वेताश्वतरोपनिषत् में 'अज' और 'अजा' की कथा पाकर पश्चिमीय संस्कृतज्ञ तथा उनके भारतीय मानस पुत्र कहने लगे कि यह बकरे और बकरी की कथा है । अज परमात्मा के लिए है जो न जन्मते और मरते हैं । 'ज' का मतलब है जन्मा, अज का अर्थ हुआ जो न जन्मा । अज आत्मा के लिए भी है क्यों कि आत्मा भी न जन्मता है और न मरता है । एक 'अज' परमात्मा है । और अनेक 'अज' असंख्य आत्मा हैं । 'अजा' बकरी नहीं है । तीन रंग वाली बकरी का इस उपनिषत् में उल्लेख नहीं है । अज से मतलब है विविध रंग वाली प्रकृति, संस्कृत में दो के लिए बहुवचन का प्रयोग नहीं होता । दो एक से ज्यादा हैं तो सही पर उसे बहुत नहीं बताया जा सकता । कम से कम तीन के लिए बहुवचन है ।

दो के लिए तो द्विवचन है । जब तीन रंग बताये जाते हैं । तब मतलब होता है अनेक, बहुत रंग प्रकृति के तीन से भी अधिक रंग हैं ।

उक्त उपनिषत् अज और अजा का जहां उल्लेख करती है वहां पेड़ और दो पक्षियों की भी चर्चा करती है । जैसे वेद के विषय में उक्ति है कि वेद वेद को समझाता है ठीक वैसे ही इस विशेष प्रसंग में उपनिषत् उपनिएत् को समझा रही है ।

वाणी सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों ने जिनके न पिता थे, न माता ही थी, वेदों का ज्ञान मनुष्य की पहली पीढ़ी को दिया । श्रोता भी विना बाप और मां के थे ।

जब किसी की विवाह होता है और सन्तानोत्पत्ति होने लगती है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह पवित्रता जन्मे हुओं में नहीं रहती, जो पहली पीढ़ी के मानव में है
है। विवाहित लोगों में थोड़ा या अधिक मात्रा में विकार हो ही जाता है
सभ्यता ने मानव को पतित किया। १८ वीं सदी के फ्रांस में जब नाटक
जाने लगे और मंचन होने लगा, नैतिक पतन इतना हुआ कि बाप बेटी
साथ नाटक गृह में ठहर नहीं सकते थे और न ही भाई बहन के साथ।

आरम्भ में ग्रन्थ पवित्र थे वेदों के साथ उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, मा
धर्म शास्त्र तथा गीता पढ़ कर हम अपने को उठाते हैं। जो ग्रन्थ वेदों के
रचे गये, वे फिर भी कुछ कमजोर हुए। उपनिषदे वेद के समान नहीं हैं
गीता उपनिषदों के समान होने का दावा न ही कर सकती।

परमात्मा पवित्र है। उन का ज्ञान पवित्रात्माओं को प्राप्त हुआ। ज्ञा
पाने वाले ४ ऋषियों के शिष्य या ऋग्वेद की भाषा में नूतन ऋषि
पवित्र ही थे। वस्तु स्वच्छ निर्मल और शुद्ध थी। उसे निर्मल पवित्र पात्र
रखा गया है।

जब दूसरी पीढ़ी के लोग विवाह करने लगे कुछ-कुछ विकार आया। इ
कारण है कि वेदों को छोड़ कर किसी भी ग्रन्थ में वह शक्ति नहीं आ सक
जो सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में पायी जाती है। एकमात्र
ईश्वरोक्त है और हो सकते हैं।

सृष्टि का प्रारम्भ

हमारे देशवासी वेद की कथा के बीच समझाते हैं कि एक संस्थान
संचालक ने यह विचार व्यक्त किया है कि सृष्टि के प्रारम्भ में एक प्रक
का 'सूप' या तरल पदार्थ बनता है, तब मानव और दूसरे प्राणियों में प
वर्तित होता है। ये जीव न बहुत छोटे होते हैं न बहुत बड़े (जैसा सत्य
प्रकाश में बताया गया है)। ये युवा होते हैं। उस विद्वान् का नाम
आलेक्सान्द्र ओपारिन जिसने १९२४ में या महर्षि दयानन्द के जन्म के ठी
१०० साल बाद यह मत व्यक्त किया।

जब भारत से श्रमिक यहां आने लगे उन्होंने कभी-कभी आत्मह
करने का विचार किया था। कुछ समय रहकर उन्होंने यह विचार त्य
दिया। तब तो वेद ने जो आज्ञा दी वह हमारे कल्याण ही के लिए है। अ
वेद का यह मंत्र है —

"पश्य देवस्य काव्यम्
—ईश्वर का काव्य देख"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यजुर्वेद में ईश्वर के विषय में ही कहा गया है कि वे कवि और मनीषी हैं। यहां इस बात को पुनः कहा गया है कि वे कवि हैं।

मारीशस को अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन ने देखा था। वे विगत शती के अन्त में इधर भी आये थे और भारत भी पधारे थे।

आशा है कि कोई न्याय करना चाहेगा तो यहां कुछ मास व्यतीत करके अद्भुत सौन्दर्य को देख पायेगा और इतिहासकार टॉयनबी की भांति अपने जीवन के संध्या काल में, धर्म और ईश्वर में आस्था रखने लगेगा भारत सरकार द्वारा जो अर्द्ध मासिक पत्र निकलता है उसमें डी० आंजनेयलू ने तारीख १—१४ जुलाई १९८१ को लिखा है—

I Toyonbee gave the impression towards the closiug years of his life of turning his attentionts God and rligion in its broadest sense.

पोर्ट लुई में कोई कुछ ही दिन ठहर कर भारत में जो श्रेष्ठ जन बता रहे हैं उसकी सत्यता में सन्देह न करेगा। कहा यह ही जाता है कि हम एक विशाल मैदान के सामने खड़े हों या समुद्र के तट पर खड़े होकर विशाल समुद्र देखें तो जो अनन्त है उसका ख्याल अवश्य आयेगा और शान्ति उपलब्ध हुए बिना न रहेगी।

वेदों में से जो लघुतम है अर्थात् राम नाम से जाना जाता है, वह गाया जाता है। मधुर ध्वनि का कैसा प्रभाव होता है, यह अभी-अभी देखने में आया। आइन्स्टाइन ने वायलिन बजाने वाले येहुदी मेनुहिन को यह वाद्ययन्त्र बजाते पाया था। उन्होंने उसे गला लगाया और कहा, "जब तू मधुर ध्वनि प्रसारित कर रहा था, ईश्वर के दर्शन हो रहे थे।"

कान भी हमें इसीलिए दिए गए हैं कि हम कभी मधुर ध्वनि से मुग्ध होकर कह उठें कि ईश्वर है।

कथा वाचक का मत है कि वेद सच्चे विज्ञान वेत्ता को क्रुद्ध नहीं करता। भारत ने स्वीकारा है कि आर्य भट की योग्यता का ज्ञान पाने से लोग प्राचीन भारत की प्रशंसा करेंगे। क्योंकि वेदों से सहायता लेकर तलपदे नामक भारतीय ने एक विमान का निर्माण १८६५ में किया था। उस बेचारे का नाम लेना मुश्किल हो गया है। संस्कृत विभाग राजस्थान विश्व विद्यालय के श्री त्रिपाठी ने एक चिट्ठी लिखी थी जो दिनांक १३.१०.६४ ई० के "धर्म-युग" में छपी थी। उसका एक अंश निम्न प्रकार है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् १८६५ में चीरा बाजार, हुक्कड़वाड़ी, बम्बई निवासी श्री तलपदे ने वैदिक मंत्रों के आधार पर तैयार किए गये अपने विमान में चौपाटी १५०० फीट तक उड़ान भरी थी। इस विमान का नाम भारद्वाजकृत अंशुबोधिनी के एक श्लोक के अन्तिम शब्द के आधार पर 'मरुत्सखा' रखा गया था।

इस विमान की उड़ान के प्रदर्शन के समय विद्यमान दर्शकों में सर्वश्री सयाजीराव गायकवाड़, महादेव गोविन्द रानाडे और सेठ लाल जी नारायण आदि सम्भ्रान्त व्यक्ति थे। फिर इस विषय में संशय का प्रश्न नहीं उठता।

श्री तलपदे को विमान का प्रथम आविष्कारक स्वीकार किया जाना चाहिए। प्रथम उड़ान का श्रेय यदि कोई राइट बन्धुओं को देना चाहे तो दे सकता है पर विमान आविष्कारक के रूप में श्री तलपदे को अन्तरराष्ट्रीय ख्याति मिलनी ही चाहिए।

टॉयनबी को लगा कि २१वीं सदी में धर्म प्रिय होगा और वह धर्म भारतीय धर्म होगा। उन्होंने समझा होगा कि यह विज्ञान से टकराता नहीं है।

भारतीय धम के प्रारम्भिक काल में वेदों को उच्च स्थान दिया जाता था। जिस अथर्ववेद को पश्चिमीयों ने निकृष्ट बताया उसी पर आयुर्वेद आधारित है। वैद्यक को अरब लोग भारत से पश्चिम में ले गये थे। वे अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करते हुए भारतीय ज्ञान को "हिंदसा" कहा करते थे।

आज से दो-तीन दशक पूर्व मारीशसीय कृषि समिति के भूतपूर्व प्रधान स्व० मेग्रो ने अरब पर लिखते हुए वेद के एक मन्त्र का फ्रेंच अनुवाद दिया था। तब प्रवचनों के बीच कुछ मंत्रों की व्याख्या की जाने लगी थी। तभी से लोगों को विश्वास हो गया था कि वेद कथा कभी न कभी होगी।

इस कथा के लिए मार्ग प्रशस्त करना पड़ा था। गीता की कथा के साथ रामायण की कथी सुनायी जाती थी।

कथा वाचक श्यामपट्ट का उपयोगी करते थे। वे श्रोताओं को संस्कृत से परिचित कराते थे।

अब यह बताकर कि चार वेदों में से दो भीमकाय हैं, श्रोताओं के मनोरंजन के लिए कहते हैं एक मोटे वेद के आरम्भ में जो मंत्र है अर्थात् अग्निमोड़े आदि उस में वर्णमाला है। लोग पढ़ने लग जाते हैं तब मन्त्र उच्चारित करने लगते हैं। मन्त्र और श्लोक कहां-कहां हैं। यह बताते हुए कहते हैं कि जब गीता या वाल्मीकीय रामायण की कथा होती है तब श्लोक पढ़े जाते हैं। और जब वेद की कथा सुनायी जाती है तब मन्त्र। इतना जोड़ दिया जाता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि 'श्लोक' शब्द ऋग्वेद में आता है। तब वह मन्त्र सुनाया जाता है जो इस प्रकार है—

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततनः

वेद के मन्त्र (श्लोक) अपने मुंह में भर। मेघों की तरह वर्षा कर श्रोता झूमते हैं। वे वर्तमान काल में क्या हो रहा है, इसका वर्णन करते हैं और कहते हैं, शरीर जब गर्मी को सह नहीं पाता, शरीरधारी मनुष्य ऊपर देखता है, जब काले-काले बादल मंडराते दिखाई देते हैं। आशा बंध जाती है कि कि अब गर्मी दूर होगी।

इसी भांति तरह-तरह के झगड़ों से परेशान विश्व वेद मन्त्रों को मेघ की तरह देख-देख कर आशा कर लेगा कि शान्ति स्थापित होगी।

आये दिन कई मारीशसीय विदेश जाकर स्नातक बनते रहे। यहां एम. ए. और एम. एस. सी. की भरमार है, अतः कथा वाचक पं. भीमसेन विद्यालंकार इस वेद के प्रथम मन्त्र को वहीं लेकर कथा में सुनाते हैं। ये मारीशसीय छात्र थे। जब व्याख्या की, पण्डित जी से लाहौर में मिलते थे। पं० भीमसेन जी के अपने शब्द हैं—

शिष्य सर्व विद्यासम्पन्न आचार्य के समीप जिज्ञासा से उपस्थित हुआ है। इसका वर्णन बहुत सुन्दर शब्दों में किया गया है—

"ओं ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥१॥ जिज्ञासु शिष्य संसार के समस्त पदार्थों से वास्तविक स्वरूप को जानने की अभिलाषा से सकल विद्या पारंगत वाणी के स्वामी के पास समित्पाणि होकर गुरु के द्वार को खटखटाता है और प्रार्थना करता है कि यह समस्त जगत् नाना रूपों को धारण कर रहा है—इन २१ तत्त्वों के बलों को मुझे बतलाइये।

जिज्ञासु शिष्य श्रद्धास्पद वाचस्पति का, जिसके नाम से ही ज्ञान का सागर होना ज्ञात होता है, हृदय से आह्वान करता है—

ओं पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते निरमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम् ॥२॥

शिष्य ने गुरु के साथ शारीरिक सम्बन्ध तो गुरुकुल में प्रवेश के साथ ही स्थापित कर लिया। अब मानसिक सम्बन्ध की स्थापना के लिए शिष्य आचार्य का मानसिक आह्वान एवं आराधना किन मधुर एवं आकर्षक शब्दों में करता है। वह मन के साथ मुझे पुनः प्राप्त हूजिए। मैं आप के बिना इस अविद्या के सागर में गोते लगा रहा हूं। आज्ञा भाव से इन उपयुक्त २१ तत्त्वों के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ मैं इन का दुरुपयोग कर बैठता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। अतः आप कृपा करके ज्ञान ज्योति से दीप्त मन के साथ मुझे छूजिए। आप वसु ब्रह्मचारियों के धनी हैं। आप मुझे इस ज्ञान में रमण कराइये। मैं आप की प्रत्येक श्रुति को हृदय में स्थान दूंगा और अपना लूंगा।

वर्तमान शती के द्वितीय दशक में लाहौर से एक धर्मोपदेशक यहां पधारे हुए थे। वे हमारे मध्य में छः वर्ष रहे पर हम पर किसी प्रकार का भार बन कर नहीं। समुद्री यात्रा होती थी और वे अपने साथ कुछ ग्रन्थ ले आये जिनमें पं० आर्यमुनि तथा पं० राजाराम के अनेक ग्रन्थ थे। वे समय सब ग्रन्थ यहीं छोड़ गये थे। जब कभी उनका प्रवचन होता था, अथर्ववेद के मन्त्र ही उच्चारित करते थे। टेक की तरह प्रत्येक मन्त्र के में 'तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः' आता था—श्रोताओं कोत भी सूझ गया था अथर्व वेद अन्य तीन वेदों ही की भांति अस्तिकों का वेद है। उसके आरम्भ भी परात्मा का नाम आता है। वह परमात्मा को ज्येष्ठ कह कर पुकारते हैं। उसमें भूत पूजा का वर्णन कैसे हो सकता है, जैसे कुछ लोग गलत समझते हैं। भारतोय साहित्य के इतिहास के छोटे-मोटे ग्रन्थ मिलते थे अंग्रेज या फ्रेंच संस्कृतज्ञ द्वारा रचित थे। सब एक स्वर से कहते थे यह पुस्तक लोगों के लिए है जिनका विश्वास है कि भगवान् ही की भांति शक्ति है, जिसे भूत कहा जा सकता है।

भूत पूजक तो न वैद्य से काम लेते हैं और न दवा से। सर्व विदित है आयुर्वेद सुनते ही अथर्व वेद का सहसा स्मरण हुआ करता है।

अथर्व वेद के मन्त्रों का घर-घर में और प्रायः उच्चारण होता है मित्र से हम भय न खावें, अमित्र या शत्रु से हम भय न खावें, यह सब जो हवन सम्पादित होता है, बोला जाता है। इस विषय में शंका हो सकती कि मित्र से डरने की जरूरत क्यों कर हो सकती है? जिन पंण्डितों ने स्वा दयानन्द के ग्रन्थों की प्रेस कापी तैयार की थी, उनमें से एक ही दो तो मि थे! जब मित्र कार्य करने वाले के मार्ग में वाधा उपस्थित करते हैं, उ मित्र कैसे बताया जाये? उनसे अच्छा तो पृथ्वी पर जितने स्थल मिलते दे अच्छे है। उच्चारित मन्त्र में यह भी आता हैं, "सब दिशायें—द दिशायें—मेरी मित्र बन जाएं।" दिशायें न बोलती हैं, न सुनती हैं। वे गूं हैं, फिर भी धोखा देने वाले मित्र से अच्छी हैं। मन्त्र का मतलब है कि ज सच्चा मनुष्य चले, वह उत्तर की की ओर जाये या दक्षिण की ओर, उ निश्चिन्त रहना चाहिए। वह निश्चिन्त रहता है, क्योंकि वह अजातशत्रु है

आज प्रत्येक विदेशी यहां कुछ दिन ठहर कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गते हैं। उनका कहना है कि मारीशस एक लघु संसार है। यहां विभिन्न र्म और सभ्यताएं तथा संस्कृतियां साथ रहती हैं।

तीस या चालीस साल पहले विदेशी इस मत के न थे। अनेक लोग रतीय संस्कृति पर पिल पड़ते थे। एक पादरी ने वाराणसी की यात्रा की । यहां आकर उन्होंने एक भाषण दिया, जिसमें भारतीयों को नीचा खाया गया था। तत्कालीन राज्यपाल भी उस भाषण को सुनने के लिए अपने हल से निकल आये थे।

शनैः-शनैः स्थिति बदली। प्रो० विष्णुदयाल ने विलायत और फ्रांस की त्रिकाओं के लिए अनेक लेख लिखे। उन्होंने प्रमाण दिये कि लोक कथाएं रत से यूरोप गयी हैं; जिन्हें पसन्द किया गया।

उन्होंने तत्पश्चात् ग्रन्थ रचे जो लन्दन और पेरिस में प्रकाशित हुए। में परीकथाओं का उल्लेख कर लेने के बाद यह बताया गया कि वेदों में जो न पाया जाता है, वह बार-बार पश्चिम में पहुंचा है।

इस मारीशसीय लेख को ज्ञात न था कि वह मारीशसीय जो अभारतीय यह बात पसन्द नहीं करते थे कि बार-बार दुनिया को कहा जाता है कि रत ने गुरु की भूमिका निभाई है।

कुछ वर्ष हुए एक ने पूछ डाला कि क्यों मौके-बे-मौके लिखा और ा जाता है कि भारत शिक्षक रहा है?

हमारे देशवासी के लेखों, भाषणों तथा पुस्तकों में यह छिपाया तो गया है कि भारत ने भी और देशों से थोड़ा-बहुत ज्ञान लिया तो है। की कृतियों के उन स्थलों का विस्मरण करके प्रश्नकर्त्ता चाहते हैं कि स्थित हो जो तब थी जब राज्यपाल पादरी के लेक्चर सुनते थे। □

ारत उनका जो भारत के; विदेशी पादरियों को देश से निकाला जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईशावास्योपनिषद् का हिन्दी पद्यानुवा

अनुवादक--राजदेव भारती, तासेश्वरन

ओ३म ईशावास्य मिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः मस्कंस्विद्धनम् ॥१॥
जो कुछ जगती में जगत्, यह सब ईशावास ।
त्याग बुद्धि से भोग कर, तज पर धन की आस ॥१॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥
जीना चह सौ वर्ष तक, कर शुभ कर्म महान् ।
लिप्त न हो नर कर्म ते, पथ न अन्यथा जान ॥२॥
असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः ।
तांस्ते प्रेत्यार्मिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥
आत्मा हन जन अन्धतम, लोक असुर्या नाम ।
मरने पर जाते वहाँ, पाते दुःख परिणाम ॥३॥
अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्दवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥४॥
वह अचल है एक है, मन से अधिक गतिमान् भी है ।
इन्द्रिय गमन से पूर्व ही, उसका वहां संस्थान भी है ।
है दौड़ में सब शक्तियों को, लांघ कर सुस्थित वही ।
है धारता निज शक्ति द्वारा, वायु को जल को वही ॥४॥
तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्या स्य बाह्यतः ॥५॥
वह चलता चलता नहीं, वहीं दूर वह पास ।
सबके भीतर है वही, सबके बाहर वास ॥५॥
यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न न विजुगुप्सते ॥६॥
आत्मा में सब भूत को जो देखे मतिमान् ।
आत्मा को सबमें, अतः करता पाप घृणा, न ॥६॥
यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ।।७।।
जब ज्ञानी के ज्ञान में हों सब आत्म समान ।
उस समदर्शी में कहां शोक मोह अभिमान ।।७।।
सर्पयगाच्छुक्रमकामव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः
वह सर्वव्यापक शुक्र, काया रहित व्रण से हीन है ।
नस और नाड़ी से रहित वह शुद्ध पाप विहीन है ।
सर्वज्ञ ज्ञानी व्याप्त सबमें है स्वयंभू भी वही ।
शाश्वत समय से सृष्टि को रचता यथावत् है वही ।।८।।
अन्धतमः प्रविशन्ति येऽविद्यासुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ।।९।।
सदा अविद्यारत पुरुष, कर तम अन्ध प्रवेश ।
विद्यारत उससे अधिक, पाते तम का देश ।।९।।
अन्यदेवाहु विद्यायाऽन्यदाहुरविद्याया ।
इति शुश्रुम धीराणां येनस्तद्विचचक्षिरे ।।१०।।
विद्या का फल और है, तथा अविद्या अन्य ।
यों धीरों का सुने हैं, वचन हमें वह मान्य ।।१०।।
विद्यांचविद्यां चायस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्ययामृत्युं तीर्त्वा विद्याऽम्मृतभश्नुते ।।११।।
विद्याऽविद्या साथ ही दोनों को तू जान ।
मृत्यु अविद्या से तरे, विद्या सेऽमृत पान ।।११।।
अन्धतमः प्रविशन्ति ये ऽसंभूतिमुपासते ।
ततो भूय इव ते तमोय उसं भूत्यां रताः ।।१२।।
असंभूति में जो निरत पाते तम को गूढ़ ।
पाते उससे अधिकतम वे सम्भूति विमूढ़ ।।१२।।
अन्यदेवाहुः संभवादन्यदाहुरसंभवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ।।१३।।
कहें अन्य सम्भूति फल, असम्भूतिफल अन्य ।
यह मति धीरों से सुनी, कहा उन्होंने धन्य ।।१३।।
संभूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।
विनाशेन मृत्यु तीर्त्वा संभूत्याऽमृतमश्नुते ।।१४।।
तू सम्भूति विनाश को, एक साथ ही जान ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तर विनाश से मृत्यु कर संभूत्याऽमृतपान ॥१४॥
हिरण्मयेन पात्रेणसत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपा वृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥
स्वर्णपात्र से सत्य का, आवृत मुख अनमोल ।
दर्शनार्थ मुख सत्य का, पूषन् ! तू पट खोल ॥१५॥
पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह ।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमंतत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ।१६।
पूषन्नेकर्षे ! सूर्य ! यम ! हे प्रजापति ! यह रश्नि तू
फैला रहा है प्रकृति में इस ज्योति को ले खींच तू ।
यह ज्योतिमय कल्याण तमं तव रूप को हूं जनता,
जो यह पुरुष मैं हूं वही श्रुतिवाक्य यह हूं मानता ॥१६।,
वायुरनिलममृतमथेदं भम्मान्त शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिवे स्मर कृतं स्मर ॥१७।
वायु अनिल यह अमर है, देह भस्म तक जान ।
सतत ओ३म् का स्मरण कर, किये कर्म का ध्यान ॥१७॥
अग्ने नय सुपथाराये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम ॥१८॥
अग्ने ! सुपथ से आत्म धन के हेतु हमको ले चलो ।
हो जानते सब कर्म को तुम देव ! तम हरते चलो ॥
कर दूर हमसे कुटिलता से भरे, सारे पाप को ।
नम उक्ति करता हूं अधिक तव जो हरे त्रय ताप को ॥१८॥ □

महात्मा वेद भिक्षु द्वारा स्थापित दयानन्द संस्थान महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार कर रहा है। उदारतापूर्वक दान दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालिद्वीप में हिन्दू संस्कृति

—विवेकशील

इण्डोनेशिया संसार का सबसे बड़ा द्वीपसमूह है। इसमें लगभग तीन सहस्र छोटे-बड़े द्वीप हैं जिनमें जावा (यवद्वीप) प्रमुख है। बालिद्वीप जावा के पूर्व में स्थित है तथा दो सहस्र वर्गमील के क्षेत्र में फैला है। चारों ओर समुद्र से घिरा बालि भारत और इण्डोनेशिया की सांझी हिन्दू संस्कृति को अनुपम धरोहर के रूप में संजोये है।

भारत व इण्डोनेशिया के सांस्कृतिक सम्बन्ध कब प्रारम्भ हुए, यह अनुमान लगाना कठिन है किन्तु जब से इतिहास ज्ञात है यह सम्बन्ध अविच्छिन्न दिखाई देते हैं। इण्डोनेशिया का प्राचीनतम शिलालेख विशुद्ध संस्कृत में बोर्नियो (कालिमन्थन) से प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख चौथी शताब्दी में महाराजा मूलवर्मन के काल में लिखा गया था। तभी से संस्कृत और संस्कृति का प्रवाह निरन्तर चलता रहा। पन्द्रहवीं शती में इस्लाम का प्रसार बढ़ जाने से यह क्रम टूट गया। उस समय जावाद्वीप में मजपहित वंश के राजा राज्य करते थे। १४७४ में अनेक राजकुमार सुरक्षित स्थान की खोज में बालि चले गये। बालि इण्डोनेशिया के हिन्दुओं का शरणस्थान, एक अजेय दुर्ग बन गया। यही कारण है कि इण्डोनेशिया की इस्लाम पूर्व की संस्कृति बालि में यथावत् सुरक्षित है।

जो लोग बालि आये वे अपने साथ अष्टादशपर्व (महाभारत) और रामायण भी लाये। इन महाकाव्यों के कथानकों के आधार पर साहित्य रचा गया। इण्डोनेशिया की साहित्यक भाषा 'कवि' कहलाती है। आठवीं शताब्दी ई० तक शिलालेख संस्कृत में तथा इसके पश्चात् कवि भाषा में प्राप्त हैं। कवि भाषा में प्रायः संस्कृत के ही शब्द हैं। इसकी लिपि भी ब्राह्मी से उद्भूत है। कवि में संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद और लिप्यन्तर प्रचुर मात्रा में ताड़पत्रों पर उपलब्ध हैं।

संस्कृत भाषा का प्राधान्य

एक वर्ष पूर्व बालि के एक संस्कृत विद्वान् श्री सिद्धार्थ भारत आये। उन्होंने भारत में रहकर संस्कृत में एम० ए० किया है। उस समय ये बालि से प्राप्त संस्कृत ग्रन्थों का सम्पादन कर रहे थे। सौभाग्यवश मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। यह ग्रन्थ संस्कृत पढ़ाने के उद्देश्य से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोलहवीं शताब्दी में लिखे गये थे। प्रथम ग्रन्थ संस्कृत ... सारस्वत की विशेषता है कि इसके माध्यम से सरलता से व्याकरण में प्रवेश किया जा सकता है। दूसरे इस ग्रन्थ में व्याकरण पर कवि भाषा टीका थी। संस्कृत भाषा में प्रयुक्त अलंकार और छन्दों पर भी ग्रन्थ थे। एक अन्य ग्रन्थ था ककाविन् जानकी। इसका अर्थ है जानकी काव्य ककाविन् जानकी में लगभग सौ संस्कृत श्लोक और उनकी कविभाषा व्याख्या थी। इन ग्रन्थों की एक विशेषता है कि सरस और सरल ढंग संस्कृत पढ़ाने के लिए यह बहुत उत्तम हैं।

बालि से प्राप्त संस्कृत और संस्कृत साहित्य पर आधारित कुछ ग्रन्थों के नाम है—यक्ष-युधिष्ठर संबाद, भारतयुद्ध, स्मरदहन, अर्जुनविवाह, सुतसोम, भुवनकोष आदि। इसी प्रकार के सैकड़ों ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जिनमें से अनेक का सम्पादन भी हो चुका है। बहुत-सा सम्पादन-कार्य भारत में हुआ है।

आज हमारा देश जहां सांस्कृतिक प्रदूषण का शिकार बन रहा है, वहीं बालिद्वीप जैसा लघु भूप्रदेश हिन्दू संस्कृति की गौरवशाली परम्परा को इस प्रकार सुरक्षित रखे हुए है कि प्रत्येक भारतीय के लिए वह प्रेरणा का स्रोत है। प्रस्तुत लेख में बालिद्वीप में हिन्दू संस्कृति के उसी भव्य स्वरूप का अंकन किया गया है

प्राचीन काल से ही इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, कम्पुचिया, जावा, मलेशिया, लाओस आदि देशों में संस्कृत के पठन-पाठन की परम्परा रही। इन देशों में संस्कृत के अध्ययन के लिए बड़े-बड़े विश्वविद्यालय चलते थे, जिनके पुस्तकालयों में अनन्त संस्कृत पुस्तकें व अनुवाद भरे पड़े थे। भी अनेक ऐसी पाण्डुलिपियां प्राप्त होती हैं जिनके मूल ग्रन्थ काल के चक्र में भारत से लुप्त हो चुके हैं। इण्डोनेशिया के एक विश्वविद्यालय का उल्लेख चीनी यात्री इत्सिंग के यात्रा-वृत्तान्त में उपलब्ध है। इत्सिंग मार्ग से भारत आये थे। भारत आने से पूर्व उन्होंने छः मास तक का अध्ययन इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप स्थित विश्वविद्यालय में किया। इत्सिंग को यह स्थान इतना अच्छा लगा कि अपनी यात्रा पूरी कर वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
बार फिर सुमात्रा आ गये और शेष जीवन में संस्कृत साहित्य का चीनी भाषा में अनुवाद करते रहे।

संस्कृत बालिद्वीप के जनजीवन में कितनी विद्यमान है इसकी कल्पना भी हम भारतीयों को नहीं हो पाती। ऐसे शब्द जो भारत में प्रायः अंग्रेजी भाषा में प्रयोग किये जाते हैं, बालि में संस्कृत से लिये गये हैं। कुछ उदाहरण देखिए—राष्ट्रपति-कपालनगर (अंग्रेजी के हेड आफ द स्टेट का अनुवाद) राजदूत के लिए दूत, प्रधानमंत्री के लिए प्रधानमंत्री ही, जिलाधीश के लिए भूपति नागरिक के लिए भूमि-पुत्र, अध्यक्ष -सूत्रधार, छात्रावास—आश्रम, नौ सेनाध्यक्ष को लक्ष्मण कहते हैं। इसी प्रकार गुरू, शिष्य, पुत्र, पुत्री आदि शब्द प्रचलित हैं।

लोगों के नाम प्रायः शुद्ध संस्कृत शब्दों में रखे जाते हैं यथा रत्ना, रति देवों, नीलकान्त, युद्धवर्णन, नारायण पुत्र, उदयन, फाल्गुन, आकाश पुत्र, सुकर्ण, सुव्रत, मंत्र आदि। पहले बालि की राजधानी सिंहराज थी। यहां एक पुस्तकालय का नाम है—'उद्यानज्ञान भुवन'।

जनजीवन में रामायण और महाभारत

भारत की भांति बालि में भी रामायण आदि काव्य तथा इसके रचयिता आदिकवि वाल्मीक हैं।

लकड़ी से बनी राम, सीता, गरुड़, विष्णु, हनुमान, अर्जुन आदि की सुन्दर प्रतिमायें यहां के बाजारों में सरलता से मिल जाती हैं। विज्ञापनों में भी रामायण और महाभारत के पात्रों के चित्र मिलते हैं। डाकघर के मुद्रांकों पर रामायण, महाभारत के कथानकों के चित्र मिलेंगे जैसे सीता देवी की अग्नि-परीक्षा, स्वर्णमृगकथा, गीतोपदेश आदि।

इण्डोनेशिया के प्रथम राष्ट्रपति डा० सुकर्ण को महाभारत बहुत प्रिय था। विदेशी विद्वान् उनके काल को महाभारत युग मानते हैं। परन्तु जब श्री सुहार्त राष्ट्रपति बने तो इनके काल को रामायण युग की संज्ञा दी गई। इन्होंने राष्ट्रपति बनते ही अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव का आयोजन अपने देश में किया। यह उत्सव जावा में १९७३ में हुआ जिसमें सभी रामायण देशों थाइलैण्ड, लाओस, मलेशिया, कम्पूचिया, भारत, बर्मा, नेपाल आदि से विद्वान् व नाटक मण्डलियां बुलाई गईं। बहुत उत्साह व सफलतापूर्वक यह महोत्सव सम्पन्न हुआ। दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव दिसम्बर १९७५ में दिल्ली में हुआ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत का एक सांस्कृतिक राजदूत

भारत के महामनीषी आचार्य रघुवीर बालि से बहुत प्रेम करते थे। सन् १९५२ में बालि गये तो अपने साथ ३-४ बालि बच्चों को ले आये जि उन्होंने प्रेम के साथ पाला और संस्कृत पढ़ाई। वे बालि में आज बड़े-ब पदों पर आसीन हैं। बालि में बसे लगभग एक करोड़ २५ लाख हिन्दुओं अतिरिक्त १९७४-७७ में जावा आदि अन्य द्वीपों के ९० लाख लोगों ने हि होने की घोषणा की। यह लोग संभवतः पहले धर्महीन कहलाते थे। धर्म इस दीक्षा में आचार्य रघुवीर के शिष्यों प्रो० मन्त्र और श्री पूजा का योगदा था। इस घटना के उपरान्त धीरे-धीरे और भी कबीलों ने हिन्दू धर्म स्वीका किया। आचार्य रघुवीर की २५ वर्ष पुरानी तपस्या इतने विशद रूप फलवती हुई।

बालि की जनता गंगा-गीता-गायत्री के देश भारत को एक पुण्यभू अपने स्वप्नों का स्वर्ग मानती है। भारत और बालि के सम्बन्ध और सुदृढ़ हों, इसके लिए भारतीय संस्कृति के प्रेमियों को अग्रसर होना चाहिए

जन-ज्ञान [मासिक] में विज्ञापन दीजिए

- यह आपको एक लाख पाठकों से मिलवायेगा।
- आपके उत्पादन–संस्थान का उनसे परिचय करवायेगा।
- जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक आन्दोलन है।
- एक यज्ञ है यह, आप इसमें आहुति भी देंगे-- जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरीअत की भी कई व्याख्याएं हैं

—शाहिद रहीम

हनफी सुन्नी संप्रदाय की एक बुद्धिजीवी सदस्या श्रीमती मुमताज बेगम द्वारा अपने एक बेटे और एक बेटी के स्वाभाविक अभिभावकत्व के मसले को चुनौती देते हुए दायर की गई रिट याचिका सर्वोच्च न्यायलय के न्यायाधीश द्वय ए.एन. सेन तथा आर०एस० पाठक ने गत २३ अगस्त ८५ को स्वीकार करके एक दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या को सुलझाने का काम शुरू किया है। न्यायालय द्वारा स्वीकार की गई इस दूसरी विवादास्पद याचिका में आवेदिका ने यह शंका व्यक्त करते हुए कि पति कतर (ईरान) से वापस आने पर बच्चों को अपने अधिकार में लेने की कोशिश करेंगे, मुस्लिम लॉ के हनफी कानून के क्रियान्वयन पर रोक लगाने की मांग की है।

याचिका में बच्चों की गार्जियनशिप का अधिकार मां को सौंपे जाने की याचना करते हुए अलग-अलग ढंग से की गई शरीअत की व्याख्या के कारण मुस्लिम महिलाओं के लिए पैदा हुई समस्याओं पर भी विचार करने को कहा गया है। मुस्लिम पर्सनल लॉ की आपस में बंटी वर्गीय हनफी, मालिकी शाफई और असना अश्री (शिया) विचारधाराओं के मुताबिक चाइल्ड एडाप्शन लॉ के फ़र्क को स्पष्ट करते हुए प्रार्थी के वकील आर०के० राव ने न्यायालय को बताया कि हनफी कानून के अनुसार पुत्री के बालिग होते ही मां का उस पर अधिकार समाप्त हो जाता है मगर मालिकी विचारधारा के अनुसार मां पुत्र के युवा होने तक उसकी अभिभावक रह सकती है जबकि हनफी विचारधारा पुत्र के सात वर्ष का होने पर मां के अधिकार को समाप्त कर देती है।

याचिका, चाइल्ड एडाप्शन बिल १९७२ को पास करने की मुख्य समस्याओं में मुस्लिम पर्सनल लॉ के अन्तर्गत विभिन्न मुस्लिम फिर्के, हनफी, मालिकी, शाफई और असना अश्री विचारधाराओं के आपसी टकराव की समस्या को हल करने की ओर प्रवृत्त करती है। मगर यह समस्या हल करना लोहे के चने चबाने जैसा होगा। क्योंकि गत साढ़े तेरह सौ वर्षों में मुसलमानों के आपसी विभिन्न वर्गीय विचारधाराओं का टकराव समाप्त नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो सका है। देश के सभी समुदायों के लिए समान नागरिक संहिता की रूपता को जीवत करने जरूरत है।

समान नागरिक संहिता बनाने और लागू करने के नाम पर ही जड़ उखड़ने वाले मुसलमान जब अपनी एकता का झूठा प्रदर्शन करते हुए इस को खतरे में घोषित करते हैं तो सचमुच उनकी बेवकूफी पर हंसी आ कि जो मुसलमान रसूले अकरम मुहम्मद स. के निधन के दिन ही खिल (सत्ता) के मामले पर आपस में बंटना शुरू हो गए और आज भी तीम अधिक खेमों में -बंटे हैं, जिनकी अपनी कोई नागरिक संहिता नहीं वे तरह एकता का स्वांग भरते हैं। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि इ मिक इतिहास की प्रारम्भिक सदियों में शरई कानून के विभिन्न धर्म स्थ हो गए थे। उनमें से चार यानी इमाम अबु हनीफा र० का "फिकए हनफि इदरीसशाफई र० का फिकए शाफिया, इमाम मालिक बिन उन्सर० का f मालिकिया और इमाम अहमद बिन हुम्बुल का फिकए हुम्बुली संसा विभिन्न भागों में सुन्नी मुसलमानों के बीच प्रसिद्ध और रीतिबद्ध है। ग्रुप इन चारों से अलग है और मौलिक रूप से मुहम्मद साहब के इमाम जाफरे सादिक र० के फतवों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त देशों में इस्माईली जैदी और अबा जी फिके की अपनी-अपनी दुनिया कहना गलत नहीं होगा कि ये सब मुसलमान हैं। इनका खुदा एक है, इ नबी एक है, इनकी किताब एक है मगर इनके उसूल और सिद्धांत अलग हैं।

फिकए इसलामी के सभी धर्म चाहे वह सुन्नी ग्रुप से हों या शिया से अपने-अपने मानने वालों की दृष्टि में धार्मिक आदेश का दर्जा रखते वर्तमान संसार में हनफी मालिकी और शाफई फिका या समूह के मानने अधिक संख्या में हैं। अरब देशों के सुन्नी मुसलमान इन्हीं में से किसी किसी के अधीन हैं। सऊदी अरब और यमन में क्रमशः हुम्बुली और ग्रुप का आधिपत्य है। उत्तर अफ्रीका के देशों अल्जीरिया, तयूनस, मा और मारितीनिया में मालिकी ग्रुप तथा मलेशिया, इन्डोनेशिया और अफ्रीका के मुसलमान आम तौर पर शाफई मसलक के पैरवीकार हैं। में (शिया) आसना अश्री ग्रुप और अफगानिस्तान में हनफिया ग्र सैद्धान्तिक अस्तित्व प्राप्त है। इराक में इन दोनों मसलकों के मानने की संख्या बराबर है। फिका इसमाईलिया के मानने वाले उत्तर अ कुछेक अरब देशों और इंडो-पाक में भी मौजूद हैं। अल्जीरिया और

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बार में मुसलमानों के कुछ तबके अबा जी मसलक के मुताबिक जीवन जीते हैं।

इसलाम की उपर्युक्त तमाम विभिन्न विचारधाराओं के फेमिली लॉ या उनके पर्सनल लॉ में भिन्नता है। विशेष रूप से विरासत और वसीयत के मामले में ज्यादा भिन्नता है तथा इन सब दाम्पत्य मामलों से सम्बन्धित अलग-अलग कानून हैं।

फिकए इसलामी के इतिहास, संयोजन और उसकी विभिन्न विचार-धाराओं के आपसी मतभेद का यह संक्षिप्त अध्ययन स्पष्ट करता है कि समान विचार के मुस्लिम पर्सनल लॉ संपूर्णतः कुरआन व हदीस पर आधारित है सही नहीं है। असलियत यह है कि समकालीन विभिन्न फिकही विचार-धाराएं बुनियादी तौर पर तो अवश्य किताब व सुन्नत से आत्मसात् हैं मगर उनकी रीतिबद्ध संहिताएं मानवीय चिंतन-मनन का फल हैं जिसकी व्याख्या में फिकहा या विद्वानों ने काल, स्थान और सामाजिक आवश्यकता का दूर सीमाओं तक ध्यान रखा था।

कुरआने हकीम के अनुसार बच्चों पर माता-पिता के समान अधिकार की बाबत स्पष्ट है कि "बच्चे जन्नत के फूल हैं, उनकी शिक्षा और बालिग होने तक बेहतरीन परवरिश वालदैन (माता-पिता दोनों) पर वाजिब है ताकि तुम्हारी नसलें समझदार और होनहार नागरिक बन सकें।"

उपर्युक्त संहिता दांपत्य संबंध की प्रगाढ़ता तक सीमित है। पति-पत्नी का संबंध विच्छेद हो जाने के बाद पुत्र या पुत्री पर माता-पिता के इकहरे अधिकार के संबंध में कुरआन ने बंदिशों में जकड़ दिया है। कुरआन के बताए सिद्धांतों के अनुसार संहिताओं के एक सर्वमान्य संकलन (हदीस) मिश्कात शरीफ में बेटे-बेटियों पर मां या बाप के इकहरे अधिकार की बाबत लिखा है—"बेटी नौ वर्ष और बेटा ग्यारह वर्ष की आयु में बालिग हो जाता है। यहां से वह आजाद है और उन्हें हक है कि यदि उनके मां-बाप चरित्र से कच्चे हों तो उनकी आलोचना न करें बल्कि उनका साथ छोड़ दें। धार्मिक मामलों में यहां से वही जिम्मेदार हैं मगर मां-बाप का दर्जा हर हालत में ऊंचा है।" पृष्ठ ३२३।

इसलाम की बंदिश केवल उन मानवीय अधिकारों पर है जिन पर प्रश्नचिन्ह लगाए जाते हैं। पति-पत्नी, और पिता-पुत्र और मां-बेटे के एक-दूसरे पर अधिकार बच्चों की वयस्कता की सीमा में बंधे हुए हैं। बच्चों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिपक्व और वयस्क हो जाने के बाद वह पूरी तरह स्वतंत्र हैं। इसलि बच्चों पर माता-पिता के इकहरे अधिकार का मामला स्वाभाविक तौर बच्चों के हाथ में है। बच्चों की आवश्यकता तक मां या पिता उन अधिकार को भी मानवीय पक्ष में बड़ी हद तक कैद कर दिया गया है। इ संबंध में कुरआन के अनुसार यह कानून कि "तुम्हारी औलादें न सि तुम्हारी "लुत्फ़ अंदोजी" का सिला हैं, बल्कि उनके लिए तुम पर जिम्मेदा है कि तुम उन्हें दीन धर्म और दुनिया का नेक इंसान बनाओ। याद रख कि अगर तुम में मां या बाप से किसी एक को भी शंका हो कि मां के पा तुम्हारी औलादों के रहने से उनका चरित्र बिगड़ सकता है तो अपनी औला अपने खानदान के उन अफराद (व्यक्तियों) को सौंप दो जो दीन औ दुनिया की नजर में नेक और सालिह (इबादत करने वाले) हैं। चाहे अग तुम्हारे परिवार में ऐसा कोई न हो तो तुम्हारा कोई हक नहीं है अपनं औलादों पर, उसे समाज का कोई नेक इंसान अपनी सोहबत से नेक बन लेगा।" (सही बुखारी मुस्लिम, अध्याय ७)

मिश्कात शरीफ और सही बुखारी मुस्लिम इस्लाम धर्म की ऐसी किता हैं जिन पर किसी उप संप्रदाय को कोई विरोध नहीं। जिसके अनुसार स्पष् होता है कि कोई भी मानवीय पक्ष अपने हित में अधिकारों के प्रयोग क मांग करता है तो इस्लाम उन अधिकारों की सीमा निर्धारण की समस्य का समाधान धार्मिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में कर्मगत और चरित्रगत आधार पर करने की अनुमति देता है। मगर सामाजिक, राजनैतिक औ धार्मिक तथा आर्थिक दबदबे के बूते पर व्यक्तिगत लाभ के लिए न्याय की कुर्सी से अन्याय करने वाले मठाधीशों के कारण ही आज शरीअत की गलत व्याख्या हो रही है और अन्यायपूर्ण फैसलों की शिकार जनता न्यायालयों के दरवाजे खटखटा रही है.

भारत में 'मुस्लिम पर्सनल लॉ" के क्रियान्वयन के लिए १९३७ शरीअत ऐक्ट के अन्तर्गत कुछ सिद्धांत बनाए गये थे, जिसकी धाराओं के अधीन भारत का मुसलमान नागरिक विरासत, निकाह, तलाक या खुला, ईला, जुहार, लआन, मुबारिअत, नफ्का, हुबा और वक्फ के मामलों में आवश्यक रूप से पाबंद है। इन मामलों से संबंधित तमाम रस्मो-रिवाज यदि शरीअत से भिन्न हों तो उनके लिए नहीं होंगे।

यह भी विवाद का विषय है कि विभिन्न संप्रदायों के पर्सनल लॉ उनके मौलिक अधिकारों की परिधि में कैद हैं। वसीयत, तंबीयत और सपत्ति के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकार ४४ वें संविधान संशोधन अधिनियम १९७८ के द्वारा भारतीय संविधान से निकाल दिए जाने के बाद मौलिक अधिकारों से अलग हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में समान सिविल कोड की स्थापना एक उलझी हुई समस्या है जिसका हल तमाम पर्सनल लॉ की दैनिक जीवन में आवश्यकता और भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसके उचित क्रियान्वयन के अध्ययन से संभव है। जरूरत केवल राष्ट्रीय स्तर पर समान विचारधारा विकसित करने की है ताकि विभिन्न समूहों की संस्कृति के नाम पर हम आपस में टुकड़े-टुकड़े न हों। □

आर्यसमाज के कैसेट

मधुर एवं मनोहर संगीत में आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशकों द्वारा गाये गये ईश्वरभक्ति, महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनों के सर्वोत्तम कैसेट मंगवाकर-

आर्यसमाज का प्रचार जोरशोर से करें।

कैसेट नं. 1- पथिक भजन सिन्धु- गीतकार एवं गायक सत्यपाल पथिक का सर्वाधिक लोकप्रिय कैसेट।

2- सत्यपाल पथिक भजनावली- सत्यपाल पथिक का दूसरा नया कैसेट।

3- श्रद्धा- प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान।

4- आर्य भजनावली- फिल्मी संगीतकार एवं गायक वेदपाल वर्मा।

5- वेद गीताञ्जलि- गीतकार एवं गायक- सत्यकाम विद्यालंकार

6- भजन सुधा- आचार्या प्रज्ञादेवी वाराणसी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन।

मूल्य प्रति कैसेट 1 से 3, 30 रु. तथा 4 से 6, 35 रु. है। डाक व्यय अलग
विशेष- 5 या अधिक कैसेटों का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व्यय फ्री। वी.पी.पी. से भी मंगा सकते हैं।

प्राप्तिस्थान- आर्यसिन्धु आश्रम 141, मुलुण्ड कालोनी बम्बई-400082

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सांप्रदायिकता : अर्थ-अनर्थ

—महेशचन्द्र शर्मा

पिछले दिनों अपने एक परिचित से मिलने अस्पताल गया। मेरे पास 'जन-ज्ञान' का "महान् हिन्दू विशेषांक" था। मैं मित्र से कुशल-क्षेम पूछ रहा था इसी बीच एक सज्जन आये और स्टूल पर पड़ी उक्त पुस्तक को पढ़ने लगे। कुछ देर पढ़ने के बाद उपेक्षा से देखते हुए मुझसे कहने लगे कि ऐसी सांप्रदायिकता से भरपूर पुस्तक पढ़ने में क्या तुक है? मुझे उनकी बात पर आश्चर्य हुआ। मैं पूछा बैठा कि आखिर इस लेख में क्या सांप्रदायिकता है? तो उन्होंने एक लेख (शीर्षक : मुस्लिम समाज किधर जा रहा है?) के एक अंश को दिखा दिया जिसमें लेखक ने कामना की थी कि जैसे क्रिसमस आदि के दिन रामकृष्ण मिशन के मन्दिर में ईसा की तसवीर लगा कर श्रद्धा प्रकट की जाती है इसी प्रकार हिन्दू महापुरुषों के जन्मोत्सव आदि पर मस्जिद तथा गिरजे में भी खुशियां मनाई जायें। मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की परन्तु परिणाम कुछ न निकला।

आखिर मैं घर लौटा परन्तु मेरे हृदय में अपने मित्र के स्वस्थ होने की खुशी से अधिक दुःख इस बात का था कि हमारा हिन्दू समाज कितनी वैचारिक विकृतियों से ग्रसित है। मैं सोचने लगा कि कौन करेगा इन विकृतियों को दूर? यह सोचते-सोचते श्री खलील जिब्रान का यह वाक्य मेरी आंखों के आगे नाचने लगा जिसे मैंने कहीं पढ़ा था—"वह राष्ट्र दया का पात्र है जिसके राष्ट्र नेता लोमड़ी और दार्शनिक मदारी के समान हैं और जो केवल चिप्पी लगाने और नकल उतारने की कला में माहिर हैं।"

सांप्रदायिकता का अर्थ

यदि हम अपने प्राचीन तत्त्वदृष्टा मनीषियों की दृष्टि से देखें तो पायेंगे कि सांप्रदायिक शब्द हमारे यहां बहुत अच्छे अर्थों में प्रयुक्त होता था। हमारे श्रद्धेय ऋषियों के अनुसार अपने संप्रदाय के हित के विषय में चिंतित रहने वाला व्यक्ति सांप्रदायिक होता था तथा अपने संप्रदाय को समाज में सर्वोच्च स्थान प्रदान कराने की भावना सांप्रदायिकता की श्रेणी में आती थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु आज सांप्रदायिकता का अर्थ अत्यन्त विकृत हो चुका है। यदि और स्पष्ट कहें तो उल्टा हो चुका है जहां पहले इसे अपने संप्रदाय के हित चिंतन के लिए प्रयोग किया जाता था वहीं आज इसका अर्थ अन्य संप्रदाय के अहित-चिंतन में बदल चुका है। अतः आज के संदर्भ में उस व्यक्ति को सांप्रदायिक नहीं कहना चाहिये जो अपने संप्रदाय का हित सोचते हैं वरन् वह व्यक्ति इस घेरे में आवेगा जो अन्य संप्रदाय का अहित चाहता हो या अपने सांप्रदायगत हितों को राष्ट्र हित के ऊपर रखता हो। कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने तो इसे अपना ब्रह्मास्त्र बना रखा है और इनके अनुसार हिन्दू हितों की बात सोचना भी घोर सांप्रदायिक बात हो चुकी है।

कैसे हुआ अनर्थ ?

यदि हम इतिहास देखें तो पायेंगे कि भारत में कई प्रकार के संप्रदाय थे परन्तु चूंकि वे भारतीय हिन्दू संस्कृति के "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" वाले आदर्श को हृदयंगम करके समाज के व्यक्ति-व्यक्ति के उत्थान को ध्यान में रख कर कार्य करते थे तथा प्रत्येक संप्रदाय के अनुयायी दया, क्षमा, अहिंसा आदि अस्त्रों द्वारा अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ साबित करते थे अतः टकराव की कहीं कोई गुंजाइश नहीं थी। परन्तु जब परकीयों का आक्रमण हुआ जो येन केन प्रकारेण सारे विश्व को अपने मजहब या रिलीजन (Religion) के ध्वज तले लाना चाहते थे तथा अभी भी जिनका विकास (वैचारिक) हमारी तुलना में नगण्य था, और हमारे संकीर्ण स्वार्थों तथा फूट के कारण विजयी हुए तो उन्होंने हमारा मत परिवर्तन कराने के लिए तथा अपनी श्रेष्ठता लादने के लिए हमारे उपासना स्थलों आदि पर प्रहार करना प्रारंभ कर दिया तथा अपने हित चिंतन और अन्यान्यों के अहित चिन्तन को समान दर्जा देना प्रारंभ कर दिया जिसका प्रतिरोध भारत की नेतृत्व विहीन गुलाम जनता चाह कर भी न कर सकी चूंकि उनके सभी नेता तो आत्म-बलिदान कर रहे थे। अतः भारतीय मन ने विवशता में इस विकृति को स्वीकार किया।

आजादी के बाद जब अंग्रेजों ने अपना शासन अपनी नाजायज संतान कांग्रेस को सौंपा तो उसे ठीक प्रकार से समझा दिया कि किसी भी कीमत पर इस देश के हिन्दूपन को जागृत मत होने देना अन्यथा लेने के देने पड़ जायेंगे। कांग्रेस ने आज्ञाकारी की भांति अंग्रेजों की इच्छा पूरी की तथा हिन्दू शब्द को ही सांप्रदायिक कह दिया और नारा दिया कि जो हिन्दू कहता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है वह दकियानूसी और पिछड़ा है। इसका का सीधा परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति तथा दल स्वयं को अहिन्दू सिद्ध करने में जुट गया जिसके परिणामस्वरूप देश-विभाजन के बाद इसके परिणामों पर जो विचार होना चाहिये था वह नहीं हो सका तथा नेहरूजी की कुर्सी सुरक्षित रही। यही कारण है कि आज भी विभाजन के आसार प्रकट होने के बावजूद सत्ताधीश तथा जनता इसके साथ शतुरमुर्गी नीति अपना रहे हैं जो निश्चय ही हमारे राष्ट्र की अखंडता के लिए घातक है।

हम क्या करें ?

यदि राष्ट्र को अकाल मृत्यु से बचाना है तो यह आवश्यक है कि—

१. प्रत्येक व्यक्ति किसी प्रकार के आरोपों की परवाह न करते हुए राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा उन्नति के लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहे।

२. प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में अपनी प्रचीन संस्कृति के प्रति अभिमान उत्पन्न हो।

३. हम अपनी संस्कृति को केवल उल्लेख के तक ही सीमित न रखें वरन् तदनुरूप व्यवहार भी करें।

चूंकि इस प्रकार की भावना बालकों में भरना अधिक आसान होगा अतः मैं चाहूंगा कि हम अपना कार्य बालकों से ही प्रारम्भ करें। यदि बालकों को ये संस्कार प्रथम संस्कार केन्द्र 'घर' से ही मिलें तो यह और अच्छी बात होगी। अतः माताओं से मेरा विशेष अनुरोध होगा कि वे इस दिशा में सोचें तथा पहल करें ताकि राष्ट्र को अच्छी संस्कारित पीढ़ी मिल सके।

शासन का कर्तव्य

साथ ही शासन का भी कर्तव्य है कि वह भी राष्ट्र पर छाये सकट के इन बादलों को देखे तथा पहचाने और रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपाय तो कम से कम अवश्य करे—

१. सर्वप्रथम तो धर्मनिरपेक्षता की नकारात्मक नीति को त्याग कर सर्व-धर्म/पंथ समभाव की सकारात्मक हिन्दू नीति स्वीकार करे।

२. हमें विभिन्न राज्यों या राष्ट्रों के संघ के रूप में नहीं वरन् एक संस्कृति संपन्न एकात्म राष्ट्र की मान्यता दें।

३ प्रत्येक उस व्यक्ति को नागरिकता से वंचित कर देश निकाला दे दिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाये जो राष्ट्र के मान बिंदुओं की प्रतिष्ठा पर प्रहार करने का प्रयास करे।

४. राजनीतिक दल अपने वोट बैंक का खयाल दिल से निकाल कर राष्ट्र की एकात्मता स्थापित करने के लिए संगठित प्रयास करें।

५. बाह्य दबाव का मुकाबला करने के लिए राष्ट्र को शक्ति संपन्न करे।

६. यूं तो 'हिन्दू राज्य' की स्थापना भी इस समस्या का एक हल हो सकता है परन्तु अभी की राजनीतिक भ्रष्टता को देखते हुए मैं इसका सुझाव नहीं देना चाहूंगा क्योंकि परिवर्तन किसी विशेष शासन पद्धति या नीति से नहीं होता वरन् उसे कार्यान्वित करने वालों की निष्ठा से होता है।

७. शासन ऐसी कोई नीति स्वीकार न करे जो किसी संप्रदाय को विशेष अधिकार देने का समर्थन करे।

मेरा विश्वास है कि उपरोक्त सुझावों पर अमल किया जाये तो हमे विश्व को अपनी संस्कृति से परिचित कराने के लिए किसी भारत महोत्सव जैसे नाटक की आवश्यकता नहीं होगी और सारा विश्व स्वयं हमारी संस्कृति की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए इसके आगे नतमस्तक होगा। □

जन-ज्ञान (मासिक)

की

१० प्रतियां केवल २०) की वी० पी० से मंगाएं और अपने मित्रों को भेंट करें।
२० या २० से अधिक प्रतियां मंगाने पर मूल्य १.७५ पैसे प्रति होगा।

कागज—छपाई—डाक व्यय सब महंगे
पर प्रचार के लिए

हम जन-ज्ञान आज भी लागत से कम मूल्य पर
दे रहे हैं।

हिन्दू राष्ट्र घोषित कराने के लिए

हमारा साथ दीजिए।

जन-ज्ञान (मासिक), नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे भारत के राम !

—राधेश्याम आर्य

रावण सदृय असुर का वध कर, तुमने जग कल्याण किया,
सहमी-सहमी मानवता को, तुमने नूतन त्राण दिया,
मृतप्राय संस्कृति को तुमने, नव जागृति का प्राण दिया,
वेद पथिक बन, वैदिक पथ पर, तुमने सहस प्रयाण किया,
सीतापति ! हे दशरथनन्दन ! कोटि-कोटि है तुम्हें प्रणाम ।
हे भारत के राम ।।

सत्य-धर्म के रक्षक तुम थे, भारतीयता के अभियान,
तान दिया तुमने भूमण्डल पर सेवा का नवल वितान,
ले आए तुम, हे युग मानव ! वसुन्धरा पर नया विहान,
गूंज उठा नगराज हिमालय के शिखरों से मंगल गान,
जन जन के हित में तुमने सब कर्भ किए होकर निष्काम ।
हे भारत के राम ।।

मर्यादित आचरण तुम्हारे, जागृत किए अमर बलिदान,
त्याग भावना की दृढ़ता ने, बना दिया व्यक्तित्व महान्,
सत्य सनातन धर्म सुवैदिक की तुम बने अनोखी शान,
दिग्विजयी । ! पुरुषोत्तम ! उत्तम! तुम हो भारत के भगवान,
सत्मं शिवं सुन्दरं की प्रतिमूर्ति अहे ! तुम ललित ललाम ।
हे भारत के राम ।।

बन्द किया तुमने निर्णय हो, सीताओं का दारुण क्रन्दन,
भरा धरा के उर में तुमने, नव्य चेतना का फिर स्पन्दन,
होने लगा पुनः धरती पर, मानवता का फिर अभिनन्दन,
धर्म-अर्थ का, कम मोक्ष का, किया तुम्हीं ने फिर से बन्दन,
शक्ति श्रोत और ज्योति पुञ्ज बन गये गए हमारे नगर-ग्राम ।
हे भारत के राम ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीन आर्य विद्वानों का स्वागत

नई दिल्ली, १३ सितम्बर। आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी० ए० वी० कॉलेज कमेटी की ओर से गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के नव-नियुक्त कुलाधिपति और कुलपति का भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया।

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बनने पर और वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध विद्वान् सत्यकाम वर्मा के कुलपति बनने पर यह अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया था।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री सोमनाथ मरवाह ने गुरुकुल सम्बन्धी विवादों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि १२ वर्ष पूर्व जो विवाद प्रारंभ हुआ था, वह अब समाप्त हो रहा है। हमें खुशी है कि जिनका घर था, उन्हें उसका अधिकार मिल गया है।

श्री रामगोपाल शालवाले ने नये कुलाधिपति और कुलपति को चेतावनी देते हुए कहा कि आज पुष्प-मालाओं से आपका स्वागत किया गया है, परन्तु इससे आपके मार्ग की बाधाएं कम नहीं होंगी। बहुत बड़ी जिम्मेवारी आप दोनों पर आ पड़ी है।

निवर्तमान कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने यह आशा प्रकट की कि इन दोनों महानुभावों के आ जाने से अब सत्य का केतु फहरेगा और सत्य की कामना पूरी होगी। प्रो० रत्नसिंह ने कहा कि गुरुकुल हमारी श्रद्धा का पात्र रहा है और समस्त आर्य जनता उसकी ओर बड़ी आशाभरी दृष्टि से देखती रही है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में गुरुकुल की जो दुर्दशा हुई है, उससे समस्त आर्य जनता अन्दर ही अन्दर खून के आंसू पी रही थी। हमें आशा करनी चाहिए कि गुरुकुल अब पुनः अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करेगा। प्रो० वेदव्रत ने गुरुकुल के सभी स्नातकों की ओर से नव निर्वाचित पदाअधिकारियों को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इस समारोह में संस्कृत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् और राष्ट्रपति से पुरस्कृत डा० सत्यव्रत शास्त्री का भी अभिनन्दन किया गया।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद मन्दिर में बन रही

यज्ञशाला के लिए

ईंटें, संगमरमर, लोहा, सीमेंट भेजिए

१००१ रु० देने वालों का नाम पत्थर पर अंकित होगा

५००१) या अधिक देने पर जन-ज्ञान में चित्र भी प्रकाशित होगा

१०-२० हजार रु. खर्च कर अपने किसी प्रिय जन की स्मृति में कमरा बनवाएं

□□

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी के सबसे बड़े शत्रु हम हैं!

—शिवकुमार गोयल

"ताऊजी, सेवा बताइये।" "बेटा, छोटू की शादी का बुलावा देने आया हूं। तमाम "कारियकरमों" में आना है।"

पास के ग्राम बफौंडा से आये हमारे परिचित वृद्ध ने अपने पुत्र के विवाह का निमन्त्रण पत्र मेरे सामने रख दिया। गांव के साधारण हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति के नाम से छपा निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में था। वे बेचारे अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं जानते थे किन्तु निमंत्रण पत्र में उन्हीं की ओर से अंग्रेजी में सम्बोधित किया गया था। मैंने सहज भाव से कहा—"ताऊ जी, क्या-क्या कार्यक्रम हैं? जरा निमंत्रण पत्र पढ़कर सुनाओ तो।"

वे सकपका कर बोले—"बेटा मैं अंग्रेजी क्या जानूं?"

"फिर आपने हिन्दी में क्यों नहीं छपवाया?"

"लड़कों की चलती है। उन्होंने अंग्रेजी में छपवा लिया," उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया।

यह कितनी शर्मनाक बात है कि मेरठ जैसे शुद्ध हिन्दी भाषी क्षेत्र के गांवों तक के लोग विवाह, मुण्डन संस्कार, नामकरण संस्कार जैसे विशुद्ध संस्कारों के निमंत्रण पत्र भी अंग्रेजी में छपवाने में गौरव महसूस करते हैं। और तो और, "श्रीमद्भागवत सप्ताह जैसे एक विशुद्ध धार्मिक कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र जब मैंने अंग्रजी में छपा देखा तो हक्का-बक्का रह गया था। धर्म, संस्कृति तथा संस्कारों की भाषा या तो देववाणी संस्कृत है अथवा हिन्दी। यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी हम अपनी राष्ट्रभाषा को छोड़कर विदेशी भाषा का प्रयोग करें। यह हमारी मानसिक दासता का ही परिचायक कहा जायेगा।

राजर्षि टन्डन जी ने कहा था कि यदि हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोग ही दैनिक कामों में हिन्दी का प्रयोग करने लगें तथा अंग्रेजी का मोह छोड़ दें तो हिन्दी को स्वतः ही उचित स्थान प्राप्त हो जायेगा। किन्तु उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरयाणा तथा बिहार जैसे हिन्दी भाषी राज्यों की जनता अभी भी अंग्रेजी के मोह से बुरी तरह ग्रस्त है। इन राज्यों के व्या-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पारी, दुकानदार, धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाएं अभी भी अंग्रेजी
प्रयोग में गर्व का अनुभव करते हैं।

कस्बों में भी अंग्रेजी का प्रयोग

हाल ही में मैंने गाजियाबाद जैसे हिन्दी भाषी क्षेत्र के दस कस्बों
दस गांवों का भ्रमण कर सर्वेक्षण किया। गांव की पढ़ी-लिखी या नौक
में लगी हुई युवा पीढ़ी निश्चय ही अंग्रेजी के मोह से ग्रस्त
पिलखुवा, हापुड़, मोदीनगर, मुरादनगर, दादरी, सिभावली, गढ़मुक्ते
डासना, बाबूगढ़ तथा गुलावठी कस्बों के सर्वेक्षण के दौरान देखने में
कि ४० प्रतिशत व्यापारी अभी भी अपनी फर्मों के खातों तथा काम में
वाली लेखन सामग्री का मुद्रण अंग्रेजी में कराते हैं। दुकान पर लगाये
वाले पट्टों पर अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है। ३० प्रतिशत व्यापा
द्वारा पत्रव्यवहार में भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी है।

हापुड़ की खादी की एक फर्म के मालिक से जब मैंने पूछा 'आप
विचारशील, भारतीयता के समर्थक हैं अतः आपको तो अंग्रेजी की
हिन्दी भाषा को महत्त्व देना चाहिए। फिर भी आप अपने दैनिक का
अंग्रेजी का प्रयोग क्यों करते हैं?' वे बोले—'अंग्रेजी में खाते रख
सुविधा होती है। बैंकों में हिन्दी का प्रयोग करने वालों को कठिनाई
सामना करना पड़ता है। आयकर (इन्कम टैक्स), बिक्रीकर (सेल्स टै
आदि विभागों में भी अंग्रेजी का बोल-बाला है। ऐसी हालत में अं
में काम करना पड़ता है।'

सारे धर्मगुरु भी शिकार

और तो और, धार्मिक संस्थाएं तथा धर्मगुरु भी अंग्रेजी के मोह से
नहीं हैं। देश के अनेक धर्माचार्य अपने 'लैटरपैडों' पर संस्कृत की
अंग्रेजी में 'हिज होलीनैस स्वामी...छपवाते हैं तो लगता है कि जब
धर्माचार्य ही विदेशी भाषा अंग्रेजी के मोह से मुक्त नहीं हैं तो भला जं
इस देश से कैसे जा सकती है? अब तो हमारे देश के 'योगी', 'अव
तथा भगवान् भी स्वदेशी भाषा में नहीं विदेशी भाषा अंग्रेजी में अपने
को उपदेश देते हैं। उनके प्रवचनों की पुस्तकें अंग्रेजी में छपती हैं।
को 'कृष्णा', 'योग' की जगह 'योगा' तथा धर्म की जगह 'धर्मा' कहने में वे
का अनुभव करते हैं। जनता को प्रभावित करने या बुद्धिजीवियं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना रौब गालिब करने के लिए वे अंग्रेजी को महती आवश्यकता ही मानने लगे हैं।

यह कटु सत्य है कि हिन्दी को सबसे ज्यादा क्षति हिन्दी के प्रचार व प्रसार का "ठेका" लेने वाले व्यक्ति ही पहुंचा रहे हैं। वे बातें हिन्दी की करते हैं किन्तु अधिकतर अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाकर उनके मुख से अंग्रेजी के शब्द सुनकर प्रसन्न होते हैं। अपनी पुत्री या बहन के विवाह संस्कार जैसे मांगलिक कार्यों में भी अंग्रेजी के प्रयोग पर उन्हें कभी ग्लानि महसूस नहीं होती? आज स्थिति यह पैदा हो गई है कि अंग्रेजी का प्रयोग करने वाले को विशिष्ट तथा सुशिक्षित समझा जाता है जबकि हिन्दी वालों को "बौड़म"!

हिन्दी भाषी राज्यों के लोग ही अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के या कान्वेंट में भेजने में गर्व अनुभव करते हैं। सरस्वती शिशु मन्दिरों में बालकों को भारतीय संस्कृति के संस्कार दिए जाते हैं किन्तु कुछ अभिभावकों को शिकायत है कि उनका माध्यम अंग्रेजी न होने के कारण उनके बच्चे अंग्रेजी में कमजोर हो जाते हैं।

उत्तर प्रदेश जैसे हिन्दी भाषी राज्य में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की जैसे बाढ़-सी आती जा रही है। गाजियाबाद, मेरठ जैसे क्षेत्रों में भी प्रतिदिन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की संख्या बढ़ती जा रही है।

कुछ वर्ष पूर्व तक विदेशी सन्तों के नाम पर 'सेन्ट पीटर स्कूल', 'सेन्ट टामस स्कूल" आदि चलते थे। अब गाजियाबाद में 'सेन्ट विवेकानन्द अंग्रेजी स्कूल' का बोर्ड देखा तो लगा कि अंग्रेजी की मानसिक दासता से ग्रस्त लोग अब 'सेन्ट कबीर, सेन्ट सूरदास स्कूल' खोलकर भारतीय सन्तों के नामों के भी अंग्रेजीकरण करने में नहीं हिचकिचाएंगे। अंग्रेजी की मानसिक दासता न जाने हमें कहां तक ले जायेगी? यदि हम हृदय से चाहते हैं कि अंग्रेजी की जगह हिन्दी को उपयुक्त स्थान मिले तो सबसे पहले हमें स्वयं हिन्दी के प्रयोग का दृढ़ संकल्प लेना होगा। दैनिक कामकाज में अंग्रेजी का मोह पूरी तरह त्यागना होगा। □

मन को प्रसन्न रखना, शान्तभाव, कम बोलना, आत्मसंयम और भावों की पवित्रता इसको मानसिक तप कहते हैं। —गीता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि विज्ञास्याम: वो वक्ष्याम:

—वीरेन्द्र मुनि, मन्त्री विश्ववेदपरिषद्, लखन

१ ऋतञ्च सत्यञ्च ...' (ऋग्वेद १०.१९०.१) का ऋषि अघमर्ष है। इसी से इस सूक्त का नाम 'अघमर्षण' है। जब मनुष्य सृष्टि-निर्माण प विचार करके परम्परा का साक्षात्कार करता है तभी वह अघ (पाप) मर्षण करता है, उसको दूर भगता है। अघ-मर्षण (पाप-दलन) का विशे दर्शन करने से ऋषि का नाम अघ-मर्षण हो गया।

२ इस सूक्त में ऋत पहले है। अन्य स्थानों पर सत्य पहले आया है 'सत्यं बृहद् ऋतं उग्रम्' (अथर्ववेद १२.१.१)। अत: आगे-पीछे होन सामान्य बात है। सत्य की धातु अस (होना) है। ऋ (गति अर्थ में प्रयुक्त) धातु ऋत में आई है। ईश्वर, जीव और प्रकृति में सत्ता भी है और ग भी। 'ऋत' ईश्वरीय नियम (वेदविद्या) है, 'सत्य' सांसारिक नियम। पहले वेदविद्या और उसके बाद तदनुसार सांसारिक नियम प्रकट होते हैं।

३ सुख-दु:ख का अनुभव जीवात्मा (चेतन) मन सहित इन्द्रियों द्वार करता है। ख का अर्थ इन्द्रियां है। बिना इन्द्रियों के अकेला जीवात्मा सुख दु:ख का अनुभव नहीं करता, न बिना जीवात्मा के जड़ इन्द्रियां ही क सकती हैं। मन भी इन्द्रिय है। शरीर तीनों का अधिष्ठान है।

४ सभ्यता का आरम्भ सृष्टि के आरम्भ में वेद द्वारा ईश्वर ने किया

१) सा संस्कृति: विश्ववारा।
२) सभ्य ! सभां मे पाहि ये च सभ्या: सभासद:।
३) तं सभा च समितिश्च सेना च।

५ कला और धर्म का उद्भव भारत में वेद द्वारा ईश्वर से हुआ। ईश्वर सोलह कला वाला है। जीवात्मा उनमें से अधिकाधिक कलाओं को धारण करता हुआ ईश्वर के निकटतम हो जाता है, ईश्वर नहीं हो सकता।

दर्शन की उत्पत्ति ईश्वर जीव-प्रकृति के ज्ञान के लिए हुई। बुद्धि, मन, इन्द्रियां आत्मा के साथ हैं। सांसारिक जीवन में इनकी आवश्यकता है। मोक्ष के लिए इनका योग है। मुक्त होने पर ये अनावश्यक हैं। जीवात्मा को जन्म लेने पर इन्द्रियां, मन, बुद्धि आदि मिलते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत अपना

—प्रतिभा शुक्ला, एम. ए

रक्त-दान कर छीना था, वीरों ने भारत अपना।
आगे चल कर यही कहानी, बन जाएगी सपना ।। १
त्रुटियां हुईं आज तक जो भी, उनको क्षमा किया मां ने।
अब सतर्क संकल्प करें हम, शत्रु न फिर से देंगे आने ।। १

रहे न कोई ऐसा जो फिर, मेरी भू पर पैर रखे।
भारत की पावन माटी को, पैरों से अपवित्र करे ।।३
तन, मन, जीवन सब कुछ अर्पित माता के चरणों में।
मरने से हम नहीं डरेंगे, डटे रहेंगे निश्चल रण में ।।४

ऊंच-नीच का भेद त्याग कर, अपनी शक्ति बढ़ाएंगे।
दूर गरीबी कर भारत को उन्नतिशील बनाएंगे ।।५

पांच शत्रु

—कान्तिप्रसाद भटनागर

पंच शत्रु पर रख ले ध्यान।
उजड़ रहा जीवन-उद्यान।
काम क्रोध मद लोभ मोह ये,
छिप-छिप लेते तेरी टोह ये।
जब तक तू सोता रहता है,
हमला करते हैं शैतान। १
इन असुरों में काम बड़ा है,
तेरे पीछे बहुत पड़ा है।
बुद्धितन्त्र को घेरा इसने,
चौपट करता तेरा ज्ञान। २

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोभ मोह ने डाला फन्दा,
किया पापमय तेरा धन्धा।
शुभ कर्मों से हटा-हटा कर,
बना रहे हैं पापविधान।३

मद ने तुझको मूर्ख बनाया,
समझा तू सब तेरी माया।
मायापति को भुला बना तू,
अनृतचारी दुष्ट महान्। ४

विघ्न पड़े पर क्रोध जलाता,
हिंसा अत्याचार कराता।
अरे! समझ ले बना रहा है,
नरक-धाम तेरा अज्ञान। ५

सब धन-धाम 'कान्त' ये किसके?
नभ, थल, तेज, वायु, जल जिसके।
सबका स्वामी, सबका दाता,
सबको छोड़ उसे पहचान। ६

संस्कृत सुभाषित

आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री महाकुले जन्म
स्वाधीनता च पुंसु महद् ऐश्वर्यं विनाप्य् अर्थः।

आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनों से मित्रता, महान् वंश में जन्म होना और स्वाधीनता—इन सबका होना मनुष्यों के लिए धन न होने पर भी महान् ऐश्वर्य है।

वचस् तत्रैव वक्तव्यं, यत्रोक्तं स-फलं भवेत्।
स्थायी भवति चात्यन्तं, रंगः शुक्लपटे यथा।

अपनी बात वहीं कहनी चाहिए जहां सफलता प्राप्त हो सके, जैसे स्वच्छ वस्त्र पर चढ़ाया हुआ रंग ही स्थायी हो पाता है।

शून्यम् आकीर्णताम् एति, मृत्युर् अप्य् उत्सवायते।
आपत् सम्पद् इवाभाति, विद्वज्जन-समागमे।

विद्वानों के समागम से एकान्त स्थल भी मनुष्यों से भरा-पूरा हो जाता है, आई हुई मृत्यु भी उत्सव के समान लगती है, और आपत्ति सम्पत्ति की भांति प्रतीत होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुटकुले

—लेखराज नन्दा

१. चुन्नूमल सेठ एक भिखारी को महीने में दस रुपये देते थे। एक साल के बाद उन्होंने भिखारी को दस रुपये के स्थान पर एक रुपया दिया। भिखारी ने पूछा—सेठ जी अब इस बार आप नर्म क्यों पड़ गये हैं? सेठ जी बोले—मेरा लड़का अय्याशी में पड़ गया है और शराब पीता है तथा आवारागर्दी करता है अतः अब मेरी माली हालत पतली हो गई है। भिखारी बोला—सेठ जी आपकी बात तो सही है लेकिन अपने लाल से कह दो कि अगर उसने अय्याशी ही करनी हो तो अपने जेब खर्च से करे न कि मेरे पैसों से करे।

२. लीला (शीला से)—आज तेरी साड़ी बड़ी सुन्दर है। कितने में आई?

शीला—बस, मैं दो घंटे तक रोई, खाना भी नहीं खाया और साड़ी मिल गई।

३. बरेली के कवि सम्मेलन में एक कवयित्री हास्य रस की कविता सुनाते-सुनाते सहसा रुक गई? श्रोताओं में बैठी एक भोली लड़की बोल उठ, खतम हो गई क्या? कवयित्री ने मुस्कुराते हुए कहा—अभी तो आपने इसका सिर सुना है। टांग सुनाना बाकी है।

४. एक डाक्टर के पास उसका एक शिष्य डाक्टरी पास करके उसी के साथ काम करने लगा। बड़ा डाक्टर जैसे जैसे रोगियों को देखता और अच्छी दवा देता, छोटा डाक्टर बड़े ध्यान से देखता रहता। एक दिन बड़ा डाक्टर एक रोगी को देखने गया, छोटा डाक्टर भी उसके साथ गया। रोगी ने कहा—मेरे पेट में दर्द है। डाक्टर ने कहा—जरूर तुमने रात को अमरूद खाये होंगे। रोगी के हां करने पर डाक्टर ने दवा दे दी और फीस लेकर चलता बना। छोटे डाक्टर ने मार्ग में पूछा—आपको कैसे पता चला कि उस रोगी ने रात को अमरूद खाये हैं। बड़ा डाक्टर—वह तो उसकी खाट के नीचे पड़े थे। अब छोटा डाक्टर एक दिन दूसरे रोगी को देखने गया। उसको भी पेट दर्द की बीमारी थी। उसने देखा खाट के नीचे घोड़े की काठी पड़ी है। उसने झट से कहा—आपने जरूर रात को घोड़े की काठी खाई होगी। रोगी के रिश्तेदारों को यह सुन कर बहुत गुस्सा आया और उन्होंने उसे धक्के मार कर निकाल दिया। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्यार हर इंसान को करना पड़ेगा

दीप को नव स्नेह से भरना पड़ेगा,
प्यार हर इंसान को करना पड़ेगा ।
आज जन-जन को जरूरत है तुम्हारे प्यार की,
हर हृदय में तुम जगाओ भावना उपकार की
क्योंकि घायल मन सभी का दर्द में डूबा यहां
आदमी को है जरूरत आदमी के प्यार की
दर्द हर दिल का तुम्हें हरना पड़ेगा ।
प्यार हर इंसान को करना पड़ेगा ।

उठ रहे हैं ज्वार अन्तर के हृदय में अब यहां
नफरतों की आग में है जल रहा सारा जहां
दानवों की दनुजता से आज बोझिल है धरा
याद करते लोग पल-पल हाय गीतामति कहां ?
कंटकों का ताज सिर रखना पड़ेगा,
प्यार हर इंसान को करना पड़ेगा ।

आज मनमानी डगर पर जा रहा इंसान है,
इस लिए ही तो जहां में आ रहा तूफान है
आदमी की प्यास बुझती आदमी के खून से
भीड़ मरघट पर लगी पनघट पड़ा सुनसान है ।
जन्म सौ-सौ बार ले मरना पड़ेगा,
प्यार हर इंसान को करना पड़ेगा ।

बिक रहा ईमान देखो झूठ के दरबार में,
हो रहा है हिंस्र ताण्डव सब तरफ संसार में
रोक सकते हो इसे तुम स्नेह का अमृत लुटाकर
डूबने को नाव है अब विश्व की मंझधार में
सत्य का वन्दन तुम्हें करना पड़ेगा,
प्यार हर इंसान को करना पड़ेगा ।

—वीरभान प्रजापति 'अकेला'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन कैसे बितायें ?

ईश्वर, जीव (आत्मा), पुनर्जन्म, परलोक, स्वर्ग, नरक, मुक्ति के सम्बन्ध में प्रत्येक मत, मजहब, सम्प्रदाय और पंथ की मान्यतायें पृथक्-पृथक् हैं। मानव जीवन के अन्तिम ध्येय को प्राप्त करने के साधन के बारे में भी सब के विचार भिन्न-भिन्न हैं। परन्तु सुख, आनन्द और शांति सभी मानव चाहते हैं इसमें दो राय नही हैं। कुछ लोग इसे केवल लोक में ही प्राप्त करना चाहते हैं तो कुछ लोक-परलोक दोनों जगत् तो कुछ लोक की उपेक्षा करके परलोक में ही इसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार सुख, आनन्द शान्ति प्राप्त करना ही मानव जीवन का अन्तिम ध्येय हुआ।

ईश्वर दर्शन, स्वर्ग और मुक्ति इस ध्येय को प्राप्त करने के साधन हैं साध्य नहीं यह भी सच है कि परिवार पड़ोस देश के दुखी रहते हम अकेले सुखी नहीं हो सकते इसलिए हम अपने जीवन का ध्येय विश्व सुख वर्धन अर्थात् संसार के सुख को बढ़ाना बनाना होगा। अब अपना अन्तिम ध्येय प्राप्त करने लिए हम अपना जीवन कैसे बितायें, इस पर विचार करना है। सुख शान्ति प्राप्त करने के लिए उत्तम स्वास्थ्य धन यश एकता और प्रेम अत्यावश्यक है। स्वस्थ्य रह कर ही हम धन, यश, एकता और प्रेम प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। □

हिंदू राष्ट्र के सजग प्रहरी

जन-ज्ञान मासिक का नमूना

मुफ्त मंगाएं

केवल ५० पैसे का डाक टिकट भेजकर

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्यात्म धारा

हिंसक को मोक्ष धन नहीं मिलता

—श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ओ३म् न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्य्ये दिवि ॥
—सा० उ० ४-४-३-२

(दुष्टुतिः) बुरी कीर्ति वाला, दुष्ट साधनों वाला (द्रविणोदेषु) धन-दाताओं में (न) नहीं (शस्यते) गिना जाता, अच्छा माना जाता । (स्रेधन्तम्) हिंसक को (रयिः) धन मोक्ष धन, (न) नहीं (नशत्) प्राप्त होता है। हे (मघवन्) पूजनीय धनवन् भगवन् ! (मावते) मेरे जैसे के लिए (पार्य्ये) पार पाने योग्य (दिवि) प्रकाशावस्था में (देष्णम्) देने योग्य (यत्) जो धन है, (सुशक्तिः) उत्तम शक्ति वाला मनुष्य (इत्) ही (तुभ्यम्) तेरे निमित्त (उसको प्राप्त करता है) ।

इस मन्त्र में जिस धन की चर्चा है, वह साधारण धन—धन-धान्य, मकान, पशु आदि नहीं । वरन् शांति रूप धन है । वेद में कहा भी है— शं पदं मघं रयीषिणे (सामवेद संहिता) धनाभिलाषी के लिए शांति-रूपी धन ही पदं—प्राप्त करने योग्य है । लौकिक धन-धान्य तो चोर-डाकुओं के पास भी होता है । वैसे भी धन की अधिक मात्रा प्रायः अन्याय अत्याचार अनाचार से ही कमाई जाती है । किंतु इस धन से बुद्धिमानों की तृप्ति नहीं होती । याज्ञवल्क्य जब घर छोड़कर संन्यासी बनने लगे, तब उन्होंने अपनी धर्मपत्नी मैत्रेयी से कहा, आ मैत्रेयी, तेरा बंटवारा कर दें । इस पर मैत्रेयी ने पूछा—

यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्, स्या न्वहं तेनामृता (बृहदा. ४-५-३)

भगवन् ! यदि यह धन-धान्य से पूर्ण सम्पूर्ण पृथिवी मेरी हो जाये तो क्या मैं अमृत हो जाऊंगी ?

सत्यदर्शी यथार्थ वक्ता याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं—

नेति नेति···यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्याद्, अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन (बृहदा. ४-५-३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं, नहीं···जैसे धनधान्य और सामान वालों का जीवन होता है, वैसे ही तेरा जीवन भी होगा। अमृतत्व की—मुक्ति की आशा-संभावना धन से नहीं हो सकती।

मैत्रेयी ने इस पर कहा—

येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम् यदेव भगवन् वेद तदेव मे ब्रूहि (बृहदा. ४-५-४)

जिससे मैं मुक्त न हो सकूं, उससे मेरा क्या प्रयोजन? महाराज! मोक्ष का जो भी साधन आप जानते हैं वही मुझे बताइये।

धन के प्रति कितनी ग्लानि है। कितना गहरा निर्वेद है। सचमुच मोक्षाभिलाषी, शांति की कामना वाला चंचल धन को कैसे चाहेगा? जिसके सम्बन्ध में वेद स्वयं कहता है—

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्राऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ॥

(ऋ० १०-११७-५)

अरे, धन तो सचमुच एक से दूसरे के पास जाते हुए रथ के चक्रों की भांति अदलते-बदलते रहते हैं।

ऐसे विनश्वर भौतिक धन में अविनाशी के अभिलाषी की अभिलाषा कैसी!!!

इसी वास्ते प्रकृत मन्त्र में कहा है—

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते

दुष्ट साधनोंवाला मनुष्य धनदाताओं में नहीं गिना जाता।

जब उसके पास है नहीं, तब देगा कहां से। वेद पाने की बात न कहकर देने की कहता है। क्योंकि वेद दान की महत्ता का प्रचारक है। ऋग्वेद ने तो स्पष्ट कह दिया—

न दुष्टती मर्त्यो विन्दते वसु (ऋ०७-३२-२१)

मनुष्य दुष्ट उपायों से धन नहीं प्राप्त कर सकता।

दूसरे चरण में बहुत स्पष्ट कहा है—

न स्रेधन्तं रयिर्नशत्

हिंसक भी धन नहीं प्राप्त कर सकता।

कितना ही शास्त्रवेत्ता क्यों न हो, जब तक हिंसादि दुष्ट उपायों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं छोड़ता, तब तक शांतिधन, आत्म सम्पत्ति को नहीं प्राप्त कर सकता। यम ने मार्मिक शब्दों में नचिकेता को समझाया था……

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः। नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् (कठो० २-२२)

जो दुराचार से नहीं हटा, जो चंचल है, जो प्रमादी है, सावधान नहीं है, जिसके मन में क्षोभ है, वह बुद्धि से, ज्ञान से इस आत्मा को प्राप्त नहीं कर सकता।

आत्मज्ञान के बिना शांति नहीं। जब प्रमाद तथा अनाचार से आत्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती, तब उसकी प्राप्ति के बाद प्राप्त होने वाली शांति-सम्पत्ति की प्राप्ति की आशा कैसे की जा सकती है।

वेद कहता है, देने योग्य धन को कोई शक्तिशाली ही प्रभु समर्पण की भावना से प्राप्त कर सकता है।

बलहीन का संसार में ही ठिकाना नहीं, परलोक की तो बात ही क्या? वहां के लिए उपयुक्त धन कमाने को बड़ा बल चाहिये। □

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में

सहयोग दीजिए।

अपने मित्रों-परिचितों को

भी आजीवन सदस्य

बनाइए।

आप आज ही ५०१ रुपया भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुलसी चिकित्सा

—श्री वसन्त "प्रभु अर्पित"

(१) ज्वर—१० ग्राम हरे पत्ते, ३ ग्राम काली मिर्च के साथ पीसकर गोलियां बना कर सुखा लें। प्रातः दोपहर और सायंकाल दो-दो गोलियां गर्म जल से रोगी को दें। मच्छरों के कारण होने वाले मलेरिया ज्वर से बचने के लिए तुलसी के पत्तों का धुआं कीजिए—मच्छर भाग जाएंगे। इस धुएं से खटमल प्लेग तथा अन्य रोग फैलाने वाले कीटाणु भी दूर चले जाएंगे।

(२) वमन—जी मिचलाता हो, उल्टी आती हो या शीत का प्रकोप हो तो तुलसी के पत्तों की चाय का सेवन तुरन्त लाभ पहुंचाता है।

(३) कंठ की जलन—यदि कंठ बन्द हो गया हो या उसमें जलन और पीड़ा हो तो तुलसी के बीच आधा ग्राम पान में रखकर सेवन करें।

(४) कान की पीड़ा—तुलसी के पत्तों का रस निकाल कर कानों में डालें—पीड़ा ठीक हो जाएगी।

(५) चर्म रोग—तुलसी के पत्तों को नींबू के रस में रगड़ कर लगाइए दाद खुजली आदि में लाभ होगा।

(६) छाइयां—तुलसी के पत्तों को पीस कर मक्खन में मिला कर मुख पर मलिए। छाइयां और काले दाग दूर हो जाएंगे।

(७) मूत्र रोग—यदि मूत्र रुक रुक कर आता हो और जलन आदि होती हो तो तुलसी बीज ३ ग्राम २०० ग्राम जल में थोड़ी-सी मिश्री मिला कर कुछ दिन नियमित रूप से दें। लाभ होगा।

(८) वीर्य्य रोग—स्वप्न दोष में तुलसी के बीज ४ ग्राम दिन में एक बार ताजे जल से १५ दिन खिलायें। शीघ्र पतन के लिए ४ ग्राम तुलसी के बीज गाय के गर्म दूध में १५ दिन सेवन करने से रोग निवृत्ति हो जाएगी।

ज्ञातव्य—तुलसी के पत्तों और बीजों को औषधि के रूप में प्रयोग करने वालों को खटाई, पकवान, गर्म पदार्थ तथा समस्त अभक्ष्य पदार्थों यथा अण्डों मांस मछली, मदिरा आदि का सर्वथा परित्याग करना होगा अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा।

तुलसी के पत्ते चबा कर खाने में कोई पाप नहीं है, जैसा बहुधा कहा जाता है। इससे केवल दांतों की पालिश उतर जाती है और वे कमजोर हो जाते हैं अतएव उन्हें जल से निगलना ही उचित है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक साहित्य में नारी का स्थान

—डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी,

वैदिक साहित्य में जितना उच्च स्थान 'नारी' का है, उतना किसी देश और धर्म में नहीं। वैदिक साहित्य के अनुसार नारी 'यज्ञ' करवाने का अधिकार रखती है। यदि पुरुष 'आचार्य' हो सकता है तो आर्य नारी 'आचार्या' हो सकती है। किन्तु आचार्य की स्त्री 'आचार्याणी' 'आचार्या द्रणत्कडच' नामक पाणिनि के सूत्र से हुई। मुसलमानों में कोई नारी "इमाम" नहीं बन सकती, और न ईसाइयों में 'नारी' 'बपतिस्मा' करवा सकती है। यह वैदिक धर्म ही है जिसमें 'नारी' शौर्य, शक्ति, विद्या' एवं 'मेधा' का प्रतीक है। दिव्य नामों में प्रथम स्थान' नारी के नाम का है—यथा—रमाकांत व रमाशंकर, उमेश, रमेश=रमा-ईश, राधाकृष्ण, सीतारामादि। ये सभी उदाहरण इस बात के सूचक हैं कि 'आर्य नारी गरिमा मयी हैं एवं उसका स्थान सर्वोपरि है—तभी तो वैदिक साहित्य में कहा गया है-"शुद्धाः पूता योषिता यज्ञिया इमाः।" ऋग्वेद-अर्थात् नारी पवित्र, एवं यज्ञसंचालिका है। यहां 'नारी' ग्रहस्थाश्रम की संरक्षिका है। चाणक्य नीति के अनुसार स्त्री के अनेक गुण हैं—

"कार्मेषु मन्त्री करणेषु दासी
भोज्येषु माता शयनेषु रंभा।
धर्मानुकूल क्षमया धरित्री भार्येह
षाड्गुण्यवती हि दुर्लभा ॥"

यही कारण था कि अज ने अपनी पत्नी की आकस्मिक मृत्यु को अपनी मृत्यु माना जिसका कारण इन्दुमती की योग्यता थी—

"गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रिय शिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणा विमुखेन मृत्युना हरता
त्वां वत कि न मे हृदम् ॥"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य एवं सुविख्यात कवि जय शंकर प्रसाद ने नारी को 'श्रद्धा' बताया है—

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पद तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में॥"

खेद का विषय है कि आधुनिक नारी ने अपनी वैदिक युगीन गरिमा को विस्मृत कर स्वयं को 'विज्ञापन' तथा भोग विलास की वस्तु बना लिया है। कहने को उच्च पदासीन है, उच्च शिक्षित है, किन्तु फिर भी उसका जीवन कितना अशांत एवं आडम्बरपूर्ण है, जिसका अनुभव वह स्वयं कर रही है। उसकी अशान्ति का मूल उसकी अनन्त इच्छाओं के साथ, उसकी ज्ञानेच्छा की समाप्ति है। स्वाध्याय की अभिरुचि समाप्त प्राय है। वह जीवन का अर्थ मात्र उदरपूर्ति समझ कर घर गृहस्थी व अन्य क्रिया कलापों को भारवत् ढो रही है।

सजग नारी जगत् के साथ-साथ पुरुष समाज को भी उसके प्रति उदात्त दृष्टिकोण रख कर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना समुचित योगदान करना चाहिए। नारी 'परिवार' की ही नहीं समाज और राष्ट्र की निर्मात्री है। इतने महत्त्वपूर्ण दायित्व का वहन उसे बुद्धिपूर्वक ज्ञानालोकित होकर करना चाहिए तभी उसका जीवन सफल है। ज्ञान पिपासा की तृप्ति सद् ग्रन्थों के पठन पाठन, से ही सम्भव है, स्वाध्याय के लिए आर्ष साहित्य व अन्य जीवनोपयोगी साहित्य अपेक्षित है। "स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्या चन्द्र मसाविव" ऋग्वेद के इस मन्त्रानुसार हमें स्वस्ति पथ का अनुगमन करना चाहिए। संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं—"अग्रणी" और "अनुगामी।" यदि सामर्थ्यवान् है तो नर और नारी अग्रणी बनें अन्यथा अनुगमन करने वाले बनें। चन्द्रमा में अपना प्रकाश नहीं होता, वह सूर्य के प्रकाश से आलोकित है। हमारी जो गरिमामयी सांस्कृततिक परम्परा है, वही हम सभी की मार्गदर्शिका बने, जिस पर चल कर ही हम स्वर्णिम स्वप्नों को साकार कर सकेंगे। नारियों को भी संकीर्ण वैचारिक परिधि से बाहर आकर अपने दायित्वों का निर्वाह करना है। जब वह स्वयं को पहचान लेगी, तभी उसका सन्तुलित एवं कल्याणमय जीवन सम्भव है। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रीमती शकुन्तला आर्या का अभिनन्दन

नई दिल्ली १७ सितम्बर को स्त्री आर्य समाज लाजपत नगर की ओर आर्य नेत्री व कई धार्मिक-सामाजिक संगठनों की सक्रिय कार्यकर्त्री श्रीमती शकुन्तला आर्या के स्वास्थ्य लाभ के लिए सामवेद पारायण यज्ञ एवं प्रार्थना के बाद कई संगठनों की पदाधिकारियों ने उनके सामाजिक कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की और उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया। इस आयोजन में दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य महिलाओं ने भाग लिया।

क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आपको अपने धर्म, संस्कृति और परम्पराओं पर अभिमान है ?

क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की भावना रखते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में हो तो

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के स्वयं सदस्य बनें

और

अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

हिन्दू जागो ! देश बचाओ !!

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दिर
नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२२ अक्तूबर को विजयदशमी के अवसर पर

आओ, हम रावण को जलायें

—योगेन्द्र, नई दिल्ली

हाँ, तो बच्चों, तुम सभी रावण के नाम से ही नाच उठते हो। तरह-तरह के खयाल आते होंगे तुम्हारे मन में-क्या था रावण? कैसा था? कौन था? यह तो तुम सभी जानते हो कि रावण श्रीराम के हाथों मारा गया। रावण के नाम से ही कल्पना होने लगती है दस सिर वाले व्यक्ति की। दस सिर एक ही देह पर—कुछ अजीब-सा, बेढंगा सा रूप रहा होगा उसका—निश्चय ही आम आदमी से भिन्न। जिसे देखते ही या तो हंसी छूट जाये या फिर दहशत पैदा हो जाये मन में। लेकिन दस सिर वाले व्यक्ति की कल्पना किस्से-कहानियों या हास्य-व्यंग्य की दृष्टि से भले ही सही हो, वास्तविकता की दृष्टि से नहीं। क्योंकि प्रकृति के कुछ नियम हैं और वह उन्हीं नियमों पर निरंतर चल रही है। जैसे धरती से अनाज, अनाज से जीवन, वायु से सांस, अग्नि से ताप, स्त्री और पुरुष के संयोग से संतान, वृक्षों से से छाया, बादलों से वर्षा आदि। आज तक किसी ने वर्षा से बादल को बनते नहीं देखा। छाया से वृक्ष उत्पन्न नहीं होते। सांस से वायु नहीं बनती। अनाज से धरती उत्पन्न नहीं होती, तो फिर एक ही देह पर दस सिर कैसे हो सकते हैं? दस सिरों का होना निश्चय ही अप्राकृतिक और सृष्टि के नियम के विरुद्ध है। रावण के दस सिर ज्ञान की दृष्टि से तो नहीं हो सकते, लेकिन उसे दस सिर वाला करते हैं···। क्यों? चारों वेद और छह शास्त्रों का ज्ञाता होने के कारण एक बात और। रावण मरा कहां है? वह तो राम के हाथों मर कर अमर हो गया और आज भी जी रहा है। प्रतिनिधित्व कर रहा है अपने उत्तराधिकारियों का—भ्रष्टाचार, अनैतिकता, असमानता और अमानवीयता के रूप में सशरीर राम आज नहीं है, लेकिन रावण हंस रहा है।

राम प्रतीक है ज्ञान का। ज्ञान प्रतीक है सत्य का। सत्य प्रतीक है अग्नि का। ज्ञान के माध्यम मे, सत्यरूपी अग्नि से ही रावण को जलाया जा सकता है, पच्चीस पैसे की माचिस से नहीं। आज हम बांस और कागज के बने बेढंगे पुतलों को रावण कहते हैं और विजयदशमी के दिन माचिस की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ती ली से जला कर खुश हो जाते हैं कि हमने रावण को जला दिया। इस तरह की परंपरा हमें आनंदित भले ही करती हो, लेकिन हमारे मन में बैठा ईर्ष्या और द्वेष का रूप लिए रावण निश्चय ही हमारी विवेकशून्यता पर हंस रहा होता है।

आओ, उस हंसते हुए रावण को अपने सत्य ज्ञान की अग्नि से जला दें। अग्नि हम में तभी उत्पन्न होगी, जब हम भ्रष्टाचार, अत्याचार, अमानयता, अनैतिकता और असमानता को मिटा कर रह सकेंगे। हम एक हैं—रतीय। तब रावण का कोई भी वार हमें खंडित नहीं कर सकेगा, बल्कि हम में राम को देख स्वयं ही जल जायेगा। □

ऋषि मन्त्रद्रष्टा हैं; मन्त्रकर्त्ता नहीं

वेदगोष्ठी में आचार्य विशुद्धानन्द का शोध प्रबन्ध

१४ सितम्बर को नई दिल्ली के कटबारिया सराय में लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ में हुई वेदगोष्ठी में मुकुल वृन्दावन के कुलपति आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र ने "ऋषि मन्त्रद्रष्टा हैं, मन्त्रकर्त्ता नहीं" विषय पर शोध प्रवन्ध पढ़ा। गोष्ठी का आयोजन वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति की ओर से किया गया था। उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री हंसराज खन्ना इस आयोजन के मुख्य अतिथि थे। गोष्ठी प्रारम्भ होने से पूर्व 'आर्यजगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने खन्ना जी का स्वागत किया और अभ्यागतों से उनका परिचय कराया।

गोष्ठी के अन्त में श्री हंसराज खन्ना ने समिति की ओर से विशुद्धानन्द जी को शाल, नारियल और ५०० रु का पुरस्कार भेंट किया। खन्ना जी ने अपने भाषण में उद्धरण देकर बताया कि अनेक विदेशी विद्वान् वेदों के गहन ज्ञान से प्रभावित थे।

अगले दिन (१५ सितम्बर को) आर्यसमाज मन्दिर करौलबाग में इस शोध प्रबन्ध पर विस्तृत रूप से विचार हुआ। इसमें मुख्यतः दर्शनशास्त्रों के विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री और विशुद्धानन्द जी के डा. गुरु दशरथ श्रोत्रिय ने अपने विचार प्रकट किये।

दोनों दिन गोष्ठी का संचालन श्रद्धानन्द कालेज (अलीपुर) के प्राध्यापक प्रो० वेदव्रत 'आलोक' ने किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साईचिन ग्लेशियर में लापरवाही भारत के लिए महंगी साबित होगी

विश्व के सबसे ठंडे स्थान तथा सबसे बड़े और ऊंचे ग्लेशियर— साईचिन ग्लेशियर में भारत और पाकिस्तान के बीच एक अघोषित युद्ध हो रहा है। उत्तरी कमाण्ड के ले.–जनरल छिब्बर के अनुसार इस युद्ध में पिछले एक वर्ष में १००० पाकिस्तानी सैनिक मारे जा चुके हैं और हजारों घायल हो चुके हैं। भारत के ३ सैनिक मरे हैं, मगर २७ सैनिक एक हिमालय (एवलांशे) में दबकर मर चुके हैं।

१८ हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित साईचिन ग्लेशियर पर अचानक पाकिस्तान अपना हक जताने और उस पर अपना अधिकार जमाने के लिए इतना व्यग्र क्यों हो गया है? मई, १९८४ में जब पहली बार पाकिस्तानी सेना ने इस ग्लेशियर पर अकारण हमला किया था, तब पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने स्वीकार किया था कि "पाकिस्तानी सैनिकों ने जब १९८१ में पहली बार इस क्षेत्र में अनधिकृत रूप से प्रवेश किया था, तब भारत ने उसका विरोध किया था, मगर पाकिस्तान ने इस विरोध और ग्लेशियर पर भारत के दावे को नामंजूर कर दिया था।

अभी हाल में पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने स्वीकार किया था कि इस क्षेत्र में कई बार भारतीय और पाकिस्तानी सैनिकों के बीच मुठभेड़ हो चुकी है स्वीकारोक्ति उनके एक अन्य कथन को, जिसे जनरल जिया भी कई बार दोहरा चुके हैं कि "भारत पर पाकिस्तान कभी आक्रमण नहीं करेगा" झूठा सिद्ध करता है।

पाकिस्तान द्वारा साईचिन को अपने अधिकार में लेने की साजिश में चीन और अमरीका भी शामिल हैं। तीनों देश इस ग्लेशियर को अपने–अपने लिए सामरिक महत्त्व का मानते हैं।

चीन के, जो कोदारी से काठमांडू तक एक सड़क का निर्माण कर चुका है, और कोदारी से भारत-नेपाल सीमा पर स्थित सुरसद तक एक और सड़क बनाने में लगा हैं, लिए साईचिन ग्लेशियर का महत्व यह है कि उसके पाकिस्तान के अधिकार में आने के बाद, वह वहां अपना एक अड्डा बना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस समय जब यहां सांप्रदायिक दंगे हुए, २१ आर्य समाजियों को पकड़ कर उन पर मुकद्दमा चलाया गया। इसमें ठाकुर उमराव सिंहजी तथा पं० सोहनलाल जी भी थे पं० नरेन्द्रजी को इनकी ओर से गवाही देने हाईकोर्ट में उपस्थित होना था पर चार दिन पहले ही उन्हें मनानूर में नजर बंद कर दिया गया। हैदराबाद सरकार ने चंचलगुडा जेल में लाकर एक विशेष अदालत में पण्डितजी का बयान लिया। धूलपेठ निजाम के शासनकाल में विद्रोहियों का गढ़ समझा जाता था और इसमें सन्देह नही कि वीर राजपूतों, लोध क्षत्रियों की इसी बस्ती ने स्वतन्त्रता संग्राम के समय वीरतापूर्वक अत्याचारों का मुकाबला किया। इन्हें घोर आपत्तियां झेलनी पड़ीं। आर्य समाज के आन्दोलन में इनका बड़ा योग रहा। पण्डितजी को जिन लोगों ने बहुत निकट से देखा है, वे जानते हैं कि उनमें पक्षपात नाम को नहीं था। प्रत्येक वर्ग तथा जाति के लोग उनके व्यक्तिगत मित्र थे, जिनमें बहुत से मुसलमान भी थे। पुलिस कार्रवाई के बाद की परिस्थितियों का मुकाबला उन्होंने शांति समितियों को स्थापित करके किया। उन्होंने मुस्लिम मुहल्ला का दौरा किया तथा बहुत-से मुसलमानों की यथासंभव सहायता की, कांग्रेस में अच्छे मुसलमान उन्हीं के प्रयत्नों के कारण आ सके। पण्डितजी ने 'हैदराबाद की हिन्दू-मुस्लिम एकता' पर भी पुस्तक लिखी है नवयुवकों में नवयुवक हृदय सम्राट् कहलाने लगे। बोलते बड़ा मीठा और सरिता के समान। सरस्वती उनकी जबान पर बैठी हुई थी। न किसी की निन्दा करते थे और न किसी का दिल दुखाते। पण्डितजी बहुत अच्छे पत्रकार भी थे। निजाम के समय वैदिक आदर्श सप्ताहिक का संपादन इतने अच्छे ढंग से किया कि पत्रिका की गणना शीघ्र ही उर्दू के उच्चकोटि के समाचारपत्रों में होने लगी।

१९४६ में मुशीराबाद में जो स्टेट कांग्रेस अधिवेशन हुआ उसके आप ही मंत्री थे। पुलिस कार्रवाई के बाद पं० नरेन्द्रजी प्रांतीय कांग्रेस कमेटी आन्ध्र और नगर कांग्रेस के प्रधान चुने गये। जनता में वे जनार्दन दिखाई देते थे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे और नानलनगर अधिवेशन की स्वागत समिति के महामंत्री। पंडितजी के व्यक्तिगत गुणों तथा राष्ट्रीय भावनाओं का प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री बहुत आदर करते थे।

आर्य समाज तथा कांग्रेस के अतिरिक्त पं० नरेन्द्र जी कई सभाओं, सोसायटियों तथा शिक्षा संस्थाओं से सम्बन्धित थे। हिन्दी प्राच्य महाविद्यालय, हिन्दी प्रचार सभा, भारत सेवक समाज, आदिम जाति सेवक संघ, हरिजन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खादी समिति और कितनी ही ऐसी राष्ट्रीय संस्थाएं उनकी योग्यता तथा पूर्ण निष्काम सेवाओं से लाभान्वित हुई। पं० नरेन्द्रजी उन लोगों में थे जिनके व्यक्तित्व से कुर्सी तथा समाज की शोभा होती है। अपने व्यक्तित्व में स्वयं एक शानदार संस्था थे।

पंडितजी की वीरता व साहस ने स्वयं मुसलमानों को तब चकित कर दिया जब इत्तेहादुल मुस्लिमीन की एक विशाल सभा में पंडित जी उपस्थित थे और नवाब बहादुर यारजंग सरकार की अपनाई हुई नीति पर टीका-टिप्पणी करते हुए कह रहे थे कि तीन बालिश्त के नरेन्द्र ने सारे निजाम राज्य को हिलाकर रख दिया है।

पंडित जी निजाम के शासन काल में जिस निर्भीकता से बोलते और टीका-टिप्पणी करते थे, उसका अनुमान उनके इन शब्दों से हो सकता है—हैदराबाद हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा जेलखाना है। १९४५ में हशमतगंज (वर्तमान रामकृष्ण धूतगंज) की एक विराट सभा में आपने कहा था—'हमारा पहला काम हैदराबाद के चित्रपट को बदलना है जब हम सफल हो जायेंगे तो शासन की कोई शक्ति हमें आगे बढ़ने से रहीं रोक सकेगी। जनता की मांगों के आगे सरकार को झुकना ही पड़ेगा। पण्डित जी सरकार को खरी-खरी सुनाने में तनिक भी संकोच नहीं किया करते थे और न यह सोचते थे कि परिणाम क्या होने वाला है। पं० नरेन्द्र जी के साहस तथा उनकी निडरता की चर्चा घर-घर सुनाई देती है। निजाम के शासनकाल में वे कभी झुके नहीं। उन्हें कड़े से कड़ा दण्ड मिला पर वे हंसते-मुस्कराते सारी आपत्तियों को झेल गये। रजाकारों के भयंकर समय में भी वे पैदल तथा तांगे पर खुले आम घूमते फिरते थे। उनके साहस की जितनी प्रशंसा की जाये, कम है।

पं० नरेन्द्र जी एक सच्चे देशभक्त थे। जहां उन्हें देश के अहित में कोई बात दिखाई दी, उन्होंने सरकार को ललकारा और डरे नहीं, आपके गुणों को दो शब्दों में तो लिखा नहीं जा सकता पर हां लिखना हो, तो लिखा जायेगा कि वे जिन्दा शहीद थे।

बचपन का निखरता तेज ही जवानी में अंगारा बनकर चमका तो फिर दिन की संध्या में चेहरे की लालिमा कैसे समाप्त होती। तीनों कालों में ओजपूर्ण रहे। इन्हीं दृढ़ निश्चयों ने आपको हैदराबाद में तथा समस्त आर्य जगत् में लोकप्रिय बना दिया। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं के पवित्र स्थलों पर छाया संकट

—सदाजीवतलाल

हिन्दुओं के अनेक पवित्र स्थलों पर आजकल जो गहरा संकट छाया है, उससे उनके अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हो गया है। इससे भी बढ़कर दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि हिन्दू, जिन्हें इन स्थलों की सुरक्षा और अक्षुण्णता के प्रति जागरूक होना चाहिए था, इस बारे में पूरी तरह उदासीन हैं, जैसे इन स्थलों से उनका कोई वास्ता ही न हो।

वाराणसी स्थित १५४ वर्ष पुराने गुरुधाम मन्दिर का जिसकी स्थापना भूतपूर्व महाराजा जयनारायण घोषाल ने की थी, अस्तित्व इस मन्दिर की जमीन पर अनधिकार हक जमाने वालों के कारण संकट में पड़ गया है। उधर बद्रीनाथ का पवित्र मन्दिर धर्मशालाओं के अन्धाधुन्ध और अविवेकपूर्ण निर्माण तथा उसके आसपास की पहाड़ियों में हो रही वन कटाई के कारण, कब तक खड़ा रह सकेगा, कहना कठिन है। हिमालय के विकास बोर्ड के अध्यक्ष डॉक्टर एस मुद्‌गल के अनुसार बद्रीनाथ और जोशीमठ के बीच प्रायः होने वाले भू-खलनों ने इस संकट को और गहरा कर दिया है। आने वाले वर्षों में शायद वहां पहुंचना भी असंभव हो जायेगा।

द्वारिका स्थित भगवान् श्रीकृष्ण का प्राचीन मन्दिर आजकल दो सरकारी विभागों के बीच निरन्तर चल रहे युद्ध का क्षेत्र बना हुआ है। एक ओर है भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की सेना और दूसरी ओर मोर्चे पर डटी है जामनगर के कलैक्टर के कार्यालय की 'सेना'।

हरिद्वार को छोड़कर, भारत के प्रायः सभी तीर्थस्थानों पर मांस, मदिरा और तम्बाकू की बिक्री खुलेआम और धड़ल्ले से होती है। इसके बावजूद अधिकतर राज्य सरकारें अपने राज्य में कम से कम एक तीर्थस्थान को 'पवित्र नगर' घोषित करने पर आमादा हैं। हरियाणा कुरुक्षेत्र को यह सम्मान प्रदान कर चुका है और अमृतसर को भी 'पवित्र नगर' घोषित किया जाए, यह मांग काफी पुरानी हो चली है।

चूंकि हिन्दुओं के पास अपने पवित्र स्थलों को कायम रखने की किसी योजना पर विचार करने और उसे क्रियान्वित करने का कोई समय नहीं है, अतएव हम प्रधानमन्त्री से ही अनुरोध करते हैं कि गंगा के पवित्रीकरण के बाद वे हिन्दुओं के पवित्र तीर्थस्थलों के पवित्रीकरण की कोई योजना आरंभ कर हमें कृतार्थ करें। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाणक्य के नीति वचन

संकलनकर्ता—राधेलाल मित्तल

१. अपने मन की सोची हुई बात को मुख से न निकाले किन्तु सोच-विचार से ही भली प्रकार रक्षा करे और गुप्त ढंग से ही उस कार्य को करे।

२. बुद्धिमानों को अपने लड़कों को नाना भांति से सदाचार की शिक्षा देनी चाहिये क्योंकि नीति जानने वाले और शीलवान् होने से वे कुल में पूजित होते हैं।

३. कुल का पता आचार, देश का पता बोली से, प्रेम का पता आदर से तथा शरीर का पता भोजन से चलता है।

४. रूप और यौवन से युक्त, बड़े कुल में उत्पन्न पर विद्या विहीन मनुष्य गन्ध रहित पलाश पुष्प के समान शोभित नहीं होता है।

५. सामर्थ्य से कोई वस्तु भारी नहीं व्यसायी लोगों को कोई प्रदेश दूर नहीं, सुन्दर विद्या वाले का कोई प्रदेश नहीं है।

६. मेरा यह समय कैसा है, मेरे मित्र कौन है, मेरा देश कौन-सा है, मेरा लाभ हानि क्या है, मैं किसका हूं और मुझमें क्या शक्ति है बार-बार सोचना चाहिये।

७. बिना अग्निहोत्र के वेदों का पढ़ना व्यर्थ है बिना दान के यज्ञादि कर्म नहीं होते बिना भाव कोई सिद्धि नहीं होती, अतः भाव ही सबका कारण है।

८. मांसाहारी, मदिरापान करने वाले निरक्षर मूर्ख, पुरुषाकार पशुओं के बोझ से पृथ्वी पीड़ित है।

९. आंखों से देखभाल कर पैर रखे, कपड़े से छानकर पानी पीवे, शास्त्रानुसार वाक्य बोले और मन से सोच-विचार कर कार्य करे।

१०. जो सुख चाहे तो विद्या छोड़ दे, विद्या चाहे तो सुख छोड़ दे, सुखार्थी को विद्या कहां और विद्यार्थी को सुख कैसे हो सकता है।

११. जो मनुष्य आने वाले दुःखों का उपाय पहले ही कर लेता है और जिसकी बुद्धि विपत्ति आ जाने पर शीघ्र ही उपाय भी सोच लेती है वे सदा सुख से आगे बढ़ते हैं। और जो यह सोचता है कि भाग्य में जो होगा वही होगा, ऐसा मनुष्य नष्ट हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२. धर्महीन मनुष्य जीता भी मरे के समान है, धर्मात्मा मनुष्य मरा हुआ भी चिरंजीवी रहता है।

१३. जैसे हजारों गौवों के रहते बछड़ा अपनी मां के पास जाता है वैसे ही जो कुछ कर्म किया जाता है वह उसके कर्त्ता को ही मिलता है। □

क्या आपको योग्य संस्कारवान् वर-वधू की तलाश है ?

यदि हां तो जन ज्ञान (मासिक) में विज्ञापन दीजिए

जन-ज्ञान मासिक देश-विदेश के एक लाख से भी अधिक धर्मपरायण व संस्कारवान् लोगों से आपको मिलवायेगा उन तक आपकी बात पहुंचायेगा !

मात्र २१ रु० की दक्षिणा के साथ
अपना विज्ञापन लिख भेजिये
और फिर देखिये सही वर-वधू की
आपकी तलाश कितनी जल्दी
पूरी होती है।

विज्ञापन व्यवस्थापक
जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७, हरध्यानसिंह रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कांग्रेस की अन्तः कथा-३

लखनऊ अधिवेशन

दयानन्द संस्थान ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के लेखों का संग्रह इनसाइड कांग्रेस कुछ समय पूर्व प्रकाशित किया था।

अब यह पुस्तक धारावाहिक रूप में जन-ज्ञान में प्रकाशित की जा रही है। प्रथम दो लेख आषाढ़-श्रावण २०४१ के अंकों में प्रकाशित हो चुके हैं। अब आप तीसरा लेख पढ़िये—

लाहौर अधिवेशन के बाद पूरे वर्ष मैं कांग्रेस अभियान से अलग रहा। मुझे यह विश्वास हो गया था कि कमरा पालिटिक्स से गुलामी की बेड़ियां नहीं टूट सकतीं, मातृभूमि का उत्थान करने के लिए कठोर सदाचारी मनुष्यों की आवश्यकता होती हैं। और भारतीय मेरी समझ में, भौतिक, सामाजिक और सदाचारी दृष्टि से इतना नीचे गिर गए थे कि अगर भारतीय जनों में फिर से जान नहीं डाली जाती, तो इनमें कोई परिवर्तन होने की आशा नहीं की जा सकती थी।

मेरे मन की यह धारणा थी, जिससे प्रेरित होकर मैंने दसवीं बार ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ-प्रकाश का पारायण किया और आर्यसमाज के संस्थापक के निम्नलिखित (समुल्लास ८) सिद्धान्त के सच्चे महत्व को हृदयंगम किया—

दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मनान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था का इतिहास लिखे हैं, उसी का मान्य करना महापुरुषों का काम है।

अपने आध्यात्मिक गुरु के इस सिद्धान्त के अनुकूल आचरण करते हुए मैंने अपनी सारी शक्ति एक विश्वव्यापी पुरातन वैदिक धर्म, जो संसार की समस्त धार्मिक जातियों का आदि स्रोत है तथा प्राचीन ब्रह्मचर्य आश्रम की प्रणालियों के अनुसार एक शिक्षा प्रणाली स्थापित करने पर केन्द्रित कर दी। कुछ वर्षों तक संघर्ष करने के वाद आर्यसमाज गुरुकुल ने शिक्षा प्रणाली का एक पाठ्यक्रम प्रकाशित किया और उसे लोकप्रिय बनाने और उसके अनुकूल शिक्षा देने के लक्ष्य से एक संस्थान खोलने के लिए धन एकत्र करने का काम मुझे सौंपा गया।

इस मिशन को लेकर मैं सारे देश में भ्रमण कर रहा था, जिस समय दिसम्बर १८९९ में कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में करने की तैयारियां हो रही थीं। मैंने इस अवसर से लाभ उठाकर गुरुकुल के सन्देश को भारत के समस्त विभिन्न प्रांतों तक पहुंचाने की सोची और ठीक उस समय लखनऊ पहुंच गया, जब कांग्रेस अधिवेशन शुरू होने जा रहा था, जिसमें भाग लेने एक डेलीगेट बनकर लाहौर के बैरिस्टर श्री रोशनलाल आए हुए थे। मैंने अपने खर्चे पर कांग्रेस कैम्प में अपना शासन जमा दिया। उस समग १०रु. की डेलीगेट, फीस थी, जिसमें भोजन व्यवस्था शामिल थी, और यह खर्च देने वाले उन लोगों को, जो डेलीगेट नहीं थे, कैम्प में टिकने और मैस में खाने पीने की अनुमति मिलती थी।

लाहौर कांग्रेस के सेक्रेटरी ने मुझसे डेलीगेट बन जाने को कहा, क्योंकि १० रु० मैंने जमा कर ही दिए थे, परन्तु मैंने कांग्रेस प्रवंचना में भागीदार बनने से इनकार कर दिया। इसके वावजूद मुझे एक डेलीगेट बनने का प्रमाणपत्र दिया गया, और इस पर मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे बिना किसी प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये ही वह दिया गया था। डेलीगेटों के साथ बैठे मुझको स्वर्गीय बाबू गंगाप्रसाद वर्मा ने देख लिया और मुझे एक काम्प्लि-मेण्टरी विजिटर (निःशुल्क आगन्तुक) का टिकट देकर अपने साथ मंच पर बिठा लिया।

मंच पर बैठे हुए, मैंने जो पहली बात देखी वह यह थी कि मुसलिम डेलीगेटों की संख्या उससे चार गुनी अधिक थी, जितनी मैंने १८९३ के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाहौर अधिवेशन में देखी थी। मुसलिम डेलीगेटों में अधिकता लोगों ने अपने सामान्य सूती पोशाक के कपड़ों पर एक सोने-चांदी के काम वाले चोगे (पीछे लटकने वाले ओवरकोट) पहन रखे थे। अफवाहें उड़ रही थीं कि ये चोगे उनको हिन्दू धनी लोगों (अवध के ताल्लुकेदारों और राजाओं) ने पहनने के लिए दिये थे !

अधिवेशन में लगभग ४३३ मुसलिम डेलीगेट शामिल हुए थे, जिनमें कुछ ३० लोग लखनऊ शहर के रहने वाले थे। और इन मुस्लिम डेलीगेटों में से अधिकतर को निःशुल्क डेलीगेट की सीटें और खाने-पीने की सुविधाएं प्राप्त हुई थीं। सर सैयद अहमद की कांग्रेस-विरोधी लीग ने एक आम सभा में यह ऐलान कर रखा था कि कोई भी मुसलमान कांग्रेस का डेलीगेट न बने।

इसके जवाबी अभियान में कांग्रेस के लोगों ने अधिवेशन के चार दिन पहले रोज रात को सारे कांग्रेस कैम्प में दीवाली की जैसी रोशनी की और प्रतिदिन यह ऐलान किया कि उस रात को प्रवेश निःशुल्क होगा। इसका स्वभाविक परिणाम यह हुआ कि उन रातों को सारे चण्डूखाने खाली रहे, और लगभग ३० हजार हिन्दुओं और मुसलिम लोगों ने लगभग एक दजन सभाओं में भाग लिया। शामिल डेलीगेटों में सभी को इन सभाओं में निःशुल्क डेलीगेट बनाने के लिए चुना या छांटा गया। यह सब बातें लखनऊ कांग्रेस के संगठनकर्त्ताओं ने मुझे व्यक्तिगत तौर पर बताईं।

इस अधिवेशन में मुसलिम डेलीगेटों का प्रदर्शन उल्लेखनीय था। यथा—एक मुसलिम डेलीगेट उर्दू में लिखे एक प्रस्ताव को लेकर उसका समर्थन करने को उठकर खड़ा हुआ। वह बोलता है—"हजरात ! मैं एक मुसलिम डेलीगेट हूं !"

इस पर कोई हिन्दू खड़ा हो जाता है और मुसलिम डेलीगेटों के लिए तीन बार जिन्दाबाद के नारे लगाता है, जिन्हें इस जोशो-खरोशो के साथ तमाम लोग दोहराते है कि वह बयान के बाहर है। मुसलिम डेलीगेट फिर एकदम विरोधियों की उल्टी सीधी निन्दा करना शुरू कर देता है। श्रोता लोग इस चटपटी चुहलबाजी में खूब मजा लेते हैं, और उसमें वक्ता इतना बहक जाता है कि बिना उर्दू का प्रस्ताव पढ़े वह और बिना उस पर कोई विचार व्यक्त किए, जो उसे दिया गया था, अपना भाषण समाप्त करने लगता है, तो उसके पास पहुंच कर दूसरा उसके कान में धीरे से फुसफुसाता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
हुआ प्रस्ताव पढ़ने के लिए कहता है। इस पर मुसलिम डेलीगेट अपनी गलती मान लेता है, इतने स्पष्ट शब्दों में कि श्रोतागण आसानी से सुन लेते हैं, और एक-एक कर प्रस्ताव के उर्दू तर्जुमे को पढ़ता है।

पहले की तरह इस समय भी कांग्रेस अभियान एक बैठक के कमरे की तमाशबीनी मात्र थी। लोकमान्य तिलक जेल से रिहा हो चुके थे, और डेलीगेट बनकर लखनऊ आए हुए थे। जिस समय उन्होंने पण्डाल में प्रवेश किया, और बम्बई के डेलीगेटों के बीच अपनी सीट पर बैठने वाले थे, किसी ने उन्हें पहचान लिया। वह उठकर खड़ा हो गया, और उसने जनता के नेता के लिए तीन बार जिन्दाबाद के नारे लागाये। इस पर मंच पर बैठे लोगों समेत, केवल लगभग एक दर्जन ताल्लुकेदारों-नवाबों के सिवाय, सारे श्रोतागण उठकर खड़े हो उए। विराट् सभा के लोगों ने उन्हें मंच पर लाने के लिए गुहार लगाई, जिसे सुनकर ताल्लुकेदारों नवाबों के चेहरे खौफ से पीले पड़ गए। उन्हें भय था कि वह क्रान्तिकारी नेता सब किया कराया चौपट कर देगा। लेकिन लोकमान्य ने अपनी सीट से एक भी इंच हटने से इनकार कर दिया, जिससे अल्पमत नेताओं ने राहत की ठण्डी सांस ली।

यह घटना इस लखनऊ अधिवेशन की है, जहां पहले-पहल मध्यकालीन अवकाश के आधे घण्टे में मैंने उन्हें देखा और उनसे मिला। इस मुलाकात के अपने इस महान् देश भक्त के बारे में विचार और हृदयोद्गार उनके देहान्त के बाद उनकी स्मृति में लिखकर पुस्तकरूप में प्रकाशित लेखों के संग्रह में छपने को दिए थे। सारे नकली कांग्रेसी नेताओं के बीच एक वही भारतीय स्वराज्य का असली नर-नाहर नेता था।

एक यह सोशल कानफरेन्स थी, जिसके प्रस्ताव तैयार करने और विचार विनिमय को दिशा देने के लिए श्री रानाडे आए हुए थे। इस सोशल कानफरेन्स को पहली और अन्तिम बार 'नेशनल' (राष्ट्रीय) संज्ञा दी गई। प्रारम्भ से ही यह एक हिन्दू कानफरेन्स थी, लेकिन श्री रानाडे इसमें सब ऊंचे नीचे स्तरों के हिन्दुओं और मुसलमानों को एक राष्ट्रीय सूत्र में बांधना चाहते थे। किन्तु सारे डेलीगेटों में केवल एक मुसलिम डेलीगेट था, जो इस नई इंडियन नेशनल कानफरेन्स का सदस्य बना। वह थे बरेली के एक मुफ्ती साहेब।

बाल विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्ष में जब एक हिन्दू डेलीगेट ने अपना प्रस्ताव पेश किया, और मैंने उसका समर्थन किया तो एक सनातनी पंडित ने उसका विरोध किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इस प्रस्ताव पर मुफ्ती साहेब ने बोलने की अनुमति मांगी। लेकिन अध्यक्ष (स्वर्गीय राय बैजनाथ) ने मुफ्ती साहेब से कहा कि प्रस्ताव केवल हिन्दुओं से सम्बन्धित है, इसलिए उनके बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह सुनकर मुफ्ती साहब बिगड़ उठे, बोले—'तब इसका नाम नेशनल क्यों रखा है ?"

आरोप से बचने के लिए अध्यक्ष को कोई रास्ता न था और मुफ्ती साहेब को अपनी धुन अलापने की पूरी छूट थी। मुफ्ती साहब की दलील थी कि हिन्दू शास्त्रों में पुनर्विवाह करने की अनुमति नहीं गई है, इसलिए उसके पक्ष में बोलना पाप है।

पुनश्च, उन हिन्दुओं को जिन्हें ईसाई और मुसलमान बना लिया गया है, फिर से शुद्ध करके हिन्दू बनाने का प्रस्ताव पेश हुआ, तो मुफ्ती साहेब ने उसके खिलाफ तर्क पेश किया कि जब कोई आदमी विधर्मी हो जाता है और हिन्दू धर्म त्याग देता है, तो उसे फिर हिन्दू बनाकर पवित्र हिन्दू समाज को नापाक करने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

श्री रानाडे और अन्य हिन्दुओं के पास कोई जवाब न था, और मुफ्ती साहब अपनी श्मश्रुओं के भीतर हंस रहे थे।

यह नेशनल कानफरेन्स बनने के बाद उसके दूसरे वार्षिकोत्सव के दिनों दिसम्बर में श्री रानाडे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और लाहौर कांग्रेस में शरीक न हो सके। लेकिन उसके बाद कोई ऐसी सोशल कानफरेन्स नहीं हुई, जिसे नेशनल कही जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

१८९९ की लखनऊ कांग्रेस में कुछ और भी ऐसी घटनाएं हुईं, जिनका सम्बन्ध कांग्रेस की आचार शास्त्र प्रवृत्ति से था, जिससे मेरे मन में कांग्रेस अभियान के प्रति घृणा पैदा हो गई।

गुरुकुल प्रचार के अपने खास मिशन में मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। एक रात के लिए कांग्रेस पण्डाल मुझे अपने मिशन के लिए दिया गया, जिसमें मेरे द्वारा आयोजित सभा की अध्यक्षता सम्माननीय कश्मीरी पंडित श्यामलाल ने की जिसमें भाषण देते हुए मैंने ब्रह्मचर्य की प्राचीन आर्य प्रणाली के प्रचलित करने का जो सन्देश दिया, उससे उपस्थित राजनीतिक विद्वान भी बड़े प्रभावित हुए। □

जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	५०)
३.	वेद ज्योति	२५)
४.	वेदांजलि : ३६५ मन्त्रों की व्याख्या	३५)
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	
६.	ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७.	संस्कारविधि [सजिल्द] :	१५)
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९.	अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०.	सत्यार्थ-प्रकाश (१०-१५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
	आर्ट पेपर पर	२५१)
११.	ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२.	वैदिक सम्पत्ति	८१)
१३.	योगासन :	२)
१४.	योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५.	concept of God	५.०)
१६.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश :	२५)
१७.	LIGHT OF TRUTH	५०)
१८.	प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९.	अथर्ववेद परिचय :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाल-पाल-लाल

आगामी वर्ष। (१६०० ई० में) भारत नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन दूसरी बार लाहौर में हुआ। इस संस्था की कार्यवाई से मैं इतना तटस्थ था कि जब तक अधिवेशन की कार्यवाई होती रही, तब तक मैं लाहौर गया। हो नही और वहां पहुंचा भी तो उस दिन, जब सब कुछ समाप्त हो चुका था। वहां जाने का कारण भी कांग्रेस नहीं, बल्कि सोशल कानफरेन्स थी, जिसने बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ अपने "नेशनल', टाइटिल को छोड़ दिया था; और अपना लक्ष्य केवल हिन्दू समाज के सुधार के लिए प्रस्ताव पास करने तक सीमित कर लिया था।

श्री रानाडे बहुत बीमार थे। सोशल नौका की मल्लाही करने का काम श्री गोखले पर पड़ा। जिन्हें सहायता देने को मुझ से कहा गया। सर उस समय श्री नारायण चन्दावारकर ने कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की थी, जिसके फलस्वरूप उनकी तरक्की करके उन्हें बम्बई हाई कोर्ट का जज नियुक्त कर दिया गया। इससे यह कहावत प्रचलित हो गई कि नेशनल कांग्रेस वह राजपथ है, जिसपर चलकर हाई कोर्ट ट्रिब्यूनल तक पहुंचा जाता है।

लोकमान्य तिलक (बाल गंगाधर) भी लाहौर अधिवेशन में भाग लेने आए थे मैं उनके साथ इस विषय हर विचार विनिमय करने के लिए उनसे मिलना चाहता था कि वे अपनी आर्य परम्परा में वेदों का क्या स्थान जानते हैं, लेकिन पंजाब में अपनी यात्रा का अन्तिम दिवस मनाने में वे इतने दत्तचित्त थे कि उनके पास एकांत वार्ता के लिए समय ही न था। तिलक के व्यक्तित्व के सम्बध में मैंने अपनी धारणा लखनऊ में ही बना ली थी, जिसके विषय में मेरे विचार (एस० वी बापट लिखित "लोकमान्य स्मृति ग्रन्थ" प्रकाशित हुए हैं। उसमें एक जगह मैंने कहा है कि, "वेदों को मानने वाला होने के कारण मैं एक बार लोकमान्य से व्यक्तिगत भेंट करना चाहता था। जब सब श्रोता-गण दोपहर के भोजन के लिए उठ गए, तो लोकमान्य अकेले बैठे रह गए उस अवसर से लाभ उठाने के लिए मैं उनके पास वार्ता के लिए गया। वर्ण-व्यवस्था पर सुप्रसिद्ध वेद मंत्र के आशय पर मैंने उनसे बात की तो मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उनके (एक गणपति-पूजक के विचारों और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द के विचारों में कितनी अधिक समानता है। (ये विचार अब इस महान्-विद्वान् द्वारा लिखित गीता रहस्य में उल्लिखित कर दिये गए हैं।)

"उस आधे घण्टे के पूरे समय, जिस समय में उनसे बातें कर रहा था, में बराबर उनके चेहरे पर आंखें गड़ाकर उनके मन के भाव को पढ़ने की कोशिश करता रहा। उसमें मैंने यह पाया कि उनकी आत्मा किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी हुई थी। तिलक के एक मित्र, एक मांडरेड लीडर, ने उनके बारे में एक मुझसे कहा था मेधा में तिलक महान् हैं परन्तु, उनकी महत्वाकांक्षा इतनी प्रबल है कि वह रोमांचित कर देने वाली है।"

"मगर मैंने उन्हें एक भिन्न दृष्टि से देखा, और यह पाया कि उनकी व्यक्तिगत रूप में अपनी कोई आकांक्षा नही हैं। वे अपनी मातृभूमि की व्यथाएं सोच-सोच कर दुःखी रहते थे, और अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए उनका संकल्प सचमुच मुझे आश्चर्यजनक सीम क रोमांचकारी जान पड़ा।"

इसके बाद ६ वर्षों तक कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन ऐसे दूरस्थ स्थानों पर हुए जहाँ मुझे कभी जाने का संयोग न मिल सका, लेकिन मैं सदैव देश के राजनैतिक विकास को बड़े ध्यान से देखता रहता था। और जब कभी मतभेद का अवसर आया, तभी मैंने अपने साप्ताहिक सद्धर्म प्रचारक में उस पर आलोचना करने में कभी उपेक्षा न की।

एसा एक मौका उन स्मरणीय वर्षों में आया, जब कर्जन के दरबार ने बंगाल के विभाजन का रास्ता खोल दिया जिसके खिलाफ तेज बगावत से बंगालियों ने समूचे शिक्षित हिन्दुस्थान में बिजली की सी आग लगा दी। उन दिनों क्रान्तिकारी पार्टी के नेता बाल-पाल-लाल थे, जो त्रिमूर्ति कहे जाते थे। बाल से तात्पर्य था बाल गंगाधर तिलक, पाल से बिपिन चन्द्र पाल और लाल से लाला लाजपतराय।

राजनीति के क्षेत्र में मांडरेट पार्टी से पिता (मेरा मतलब सर फीरोजशाह मेहता से है) जीवित थे, तथापि पार्टी के सक्रिय नेता गोपाल कृष्ण गोखले थे। क्रांतिकारी और मांडरेट पार्टियों के बीच जब कभी कोई मतभेद होता था, तो मैं सदैव श्री गोखले के विचारों का समर्थन करता था, और अपने इस विचार को कभी छिपाता न था।

ब्रिटिश नौकर शाही के खिलाफ राजनैतिक नेताओं द्वारा अपने प्रदर्शनों में विद्यार्थियों को इस्तेमाल करने के मैं कतई खिलाफ था। उस जमाने की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजनैतिक घटनाओं के अध्ययन ने ब्रह्मचर्य की आधार शिला पर आश्रित शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली पर मेरी आस्था को पूर्णतया सुदृढ़ कर दिया था।

मई १९०७ के प्रारम्भ में लाला लाजपत राय को काले पानी देश-निर्वासन की सजा दी गई। ब्रिटिश नौकरशाही को यह खबर मिली कि (शेरे पंजाब) लालाजी लगभग एक लाख नागरिक और ग्रामीण क्रान्तिकारियों का नेतृत्व करते है और सरकार को विरोध में अजित सिंह उनके दायें हाथ का काम करते हैं। लालाजी को पंजाब के शिक्षितों और विद्यार्थियों का नेता माना जाता था। यह सी० आई० डी० की सरकारी रिपोर्ट का कहना था।

लेकिन तथ्य की बात कुछ दूसरी ही थी जिस समय लालाजी को देश निकाले का दण्ड मिला उस समय विद्यार्थी सम्प्रदाय में उनकी लोक प्रियता इस तरह गिर गई थी वे लाहौर की किसी खुली सभा को भाषण देने के लिए मंच पर खड़े होने का साहस नहीं कर सकते थे। अजित सिंह और और उनके कार्यकर्ताओं पर से उनका प्रभाव हट गया, और यह सम्भावना समाप्त हो गई थी कि वे अपना प्रभाव छात्रों पर फिर से जमा सकेंगे, क्योंकि वे गुरुकुल आन्दोलन और उसके विरुद्ध उत्तेजनात्मक भाषण, काले पानी की सजा पर भेजे जाने को पहले, देने लगे थे।

परन्तु उनके निष्कासन दण्ड ने उनकी सारी स्थिति ही बदल दी। लाला जी एक दम एक अखिल भारतीय नेता बन गए, प्रत्येक व्यक्ति और सब लोगों के लिए वे चोटी के राष्ट्रीय शहीद बन गए और जब आर्यसमाज में उनकी अपनी पार्टी ने उनकी कारंवाइयों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने से इनकार कर दिया, तो गुरुकुल वासियों ने उन्हें अबोध निरपराध घोषित कर दिया।

उनके लिए परिस्थितियां ऐसी हो गई थीं, जिनके कारण तिलकवादी क्रान्तिकारी केन्ले नागपुर में उनके पैर न टिक सके और मांडरेटों को अपना अधिवेशन, १९०७ में, सूरत में करने का निश्चय करना पड़ा।

एक सुन्दर प्रभात को सहसा माण्डलों (बर्मा) से लालाजी लाहौर लाए गए और अपने घर पहुंचा कर मुक्त कर दिये गये।

मांडरेटो ने यह फैसला किया था कि प्रकाण्ड विद्वान् और वकील डा० रास बिहारी घोष को अध्यक्ष बनाया जाए। लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रांतिकारी लोग डा० घोष का विरोध करने के लिए कृत-संकल्प थे, और उनके विरोध में लाला लाजपतराय को खड़ा करना चाहते थे।

इस वादविवाद में मेरी कोई दिलचस्पी न थी, लेकिन आर्यसमाज ने उस अवसर पर वैदिक धर्म का प्रचार करने का प्रस्ताव पारित किया और मुझ उसके आमंत्रण पर सूरत जाना पड़ा। मैं एक दिन देर से पहुंचा और वह जूतों की वर्षा और कुर्सियों की तोड़-फोड़ का शर्मनाक दृश्य वीत चुका था, जब उसके दूसरे दिन प्रातः मैं सूरत पहुंचा।

लोकमान्य एक वाड़ी में अपने पूरे दल बल के साथ ठहरे हुए थे। उसमें सब नेता एक साथ जमीन पर सोते थे। और एक साथ भोजन करते थे। एक लड़ी में वे सब एक दूसरे से बंधे जान पड़ते थे। उनका दल कठोर पवित्रात्माओं का एक ठोस संगठन था। लालाजी वहां नहीं थे। इस वाद-विवाद में वे एक मध्यस्थ की तरह दोनों पक्षों के बीच सीमेन्ट का काम करते थे। मैं मांडरेटों के कैम्प में गया तो मैंने देखा कि वे बंगलों और सब प्रकार के विलास की सुविधाओं वाले तम्बुओं में ठाठ से ठहरे हुए थे। तात्कालिक प्रतिक्रिया से प्रेरित मैंने वहीं अपने मित्रों और साथियों से कहा—"मातृ-भूमि का भविष्य उस पार्टी के हाथों में है, जिन्हें विप्लव वादी कहा जाता है।"

तीसरी बार १९०९ में कांग्रेस अधिवेशन पुनः लाहौर में बुलाया गया। लाला हरकिशन लाल को स्वागत समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित मदन मोहन मालवीय को करनी थी। कांग्रेस उन दिनों एक मांडरेट पार्टी समझी जाती थी और उसके अधिवेशन को लोग एक प्रिय खिलवाड़ जैसा मानते थे। परन्तु ऐसी आशा के विपरीत लाला हर किशन लाल का भाषण कतई मांडरेट नहीं था। लेकिन श्री (कालान्तर में महात्मा) गांधी के नेतृत्व में आए दक्षिण अफ्रीकी भारतीयों की ओर से श्री गोखले ने जो भाषण दिया, वह वाक् पटुता का एक उत्कृष्ट उदाहरण ही नहीं था, बल्कि वह भारतीय देशभक्ति की आत्मा को उत्तेजित करने वाली अपील थी। उस समय में उन सेंकड़ों आर्य समाजियों की तरह से पैरवी कर रहा था, जिन्होंने पंजाब सरकार के उकसाने पर पटियाला रियासत ने हवालात में कैद कर रखा था, जिसके सिलसिले में मैं लाहौर आया हुआ था।

उस कांग्रेस की सभा में मैंने एक दर्शक की हैसियत से भाग लिया। सभा में जो भाषण दिए गए, वे जोरदार और देशभक्ति पूर्ण थे। अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्तेजक शब्दों से बाबू भूपेन्द्रनाथ वसु, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और सर आशुतोष चौधरी तथा अन्य लोगों ने श्रोताओं को उत्तेजित कर दिया। लाहौर के प्रमुख ऐडवोकेट सर अतुलचन्द्र से मैंने पटियाला के अभियुक्तों के पक्ष में पैरवी करने को कहा, जिसके एवज में मैंने उन्हें प्रतिदिन की वकालत की ५०० रुपये फीस देने का सौदा तय किया। उन्होंने मेरे सौदे पर विचार करने का वादा किया, लेकिन लेडी चटर्जी (पत्नी) के विरोध करने पर वे कुछ निश्चय न कर सके। मैंने कुछ आर्यसमाजी सभासदों से आग्रह किया, मगर कोई न कोई बहाना करके सभी ने पटियाला जाने से इनकार कर दिया। मैं सर अशुन्तोष चौधरी के पास बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की सिफारिश लेकर पहुंचा, मगर उन्होंने इस काम के लिए कुल पांच दिन देने का वादा किया, जिनमें यात्रा के दिन भी शामिल थे, बशर्ते कि उन्हें प्रतिदिन की फीस के रु० १२५० दिए जाएं। केवल एक पेशी पर जालन्धर के राय बद्रीदास एम०ए० और लाहौर के लाला द्वारकादास एम०ए० ने हमारी सहायता की।

मैंने यहां इस तथ्य का उल्लेख केवल यह दिखाने के लिए किया है कि अच्छी तरह यह जानते हुए कि आर्यसमाजियों पर इस हमले के पीछे ब्रिटिश नौकरशाही की बंधी हुई मुट्ठियां घूंसे तान रही थीं, देशभक्तों का दल उन लोगों की रक्षा के लिए रंचमात्र त्याग न कर सका, जिनका अपराध केवल यही था कि उन्होंने नौकरशाही की वेदी पर कभी पूजा नहीं करे।

अगला कांग्रेस अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ, जिसकी अध्यक्षता करने के लिए समुद्र पार इंग्लैण्ड से सर वेडर बर्न को बुलाया गया था। इस अवसर पर सरकार द्वारा वहां पर एक अनोखी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जाने वाला था, जिसमें बड़ी संख्या में दर्शकों के आने की आशा थी। इस विशेष कारणवश इस अवसर पर वहां आर्य समाज ने वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए विशेष प्रबन्ध किया था। इसके लिए आर्यसमाज ने मुझे निमंत्रित किया था और श्री गोखले ने भी मुझसे इलाहाबाद जाकर सर डब्लू० वेडर बर्न से मिलने को कहा था, इस तरह मुझे फिर कांग्रेस अधिवेशन में एक दर्शक की हैसियत से शामिल होने का अवसर मिला। मगर सर डब्लू० वेडर बर्न की अधिवेशन में उपस्थिति भी कांग्रेस के अपाहिज अंगों में प्राण-संचार न कर सकी।

अधिवेशन में हिन्दू-मुस्लिम एकता के साधनों पर विचार करने के लिए एक समझौता बोर्ड की भी बैठकें हुई। सर विलियम के खास अनुरोध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर मैं उसकी कार्रवाइयों में सम्मिलित हुआ। आखिरी बैठकर महाराजा दरभंगा और सुल्तान सर आगा की संयुक्त अध्यक्षता में हुई, जिसमें सबने कुछ न कुछ सुझाव जरूर दिए, लेकिन उक्त दोनों नरेशों के संयुक्त प्रयासों का कोई नतीजा न निकला। उर्दू बनाम हिन्दी पर बहस में बड़ी सरगर्मी रही। एक मुसलमान सज्जन ने दावे के साथ घोषणा की कि अगर उर्दू को हिन्दुस्तान को राष्ट्र भाषा नहीं बनाया जाता, तो हिन्दुओं के साथ कोई समझौता नहीं हो सकता।

सोशल कान्फरेन्स में बहस के लिए यह सवाल उठाया गया कि होने वाली जन गणना में अछूतों को हिन्दू माना जाए अथवा नहीं। इससे कट्टर हिन्दु नेताओं की तंद्रा टूट गई और वे उन्हें हिन्दू समाज का अपरिहार्य अंग सिद्ध करने को चेष्टा करने लगे। मुझसे भी इस विषय पर बोलने को कहा गया। अपने भाषण में मैंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि उनकी तंद्रा बहुत पहले टूट जानी चाहिए थी। मैंने उन्हें इसके लिए भी राजी करने की कोशिश की कि तथाकथित अछूतों को समस्त सामाजिक तथा धार्मिक अधिकार केवल मात्र न्याय के नाम पर दिए जाने चाहिए और यह भी चेतावनी दी कि अपना राजनैतिक महत्व बढ़ाने के स्वार्थ पूर्ण सिद्धान्त पर उन्हें कोई काम न करना चाहिए।

तदुपरान्त छह लम्बे वर्षों तक मैंने कांग्रेस की ओर आंख उठाकर भी न देखा कि वह कर क्या रही, इस अन्तराल में एक प्रतिनिधि की हैसियत से मैंने भारत के साम्राट जार्ज पंचम के राज्याभिषेक उत्सव में भाग लिया इसके बाद सरजेम्स (बाद में लार्ड) मेस्टन तीन बार गुरुकुल पधारे और शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली पर बहस करने के लिए लार्ड हार्डिग ने मुझ से तीन लम्बी मुलाकातें की तथा १९७३ अक्टूबर के अन्त में लार्ड चेम्सफोर्ड ने गुरुकुल का निरीक्षण किया।

इसके एक वर्ष पहले अप्रेल १९७५ में महात्मा गांधी भी अपने कौतुकी (गुरुकुलीय) लड़को को, जो कांगड़ी में कुछ महीने अपने आचार्य महापुरुष महात्मा जो के आगमन का इन्तजार करने के लिए ठहर गए थे, वापस ले जाने के लिए गुरुकुल पधारे थे।

दिसम्बर १९१६ में कांग्रेस अधिवेशन लखनऊ में हुआ, जो अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। इसी अधिवेशन में यह अपूर्व बात हुई कि मांडरेटों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और विप्लववादियों के बीच एक प्रकार का समझौता हो गया। माननीय बाबू अम्बिकाचरण मजूमदार इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे। इसमें समारोह भी अभूतपूर्व हुआ। कुछ विख्यात मुस्लिम नेता भी सम्मिलित हुए और इसी अधिवेशन में प्रसिद्ध हिन्दू मुस्लिम समझौते पर हस्ताक्षर हुए। जोश भी लोगों में सबसे अधिक रहा। ऐसा जान पड़ता था कि मानो राजनैतिक हिन्दुस्तान की आत्मा जाग उठी हो। उत्तरोत्तर जैसे जैसे नेता पर नेता मंच पर आते गए, तैसे-तैसे उनके शब्द-शब्द पर बजने वाली तालियों की गड़गड़ाहट बढ़ती गई। आने वाले बंगाल के गवर्नर का सुरेन्द्र बाबू द्वारा विरोध मिसेज ऐनीबेसेन्ट द्वारा अंग्रेजों को गिरगिट के समान रंग बदलने वालों की संज्ञा देना, साधु मजहरुल हक की मुसलमानों से निर्लेप अपील, राजा महमूदाबाद की देश भक्ति पूर्ण बातें—सभी कुछ श्रोताओं के लिए बहुत आकर्षक था।

अन्त में अपनी सादी धोती और मराठी चपलें पहने लोकमान्य तिलक बोलने को खड़ हुए। उनके खड़े होते सारा पण्डाल हर्षध्वनि से गूंज उठा और उनके बोलते ही सहसा हजारों श्रोता एकदम शान्त हो गए। उनके मुंह से वाक्यों पर वाक्य निकलते जाते थे, शनैः शनैः स्वाभाविक लहजे में, और उनके शब्द अवाक् सहस्रों श्रोता अमृत के घूंटों की तरह पीते जाते थे। अन्य बातों के अतिरिक्त तिलक महाराजा ने कहा—

"अंग्रेज हम से कहते हैं कि आर्य लोगों के वंशज हम लोग अपने देश की भूमि के स्वामी नहीं हैं। हम लोगों ने यहां के मूल निवासियों से उसे छीनलिया, मुसलमानों ने उसे आर्य लोगों पर विजय पाकर उनसे छीनलिया और मुसलमानों को परास्त कर उनसे अंग्रेजों ने उसे पाया। इसलिए ब्रिटिश लोग मूल वासियों के (संरक्षक) हैं। ठीक है, मैं उनकी इस बात को मानता हूं, और ब्रिटिश लोगों से कहता हूं कि वे अपना बोरिया बिस्तर लेकर यहां से चले जाएं और देश का कब्जा भीलों, गोंढ़ों और आदि द्रविड़ों आदि को सौंप दें। हम लोग खुशी-खुशी धरती के स्वामियों की सेवा करेंगें। इस पर उच्च अट्टहासों और हर्षध्वनियों से पंडाल की छत फाड़कर आकाश गूंज उठा। फिर बहुत ही सीधे सादे ढंग और मध्यम स्वर में जब उन्होंने अपने कथन का न्यूनतम शब्दों में आशय यों व्यक्त किया—"स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे—"तो सारा पण्डाल एक साथ ही हुंकार की आवाज से प्रतिध्वनि हो उठा। उत्तेजना सीमा का उल्लंघन करने लगी और सभा सदन मानो ढ़ह पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यद्यपि मैं केवल एक दर्शक की हैसियत से कांग्रेस में भाग ले रहा था, लेकिन पर्दे के पीछे चल रही विचार-विमर्श वार्ताओं में मेरे लिए बहुत कुछ करने को था। हिन्दू-मुस्लिम समझौते पर निजी तौर पर मेरी उपस्थिति में बहस चली। पंडित मदन मोहन मालवीय और श्री सी० वाई० चिंतामणि दोनों समझौते के विरुद्ध थे। वे साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व तथा सांप्रदायिक मताधिकार से किसी तरह सहमत नहीं हो सकते थे। अनौपचारिक वार्ताओं में मैं भी उनके विचारों से सहमत था। दूसरी बात जिस पर मुझे कुछ करना जरूरी था, वह था मेस्टन—मैरिस-कर्टिस का (गश्ती पत्र) जिसमें उन्होंने आगामी सुधारों के लिए कुछ ऐसी सिफारिशें की थीं, जिनमें द्वैध शासन चलाने की रिआयत देने का समर्थन किया गया था।

इस मामले में लार्ड मेस्टन ने मुझे खास तौर पर अपने घर पर निमंत्रित किया और मि० कर्टिस की बातें ध्यान से सुनने का अनुरोध किया, क्योंकि उनका प्रस्ताव प्रकाशित होने पर जो प्रतिक्रिया हुई उससे वे बहुत हतोत्साह थे। मैंने धीरज के साथ एक घण्टे से अधिक समय तक उनकी बातें सुनीं, और प्रत्युत्तर में उनसे दूसरे दिन उनकी मुलाकात महात्मा गांधी से कराने का वचन दिया। मैं अपना वादा दूसरे ही दिन पूरा किया, जिससे उन्हें अपने विचार गांधी जी के सामने रखने का पूरा अवसर मिला। लेकिन इसी बीच दक्षिण में आ गए, जिससे मि० कर्टिस की आशाओं पर पानी फिर गया।

लार्ड मेस्टन ने जिस कारण मुझको मि०कर्टिस की मदद करने को बुलाया था उसका एक कारण मेरी सलाह भी थी, जिस पर वे कांग्रेस अधिवेशन गये थे, जिसमें उनके गश्ती पत्र का भण्डा फोड़ विपरीत दृष्टि से किया गया था। इस अधिवेशन में यद्यपि ऐसी कई बातें हुई, जिन्होंने मुझे कांग्रेस कार्यक्रम में हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित किया, यथापि कार्यक्षेत्र को मैंने वहीं तक सीमित रक्खा, जहां तक मैं अपने कार्य क्रम से सम्बन्धित था, और जिसमें ही मैं अपनी मातृभूमि की मुक्ति मानता था। □

भारत उनका जो भारत के। विदेशी पादरियों को देश से निकाला जावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi